# माटिक सुवास

# माटिक सुवास

(मैथिली उपन्यास)

मुन्नी कामत

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

**ISBN :** 978-93-95420-61-7

**माटिक सुवास**

(मैथिली उपन्यास)



प्रथम संस्करण : 2023
मूल्य : 200 रु.

**आवरण** : साभार

प्रकाशक
**नवारम्भ**
**मधुबनी** : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
**पटना** : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो.- 09304349384

**मुद्रक**
सीएमजे प्रिंटिंग प्रेस
अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा

---

**Matik Suwas**
Maithili Novel By **Munni Kamat**
First Edition : 2023, Price : Rs 200/-

# समाधान प्रस्तुत करैत उपन्यास

मिथिलाक प्रमुख समस्या अछि पलायन। ई एकटा प्रमुख रोग अछि जकर निदान होयब अत्यावश्यक अछि। अपन माटि-पानिसँ दूर जयबाक विवशता मिथिलाकेँ तरे-तरे घून जकाँ खयने जा रहल अछि। आइ जे मिथिला अछि से बूढ़ आ बेरोजगारक मिथिला अछि। एतय कोनो तेहन उल्लेखनीय उद्योग-धंधा नहि अछि जकरा भरोसे लोक एतय निर्वाह करत। डिग्री प्राप्त करितहि युवा लोकनि एतयसँ मोटरी-चोटरी बान्हि विदा होइत छथि। परदेशमे जे काज भेटैत छनि तकरे अपन नियति मानि ओतय तात्कालिक रूपेँ सकारिक' बसि जाइत छथि। फोन-फानक भरोसे गाम डेबैत छथि। जे कम पढ़ल-लिखल छथि से 'सिजनल मजदूर' बनिक' पंजाब-हरियाणा विदा होइत रहैत छथि। तखन कोन भरोसे मिथिला आगू बढ़त? सरकार एक तरहेँ आँखि मुनने अछि। रौदी-दाहीसँ मारल-झमारल मिथिला लेल कोनो निजगुत स्वप्न नहि अछि। एहि बात सभसँ अन्य प्रान्तक लोक सेहो अवगत अछि। तेँ ने सभ ठामसँ हमरा लोकनि बेर-बेर मारल-दुत्कारल जाइत रहल छी।

'माटिक सुवास' एहि समस्याक समाधान संग उपस्थित होइत अछि। ई एकटा एहेन उपन्यास अछि जाहिमे एक संगे दू टा समाधान बताओल गेल अछि। पहिल समाधान अछि— सक्षम लोक सभ घरमुहाँ होइथि आ गाम-समाजक लेल अपन योगदान देथि आ दोसर समाधान अछि— महिला लोकनि एहि काजक अगुआ बनती त' परिणाम जल्दी आओत।

प्रवासमे रहनिहार गाम काकी दूरदर्शी महिला छथि। ओ प्रवासक वेदनाकेँ बुझि-गमिक' गाममे एकटा एहेन वातावरण तैयार करैत छथि जाहिमे आत्मनिर्भरताक स्वप्न साकार होइत बुझना जाइत अछि। हुनक पोता सेहो हुनके बाट पर आगू बढ़ैत अछि। तात्पर्य ई जे पढ़ल-लिखल युवामे शहरक प्रति जे आकर्षण स्वाभाविक रूपेँ होइत अछि तकर विपरीत गाम काकीक डॉक्टर पोता गामहिमे रहबाक लेल संकल्पित होइत अछि।

'माटिक सुवास'मे सभटा अनुकूले स्थिति नहि अछि। गाम आब ओ गाम नहि रहि गेल अछि जाहिमे एकटा भलमनसाहत होइत छल। कहि

सकैत छी जे गाम बगदि गेल अछि। एहि बगदल गाममे किओ नीक लोक सहजतासँ बास क' लेत से सम्भव नहि अछि। एकर चित्रण एहि उपन्यासमे बहुत तार्किकताक संग भेल अछि। शोषण आ अन्यायसँ पीड़ित गाम आब सहजहिं ककरो आकर्षित नहि करैत अछि। एहेनमे गाम सुधारक संकल्पनाक संग रोजगार सृजन करबाक कामना चकित-विस्मित करैत अछि। विचार करब त' ईहो देखब जे विकल्प सेहो यैह टा अछि। जिद पर अयले पर वर्तमान स्थितिमे सुधार सम्भव अछि। मुन्नी कामत जी अपन एहि पहिल उपन्यासमे तार्किकताक संग एहि जिदकेँ रेखांकित कयलनि अछि।

उपन्यासमे अन्तरलय अछि जे पाठककेँ ठमकए नहि दैत अछि। भाषामे प्रवाह अछि। एहिमे ठाम-ठीम हिन्दी आ अंग्रेजीक व्यवहार भेल अछि जे ओतेक तीत नहि लगैत अछि। परिवेशक व्याख्या लेल ई आवश्यक प्रतीत होइत अछि। तथापि साकांक्ष रहबाक आवश्यकता त' अछिये।

मुन्नी कामत जीक लेखनमे व्याप्त नवता बोध हमरा आकृष्ट करैत अछि। हिनकासँ अपेक्षा बढ़ले जा रहल अछि। ई उपन्यास हिनका यथेष्ट प्रतिष्ठा दियौतनि से विश्वास अछि। पाठक लोकनि ई उपन्यास पढ़थि आ मिथिलाक लेल अपन योगदान देथि— यैह कामना अछि।

**—अजित आजाद**

# आमुख

'जाहि धरा पर जन्म लेलहुँ
वैह माटि शोभैए भाल हमर
ठोर पर साजै बोल माएक
सुनि जकरा मोन पड़ैए गाम हमर।'

मातृभूमि आ मातृभाषासँ स्नेह ओहने होएत अछि जेना अपन माएसँ। अपन भाषा आ भूमि इंसानकेँ वैह ऊर्जा दैत अछि जाहि ऊर्जाक अनुभूति ओ अपन माएक हाथ पकड़ने महसूस करैत अछि। सभक इच्छा होइत अछि जे अपन मातृभूमि लेल किछु करी। इंसानक जन्मजात प्रवृति होइत अछि अपन परिवारक, गाम-समाज आ देश लेल समर्पित भेनाइ। वर्तमानमे अपन मातृभूमिसँ दूर प्रवासी बढ़ैत आवश्यकताक मांगक दौड़मे भले ही हुनका चितमे मातृभाषा आ मातृभूमिक स्नेह किछु धूमिल भ' सकैत अछि परन्तु कदाचित मेटा नहि सकैत अछि। हम अपन एखन धरि जीवनमे कैल अनुभवसँ जोड़ द' क' कहए चाहब जे मातृभाषा आ मातृभूमिक प्रति प्रेम प्रवासीएक चितमे बेसी हिलकोर मारैत अछि। समुन्द्रक लहरि जकाँ अनवरत गतिमान भ' बेर-बेर एहि प्रेमक जुआरि उधिया उठैत अछि। मुदा जेना बसातक मिजाज देख समुन्द्रक लहरि उधिया-उधियाक' शांत भ' जाइत अछि ठीक ओहिना प्रवासीयो अपन मनक उद्वेगकेँ परिस्थिति आ समयक स्थिति भाँपैत शांत क' लैत अछि। एहि स्थितिक किछु अंश एतए देखल जा सकैत अछि। समुन्द्रक ओहि वेगकेँ एहि उपन्यासमे महसूस कएल जा सकैत अछि।

हम अपन लेखनक गत्यात्मक क्रममे अपन पाठक लेल एहि बेर उपन्यास संगे प्रस्तुत छी। हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे जहिना पूर्वमे हमर काव्य-संग्रह आ कथा-संग्रहकेँ दुलार भेटल तहिना एकरो हृदयसँ स्वीकारल जाएत। सुधीजन अपन प्रतिक्रियाक दू आखरसँ हमर आत्मबलकेँ मजगूत करतथि।

साहित्यक अभिरुचि हमरा भीतर शायरीसँ आरंभ भेल आ यैह चारिपतिया कविताक रूप ल' ठाढ़ भ' गेल। कवितामे भेटल विद्वतजनक

प्रोत्साहनसँ गद्य दिस झुकाव 'चुक्का' बाल कथा-संग्रहक सृजन करौलक। 'चुक्का'क बाद हमर पाठकगणक प्रोत्साहनक दू शब्द छल जे हमरा उपन्यास लिखबाक हिम्मत देलक।

आइ हम अपन पाठकक बीच सभ रंगक स्वादसँ भरल व्यंजन परोसि रहल छी। अपन पाठकक मनक स्वादक प्रति आतुरतासँ बुझैत हमर प्रयास अछि जे अपन माटिसँ जुड़ल सभ स्वादक अनुभूति हुनका 'माटिक सुवास'मे होनि।

अंतमें मैथिली साहित्यक प्रति समर्पित समस्त विद्वान लोकनिकेँ हमर नमन आ विनयपूर्वक आग्रह जे एहि रचनाक नीक-बेजाएसँ हमरा अवगत कराबी ताकि आगाँ सभ बातकेँ अनुशरण क' अपन दोसर रचना शीघ्र अपन पाठक सभक हाथमे राखी।

एहि विश्वासक संग–

**मुन्नी कामत**

# माटिक सुवास

## 1

सुरुजक लालिमासँ पहिने गामक वातावरणमे एगो अलगे ऊर्जासँ भरपूर लालिमा छिटकि जाइत अछि। जाहि ऊर्जामे विभोर भ' इंसान अपन सभ दुखक ठोंठ घोंटैत दिनक शुरूआत करैत अछि। ई जिनगी जीबाक सबसँ उत्तम पथ... से हम एतए आबि हिनका सभसँ सिखलहुँ। जहियासँ एलहुँ दिन-दिन हमर दशा विचित्र भेल जाइत अछि। अधरतिया तक कलम पजियेनाइ, आसमान दिश टकटकी लगौने कोदारिकट्टा मेघक आरि पर बैसि काव्य-लीला करैत रहैत छी आ कने आँखि लागल कि फेर धड़फड़ाक' उठलहुँ जे कहीं हम भोरका बेला निहारै लेल अबेर त' नहि भ' गेल...! एही माटिमे ओंघरा नमहर भेलहुँ, बाबा पोखरिमे हेलि जवान मुदा गामसँ एहेन प्रेम आब भेल। शायद आब प्रेम बुझ' लगलहुँ, महसूस कर' लगलहुँ, गर्म आ शरदक हवाक हिलकोर हेर' लगलहुँ माटिमे गाड़ल टिकुली जकरा बिनु अपराधे मारि जरबैत रही, बनबैत रही माटिक सारा आ करैत रही रखलाहा बेरहटसँ भोज-भात। ओहि समयकेँ फेरसँ जीब' चाहैत छी... मुदा ई समय त' पड़ाएले जाइत अछि... वा ईहो भ' सकैत अछि जे सिंगापुरमे पैंतीस बरखसँ रहैत-रहैत शहरक जिनगीसँ उचाट गामक मोह जगा दै...! से त' आब दैबे जानए कि गामसँ मोहक की राज अछि!

—'काकी उठलखिन? लेथु बेड टी...।'

बउआसिनक आहटि कने हड़बड़ा देलक मुदा हाथमे भाफ उठैत चाहक कप देख मन आर आनंदसँ भरि गेल एहिसँ बढ़ि की जिनगी होएत...!

—'काकी एगो बात कहियनि... ई एतेक बरखक बाद गाम एलखिन, सेहो असगर! ओतए सभ ठीक छनि ने?'

—'हँ बउआसिन, सभ एकदम मस्तीमे अछि। कही त' पूरा भरल-पूरल...।'

मनमे सोचलहुँ साँचे हमर परिवार भरल-पूरल अछि!...

—'काकी की सोचए लगलियै...!'

—'किछु नहि बउआसिन, बस यैह कि ओतए सभ धनसँ कतेक अमीर अछि मुदा समय लेल ओतबे गरीब तैं रिटायरमेंटक बाद एसगरे एतए रहबाक फैसला कएलहुँ।'

—'ई त' बहुत खुशीक बात काकी आब रमन-चमन रहत। नहि त' एक कोन सून लगैत छल। अच्छा काकी, सभ काज क' देलियनि। आब जाइ छियनि, बोनिमे जाइक अछि। बेर भ' जेतै, साँझमे अबैत छियनि त' ढाकी भरि गप करबनि। धिया-पुताकेँ सेहो नेने एबनि।'

—'हँ बउआसिन, जाउ साँझमे सभकेँ नेने आयब। ...आ हमर बउआ रामखेलन ठीक छै ने?'

—'हँ काकी, एखन दिल्लीमे छनि, पाय-कौड़ी हरदम पठबैत रहैत छनि। हिनकर सहयोग आ आशीर्वादसँ सपरिवार हँसी-खुशी छियनि।

—'अच्छा जाउ, साँझमे आयब तब गप करब।'

रिटायरमेंटक बाद जिनगीमे एगो खालीपन आबि जाइत अछि। एगो रूटिनमे बान्हल दिनचर्या छितिर-बितिर भ' जाइत अछि। घड़ीक सूइया संग दौड़ैत हमर जिनगी जेना ठमकि गेल मुदा एगो सत्य ईहो अछि जे पैंतीस बरखक बाद गाम अयलहुँ त' एना लागल जेना फेरसँ दोसर जनम भेल आ मशीनी जिनगीसँ मुक्ति। सिंगापुरमे जाबत रही त' एहि मशीनी जिनगीक आदी भ' गेल रही, भावना सुति गेल छल, हमहुँ रोबोट बनि गेल रही...शिम्पी जकाँ!

शिम्पी, हमर रोबोट चाकर, जे बेटा विकास हमरा लेल अनने छल। रिटायरमेंटसँ पहिने त' शिम्पी हमर जरूरत छल मुदा रिटायरमेंटक बाद शिम्पी हमरा लेल आफत बनि गेल। केना कही ओकरा जे आब हम घड़ीक सुइया संगे नहि चलैत छी...आब हम कोनो जिम्मेदारीसँ नहि बान्हल छी. ..मुदा की कही... मनुख रहै तखन ने समझाबी! मशीन की बुझत हमर भाव आ भावना! आइ अपने रहितथिन त' जिनगिये किछु आर रहैत...! भाग्यसँ बेसी ककरा भेटलै जे हमरा भेटत, यैह सोचि मनकेँ फुसलाबै छी...! जवानी रानी जकाँ जीलहुँ आर बुढ़ाड़ी एसगर! वैह समयकेँ याद करैत कखनो हरियाएल आँखि, कखनो नोराएल आँखि कटिये जाएत। जिनगीक पड़ाव

पर आब त' नोरो सूखि गेल, आब नहि सोचैत छी जे कियो हमरो परबाहि करए। अपेक्षा दुखक कारण अछि, जतए अपेक्षा नहि ओतए कोनो दुःख नहि होइत छै।

ओह हमहुँ साँचे सठियाएल जाइत छी, एतेक प्रेमसँ आनल बेड टीकेँ पानि बना देलहुँ... आब त' उठहि पड़त।

## 2

—'काकी कतए चिरैया...?'

—'बुच्चन बाबू...! बैसकि घरमे बैठू। पूजा केने झप सीन अबैत छी।'

—'ई लिअ बाबू ताधरि चाय पीबू हम किछु खा लैत छी।'

—'काकी ई लिअ सोहारी—रोटी अहाँ ल' अनलहुँ हँ। राइते कनियाकेँ कहने रहियै जे जलखै सकाले बना लेब काकी संगे निर्मली बाजार जेबाक अछि।'

—'एकर की जरूरत रहै बल्लहुँसँ, कनियाकेँ परेशान केलियै अहाँ।'

—'काकी जाधरि अहाँ एतए छियै, खानाक चिंता नहि करू, कहियो विदेशी खानाक यादि आएत त' हमरो बना लेब...कक्का त' रंग-रंगक विदेशी खाना बनबैत रहथिन आ सभ बेदराकेँ बजाक' अँगनामे भोज करैत रहथिन...से ओ राजा देखियो कोन देशक बासी भ' गेलै काकी... एहन हंस कोना उड़ि गेलै...!'

—'की करबै बाबू बिधनाक लिखल के मेटौत...!'

—'हँ काकी, ककर खाता भगवान घरमे कखन बंद भ' जाएत से के कहलक...चलू काकी नहि त' बैंकमे बड़े भीड़ भ' जाएत।'

—'बाजार आब शहर बनि गेल...सभ सुख-सुविधासँ सजल ई कोना अपन पूरे शानो-शौकतसँ ठाढ़ कहि रहल अछि हमरा समयक धूरी पर पिछड़ल बुझि धुतकारैत छोड़ि विदेश गेल रही ने, देखी हम वैह पुरनका हाट छियै जे समयक संग अपन आकार आ भेष दुनू परिवर्तित क' लेलियै...आब हमहुँ शिक्षा, स्वास्थ्य आ रोजगारसँ सजल शहर बनि गेलियै...।

आइ किछु ग्लानि सेहो भ' रहल अछि जे काश विदेश नहि जा क'

एहि विकासमे किछु सहयोग हमहुँ करितहुँ त' गौरवान्वित होइत एहि शहरमे घुमितहुँ आ ई शहरो हमरा स्नेहक हार पहिराबैत। पता नहि कियैक आइ हमरा अपन पलायन मजबूरी नहि स्वार्थ लगैत अछि। हम समर्थ रही तैं लजाइत छी एहि विकासकेँ देखि... महसूस करैत छी ओहि दरदक टीस जे हमरा कहि रहल अछि तू हमरा बिमार देख मुँह फेरलें...हम कुहरैत छलहुँ मुदा तू अपन माथा साहुर-साहुर करैत पड़ेलें...हँ स्वार्थी रही, तैं तूँ नहि घुरि तकलें... मुदा नसीबक खेल कहिन जे एहि बिसरलाहा माटिमे जिनगीक अंतिम पड़ावमे वैह माटिमे फेर खुशी हेरै लेल एलहुँ।'

—'काकी...काकी...!'

बुचन बाबूक आवाज पर अकचका उठलहुँ...आ अपन गलाकेँ जोड़सँ खखसिक' झूठ प्रयास करैत सतर्क भेलहुँ जेना लागल ग्रसने माया हमरा भुइयाँमे पटकि देलक। फेर बुचन बाबूक आवाजक स्मरण करैत पाछू पलटि देखैत छी त' बुचन बाबू कहैत छथि— 'काकी अहाँ त' चलिते-फिरते कतौ हेरा जाइ छी...!'

सकुचाइत बजलहुँ— 'नहि बाबू, किछु एहिना सोचए लगलहुँ।'

बुचन बाबू बाजारक सभटा काज करा हमरा बैंकेमे बैठा किछु अपना काजे फेर बाजार गेला। हम स्वयंकेँ एसगर बुझि बैंकेमे एम्हरसँ ओम्हर टहल' लगलहुँ ईहो डरे कि कहीं फेर ओ माया आबि हमरा नहि गरैस लिए।

सिहकैत पछिया मुदा देहक रोइँया भुटकए लागल, बाँहि रगड़ैत बैंकक गेट पर एलहुँ त' नजरि गुड़क पथिया पर गेल। पूसक मासमे लाल-लाल ललिचगर गुड़क ढेपा देख सहजे भरि मुँह पानि आबि जाइत अछि। हमरो वैह दशा भेल। मुँहक पानि समटैत हम ओहि गुड़क पथियाक आगू ठाढ़ भ' गुड़क मालिककेँ ताक' लगलहुँ कि पाछासँ एगो लटपटाइत बोल कानकेँ छूलक— 'ल' लिअ, बड़ नीक गुड़ छै, बड़ लसगर, कम्मे गुड़मे एक ढकिया लाय बनि जाएत।' बोलिए संगे हम अपन गरदनि घुमेलहुँ त' अवाक् रहि गेलहुँ। हमर आँखि डबडबा गेल ई देखि जे ई कतेक असहाय छथि जे एहि शितलहरीमे एहन अवस्थामे झूलैत हाथे बटिखरा ल' सौदा संगे जिनगीक सेहो नाप-तौल करैत अछि! हिनकर रिटायरमेंट हिनकर साँसे संगे होएत की...?

तखने हिनकर बेटा किछु खुल्ला पाय मायकेँ दैत बाजल— 'माय आइ बाजार बहुत मंदा छै, सबटा सौदा बचले छै, बस एतबे बिकेलै हँ।' ओतय किछु दुरी पर हुनकर बेटो एक पथिया गुड़ ल' क' बेचैत छल। आब ई स्पष्ट भ' गेल जे ओ बुजुर्ग असहाय नहि छलखिन। ओहि अस्सी बरखसँ ऊपर बुजुर्ग महिलाक साहस आ अपन परिवारक प्रति सहयोगक भाव हमरा लेल प्रेरणास्रोत बनि गेल। साँचे इंसान मनसँ ढलैत अछि तनसँ नहि।

मन त' भेल कहि दी कि पूरा पथिया तौल दिअ मुदा अपन भावना पर संयम राखैत पाँच किलो तौलै लेल कहलहुँ... हमरा अपना लेल त' एको किलो बेसिये छल मुदा पाँच किलो बस यैह सोचिक' लेलहुँ जे एहि शितलहरीमे ओ कने जल्दी घर चलि जाय...

धरती पर सभ मोम बनि आबैत अछि, मुदा जिनगीक संघर्ष मक्खन जकाँ तनकेँ बज्र बना दैत अछि, प्रकृतिक ई खेल बहुत विचित्र अछि।

**3**

काकी फलना ठाम महादेव उखड़लै हँ, से त' बहुत सुनने रही मुदा कहाँदनि रमसेबका एहिठाम एहिबेर पार्वती उखड़लै हँ। चलू न देखि अबैत छी, भरि गामक लोक ओतए उमरल जाइत अछि...

बुचन बाबूक एहि तरहक बात पर पहिले त' हँसी आएल फेर सोचए लेल मजबूरक' देलक जे एखन धरि गामक लोक एहि तरहक बातमे ओझराएल रहैत अछि... हमहुँ यैह सोचि विदा भेलहुँ जे नुनियाएल देबालकेँ ढाहैक संकल्प हम नेने छी त' एहि संकल्पकेँ पूरा कर' लेल आ अंधविश्वासक पट्टी खोल' लेल हमरा घटनास्थल पर पहुँच' पड़त।

पूरा गामक आस्था आइ रमसेबका एहिठाम उमरि आएल। घोघक तरसँ कनिया-बहुरिया ऐंड़ी उठा-उठा हुलकी मारैत किछु देखैक कोशिश करैत छल, मुदा मरुआ ढेरी बनल मुंड मेलामे किछु नहि देखेलै। सभ अपनेमे भिनभिनाइत छल। कोनो बातक भांजे नहि लगैत छल। सब मुँहसँ बेसी आँखिसँ बतिआइत छल, ओ कखनो एक-दोसरक पैर दबबैत हाथ बोकटियाबैत किछु इशाराक' बजैत छल...ओतुका एहन लीला देख ई स्पष्ट जरूर भ' गेल जे एतए कोनो देवी-देवता नहि उखड़ल अछि जरूर कोनो

एहन घटना घटित भेल जकरा लोग अपन दोख छोड़ा, बजै लेल उत्सुक अछि। कि तखने नबकी काकी धड़सँ बजली– ले दौड़ा-चंगेरा बिदा हो मंदिर आ घँसि दहि भरि माथ सेनुर...चल हटा ई जमघट। कि नबकी काकीकेँ एहि तरहक बात पर रमसेबका कनियाकेँ जवाब हमरा गौरवान्वित केलक– 'आइ हे नबकी काकी, हिनका कोखिमे बेटी नहि छनि तैं एहन बोल छनि ने... आइ हे ओहो ककरो बेटी छियै...बेदरा छै, चढ़ल जुआनीमे भैसि गेलै, तकर की मतलब जे ई सब कहतै सैह हम सब करबै। शासन नहि पड़तै त' एकरा संगे ई पच्चीसो टा छौड़ा एहिना पिहकारी मारैत रहतै। ई अपन मुँहमे ताला-कुंजी कसथु, बेटा हमर छियै मुदा बेटी समाजकेँ होइत छै फैसला यैह समाज करतै। वाह! एहि तरहक सोचक त' हम कल्पना केने रही। आब बात सेहो फरिछा गेल जे ई प्रेम-प्रसंग अछि। रमसेबका बेटा दोसर गामक लड़कीकेँ भगा अनलक मुदा एखन बियाह नहि केलक ईहो एगो नीक गप जे लड़काक मनमे किछु धाख एखन बाकी अछि।' तखने रमसेबका कनियाँक नजरि हमरा पर गेल आ कहलक– 'दाय, हमरा त' देहमे आगि लागल अछि। यैह पुछथि एकरासँ कोन गामक छियै, ककर बेटी छियै, कियै ई अधरतियामे भागि-पड़ाक' दुनू कुलक नाम हँसारत केलक?' दाय, हमर बेटा हाथ जोड़ि बस अतबे कहलकनि माय गे निहोरा करै छियौ इज्जत राखि ले, एखन बियाह नहि केलियौ आ देखथिन ने तखनसँ बौक बनि बैठल छै, मन होइत अछि जे हमहीं जहर खा ली। अपना त' मालिक साहेब दुनियाँ छोड़ि देलखिन आ हमरा ई मेला देखै लेल जीबैत छोड़ि देलखिन।' रमसेबका कनियाँक ई रुदन हमरा भीतरसँ झंकृत केलक। कोनो मसोमातक घरमे एहन घटना हमरा समाजमे बहुत हँसारत करबैत अछि। जकर गार्जियन नहि कोइ ओकर पूरा समाज फुसियाही गार्जियन बनि जाइत अछि आ भरि गाम ओकर हँसारैत करबैत अछि...ई व्यवहार त' हमरा समाजक बहुत पुरान अछि आ एहिमे परिवर्तन अननाइ बड़ मुश्किल।

रमसेबका कनियाँकेँ धीरज बन्हेनाइ एखन मात्र एक रस्ता छल बस हम एतबे कहि पयलहुँ जे 'कनियाँ, जिनगीमे कतेक तरहक उतार-चढ़ाव एहिना आबैत रहैत छै। एहि समय हताश होइसँ मति भ्रष्ट होइत छै। अहाँ त' बहुत सबल स्त्री छी, कतेक तरहक विषम परिस्थितिक सामना केने छी...फेर एना बताह कियैक होइत छी...? बिहाड़ि एला पर सब खिड़की बंद केनाइ

अकलमंदी अछि नहि त' बाहरक सब गंदगी घरमे गिरथैन बनत। अहाँ हाथ जोड़ि सभसँ पहिने एहि भीड़केँ अँगनासँ हटाउ। जखन अपन समस्या अहाँ समाजकेँ सौंपि देलहुँ त' लाँछनाक डर कियैक करैत छी?' जहिना हम कहलहुँ तहिना-तहिना ओ करैत रहल। फेर हम ओहि बेदरा लग जा बैसलहुँ आ हाथ पकड़ि पुचकारैत ओकरो बैसेलहुँ। ओ गरदनि लिबेने नोरक टघारसँ जेना अपन कएल काज पर पछताइत रहै। हम ओकरा संगे होइत पीठ पर हाथ रखैत पुछलहुँ

—'बुचिया, की नाम भेल अहाँक?'

—'तुलसी।'

—बहुत पवित्र नाम अछि... एहन कोन परिस्थिति आएल जे अहाँ अपन माय-बाबूक पगड़ी ऐंड़ी तर रगड़ैत अपन घरक चौखठि लांघलहुँ? कतेक उमेर अछि अहाँक?'

—'सतरह साल।'

—'हमरा अहाँ अपना बारेमे सब किछु बताउ, चिंता नहि करू। अहाँ हमर बेटीक समान छी। ऐना चुपचाप नोर नहि खसाउ।'

हमर एहि तरहक बात पर ओ भरोस केलक मुदा ओकरा एतेक हिम्मत नहि भेल जे गरदनि उठा डाँड़ सोझ क' बैसत। लाजे ओ चौकीमे गड़ल जाइत छल। प्रायः एहि अवस्थाक प्रेम बेधाक होइत छै मुदा एहि प्रेममे गम्भीरता आ लाज छल जे अपना संगे किछु आरो कहानी जोड़ैत छल। आब आगूक बात जानैक उत्सुकता हमर आर बढ़ि गेल। हम ओकर पीठकेँ सहलाबैत फेर बजलहुँ— 'मनकेँ शांत करू बाबू, जँ घर छोड़ैक एतेक दुःख होइत अछि त' फेर कोन एहेन परिस्थिति आएल जे अहाँ एहन काम केलहुँ? हम अहाँकेँ अपन घर पहुँचा देब, बाजू ने, अहाँ किनकर बेटी छी आ कोन गामक छी...?'

—'हमर नाम तुलसी अछि, बाबूक नाम परमेश्वर चौधरी, गाम पचगछिया, हम अपना मामा-मामी लग रतनसेरामे रहैत रही। दू साल पहले हम दिल्लीमे रहि अपन मायकेँ फोन करैत रही मुदा गलतीसँ हिनका फोन लागि गेल आ फेर हम दुनू एक दोसरकेँ बिन देखले एक सालसँ गप कर' लगलहुँ। काल्हि एहि बातक भनक मामीकेँ भेलनि त' ओ हमर फोन छीनि झोंटा पकड़ि लिड़ी-बिड़ी क' ऐंड़ियाबैत घरसँ भगा देलखिन आ कहलखिन जो कतहु जाक' मरि जइहें।

एहि घर एबही त' जहर खुआक' हम मारि देबौ...।'

एतेक कहैत ओ हिचकि-हिचकिक' कानए लागल आ माथ पर उगल टेटर देख' लागल। आँखि त' हमरो नोरा गेल मुदा स्थितिकेँ सम्हारैत हम पुछलहुँ— 'अहाँ अपन माय-बाबूसँ बात करब?'

—'बाबू लेल त' हम फाजिल छी... माय कहियो-कभार बाबूसँ चोराक' बात क' लैत अछि... पाँच सालसँ बेसी भ' गेल मायकेँ देखला।'

तुलसीक बात हमरा भेद रहल छल फेर ओ बजली— 'मामीक एहि तरहक व्यवहार पहिलो कतेक बेर छल मुदा मामा हर बेर अपन स्नेहक मलहमसँ सभ दुःख बिसरा दै छल। ओहो दिन हम मामाकेँ ओहि मलहमक इंतजारमे मंदिर पर बैसल-बैसल साँझमे घर गेलहुँ त' मामा कहलखिन जे एतएसँ चलि जो नहि त' हमरा हाथे तू मारल जेबें। तोहर माय-बाप अपन गलतीक पोटरी हमरा माथ पर राखि निचेन भेल अछि। हमरा लेल त' पूरा दुनिये विरान भ' गेल, फेर हम कोनो राहगीरसँ फोन ल' कन्हैयाकेँ फोन क' सब बात बतेलहुँ त' ओ कहलखिन जे अहाँ ओतए रहू, हम दू घंटामे अबैत छी, फेर ई अपना संगे एतए अनलखिन।'

तुलसीक आँखिसँ टघरैत नोर ओकर बातक सत्यताक प्रमाण दैत छल, सभ निःशब्द भ' ओहि बेदराक' कहानी भाव-विभोर भ' सुनैत रहै फेर हम मौनकेँ भंग करैत बजलहुँ— 'आ अहाँक माय-बाबू...?' हमर एहि तरहक जिज्ञासा पर तुलसी डबडबाएल आँखिसँ हमरा दिश ताकि कह' लागल...

—'हमर बाबू दूटा बियाह केने छथि, दिल्लीमे माय आ हमर दस सालक बउआकेँ सेहो रखने छथि। मुदा हमर मायक जिनगी बड़ कष्टकर अछि तैं ओ हमरा मामा-मामी लग रखने छलखिन। बउआ भेलाक बाद मायक बच्चादानी खराब भ' गेल त' बाबू कहलखिन जे एगो टका आ एगो बेटाक कोन भरोस, कखन हेरा जाएत। तैं आर बेटाक लालचमे दोसर बियाह केलखिन मुदा भगवानक खेल एहन भेल जे ओहूमे चारि टा बेटिये अछि। पूरा घरमे बस नबकी मायकेँ राज अछि, हमर माय आ बउआ बस ओकरा सबहक नोकर मात्र अछि आ हम अपना माय बाबू लेल फाजिल। आब अहीं सभ बताउ जे हम कतए जइतहुँ एहि दुनियाँमे? हमरा जे अपना लागल हम ओकरा संगे आबि गेलहुँ। आब अहाँ सब हमरा लेल जे फैसला लेब हम मानै लेल तैयार छी। अहीं सब हमर मार्गदर्शक बनू।'

तुलसी एतेक कहैत-कहैत हाथ जोड़ि बेकल भ' कनैत चौकी परसँ उतरि भुइयाँमे बैसि गेल आ हम सोचए लगलहुँ कि दुनियाँ कतेक निठुर अछि...ई बेदरा एहि उमेरमे कतेक जिनगी जी लेलक... दोसर मन इहो कहैत छल जे कहीं खिस्सा त' नहि? किये त' लोक अक्सर अपन गलतीकेँ झाँपै लेल भावना संगे नोरक सहारा लैत अछि। एखन तुलसीक बातकेँ सच माननाइ हमरा बुधिगर लागल। कंठ खकसैत हम बजलहुँ—'कनियाँ आइ साँझमे बैसार करू, पंचक राय बहुत जरूरी अछि। एहि असहाय बचिया संगे हम ठाढ़ छी।' हमर एहि बात पर सभ चुप भ' गेल मुदा तुलसीक दुनू डोका सनक आँखिसँ नोरक टघार बहए लागल। एना लागल जेना ओ एखन तक कएल अपन सभ गलतीकेँ ओहि नोरसँ धोअ' चाहैत छल कि हम ओकर गरम गाल मुदा अपन हाथ रखैत नोरक टघारक दिशा बदलैत ओकरा छातीसँ लगा अपना प्रति विश्वासक आभास जतेलहुँ।

**4**

साँझमे बैसार कएल गेल जाहिमे गामक बुद्धिजीवी सभ अपन-अपन बुधि अनुसार बात राखैत गेला। कोनो-कोनो बुद्धिजीवीक एहन बात होइत छल जे हंसुआसँ जीह काटि दी... मुदा की करब हमरा समाजमे पंचकेँ परमेश्वरक स्थान देल गेल अछि, दोसर महिलाकेँ पंचक हिस्सा एखन धरि समाज स्वीकार नहि केने अछि, तैं भुइयाँकेँ बकुटैत नीक पंचैतीक आस ल' चुप्पी साधि बैसि जाइत रही...! जखन बात बहुत भासए लगल त' नहि रहल गेल आ हम बुच्चन बाबूकेँ अँगना बजाक' कहलहुँ— आँय यौ, अपन बेटी रनियाँ, दोसरक बेटी सबहक कनिया। हयौ ई पंच सभ एना आन्हर जकाँ बात कियैक करैत अछि बउआ...? तुलसी बिनु भगवानक भोग नहि लगैत अछि मुदा एहि तुलसीकेँ हम सबहक भोग नहि बन' देब... पंचक ई कोन फैसला भेल जे एखन ई नाबालिग अछि... केश भ' जायत। जँ विवाह नहि भेल अछि त' राता-राती एकरा एहि गामसँ भगा दियौ जाहिसँ गामक हँसारत गामे-गाम नहि होएत... बताउ त' ई आन्हर पंचक कोन फैसला भेल... एहि रातिमे जे एहि बचियाकेँ भगबैक बात कहैए वैह एकरा संगे दुर्व्यवहार करैमे सभसँ आगाँ रहत...। मुदा हम एना नहि हुअ देब। बुच्चन बाबू अहाँ जाउ आ पंचक

बीच ई बात राखू जे तुलसीकेँ बालिग होइ तक एकर जिम्मेदारी हम लैत छी... ओ हमरा संगे हमरा घरमे हमर बेटी बनिक' रहत। जखन कन्हैया अपन पढ़ाइ पूरा क' विवाह योग्य होएत त' दुनूक विवाह एहि समाजक बीच कराओल जाएत। बीचमे लड़कीक माय-बाबू आबि अपन लड़कीकेँ ल' जाय लेल चाहथिन त' हुनकर फैसला सर्वोपरि मानल जाएत। हमर एहि तरहक प्रस्तावसँ बुच्चन बाबू हाथ जोड़ि बजलखिन– 'काकी, आइ कक्काक कमी अहाँ पूरा क' देलहुँ...।' ओ हर्षित भ' पंचक सोझाँ हमर कहल बातकेँ रखलक कि तखने पंचक बीच आबि हमरा अपन बात रखै लेल कहल गेल। हमरा बातसँ सभ सहमत अछि से आश्वासन देल गेल। ई हमर पहिल नोनिआएल देबाल छल जकरा हम ढाहैमे सफल भेलहुँ। कियैक त' एखन धरि पंचक बीच महिलाकेँ बस मुजरिम रूपे ठाढ़ कएल गेल छल अपन राय देबैमे आ ओकरा समर्थन कएल गेल ई पहिल बेर भेल। आइ हमरा दुनू हाथमे लड्डू छल...जन्माएल बेटी आ समाजक बीच प्रतिठा दुनू बहुत मुश्किलसँ भेटैत अछि जे आइ हमरा भेटल...।

## 5

भरि गाम हाहाकार मचि गेल जे आइ चौकीदारक कनियाँ नहि बचत। रहि-रहिक' खून बोकरैत अछि, दीपू डागडर लग भर्ती अछि। बउआसिन कहै लेल आएल जे दीदी आइ परसाहि बाली नहि बचतनि। ई गजपिबा चौकीदरबा नशामे मातल बौहकेँ डेंगा देलकै। ऊहो बेचारी खूंटामे बनहल गाय जकाँ बेर-बेर हड्डी-पसली तोरबा लैत छै। सुनलिए जे दीपू डागडर इलाजो करैसँ  मना क' देने रहथिन। डागडर साहेब कहैत छलखिन जे एहि बेर हम किछु नहि करब। ई पुलिस केस छी ल' जाउ आगाँ जखन थाना-चौकीकेँ चक्कर लागत तखन गाँजाक नशा टूटत, आ कि गजपिबा डागडरक हाथ-पैर जोड़ि निहोरा करै लागल। डागडरकेँ कहीं पेसेंट  मरैत देखल जाय छै कतहुँ तैं त' डागडरकेँ भगवान कहल जाइत छै। हम बउआसिनक बातमे बेसी रूचि नहि लैत बजलहुँ– 'छोडू ई सैंय-बौहक झगड़ा। ई एहिना चलैत रहत।' फेर मोन नहि मानल आ हम बउआसिनसँ पुछि बैसलहुँ जे 'बेर-बेर एहि लड़ाइक मूल कारण की अछि? एगो बेटा अछि

जे पिछला साल मैट्रिकमे जिला टॉपर छल। एखन दरभंगामे पढ़ि रहल अछि, कतेक सुखी-सम्पन्न परिवार अछि फेर ई फसाद कियैक?'

दीदी ओकरा घरक बात त' ओकर घरक देबालो नहि बुझैत अछि मुदा एहि बेर सुनैमे आयल जे राति चौकीदार धनसाहि बालीक घर गेल छल ओतए कजरीकेँ बरेड़ीसँ झुलैत देखि नरभसा गेल आ ओकर कनियाँ कहलखिन जे थानामे रिपोट करू तैं ओकरा पीट देलक।

कजरीकेँ फँसरी लगबैक बात सुनि हमरा कानमे सीटी बाजय लागल आ देह सुन्न भ' गेल। किछु कालक बाद मन स्थिरक' अधखिजुआ बोल बस अतबे निकलल...क...ज ...री... फँस...री...। हमर हालति देख बउआसिन तुलसी-तुलसी करैत दौड़िक' पानि अनलक आ हमर मुँह पोछए लागल। मुँह पर पानिक स्पर्श होइत हम चेतलहुँ। किछु काल तक एना लागल छल जेना सभ किछु ठमकि गेल होइ। तुलसी गिलासमे पानि ल' दौड़ल आएल हमरा पीठकेँ सोहराबति पानिक गिलास मुँहमे सटबैत बाजल— 'दीदी माँ ठीक छी ने? हम हँमे मूड़ी हिलबैत ओकरा घर जाइ लेल इशारा क' देलहुँ। बउआसिन हमर छाती आ पीठ हँसुथय लागल। हम एक घोंट पानि पीबि बउआसिनसँ पुछलहुँ— 'कजरीकेँ की भेल?' बउआसिन हमर प्रश्न पर मुदा किछु काल चुप रहल फेर चौकन्ना होएत हमरा दिस ताकैत बाजल— 'दीदी ककरो लग बजिहें नहि। राति कजरी फँसरी लगा अपन जीवन लीला समाप्त क' लेलकनि।'

फेर पुछलहुँ— 'से कियै? काल्हि साँझ त' कतेक नीक हमरा अँगनासँ हँसैत-खेलाइत गेल छल, फेर ओहि बेदरा संगे एहन कोन परिस्थिति आएल जे ओ अपन हत्यारिन अपने बनल?'

—'दीदी, ओकर मायक कहब अछि जे ओ राति ओकरा दोकान पठेने रही, चीनी आनय लेल। ओतए रस्तामे ओकरा संगे कोनो दुर्व्यवहार भेल, ओकर फ्राक फाटल छल, ओकर माय जखन चीनी लेल पुछलक त' कहलक जे दोकान बंद छलै, ओ किछु बजने जाक' सुति रहल, ओकर माइयो एहि सभ बात पर नहि ध्यान द' खा-पीक' सुति रहल, जखन अधरतियामे उठल त' देखलक जे कजरी बरेड़ीसँ झुलि रहल अछि। बाप-बाप चिचिआएल त' आवाज सुनि चौकीदार अँगना गेल आ दुनू गोड़े मिलि ओकरा नीचाँ उतारलक। दीपू डागडरकेँ सेहो बजौने रहै त' डागडर

देखि बस एतबे कहलक जे ई त' बहुत पहिने मरि गेल अछि। रातिए मौगी लहासकेँ ल' नहिरा भगलै। कानो-कान केकरो खबरि नहि छै एहि बातक। ओ त' हमर जाउतक टेम्पूसँ गेल रहै तैं हम बुझलिए। ई गजपिबा चौकीदरबा कहलक जे एहि बातकेँ कोय छिटबिही त' ओकरा उपर एहन केस करबौ जे कतेक पीढ़ी पिसा जेबें। की कही दीदी, ई गजपिबा नहि नीक लोक अछि। ओकरा डरे सभे माय-धी चुप छी, बस अहीं लग मुँह खोललहुँ। बात त' छिपल नहिये रहत मुदा हम दोखी कियैक बनी...देखबै ई गजपिबा ककरा-ककरा उपर केस करैत छै...यैह सभ गामक हवा खराब केने छै आ यैह सभ मुँहपुरुख बनै छै।' बउआसिन मुँह चमकाबैत हमरा लगसँ बिदा भेल मनमे चौकीदारक प्रति विद्रोह ल' क'। मुदा गरीबक विद्रोह ओकर बेबसी तर झाँपि जाइत अछि। बउआसिनकेँ जाइते बैसकी घरमे बैसल रही आ एना लागल जेना कजरी हमरा पाछाँमे ठाढ़ हँसि रहल अछि। हम धरफराक' उठलहुँ आ आँखिसँ नोर झहरए लागल आ सोचए लगलहुं जे नवकनियाँकेँ अबिते जेना घर-अँगनाक रौनक बदलि जाइत अछि। ओहिना हमरो घरक देबाल तुलसीकेँ एलासँ हँसय लागल। नहि त' ओहो हमरा संगे चुप रहैत-रहैत बूढ़ भेल जाइत छल। साँचे, बेटी चाहै जे रूपे कतहु जाइत अछि ओतय स्वर्ग भ' जाइत अछि। फेर एहि बेटीकेँ देहक दुश्मन कियैक एतेक अछि! पुरुख वर्ग कियैक नहि ई बुझैत अछि जे प्रेम जबरन नहि, प्रेमसँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। देहक ई केहन भूख अछि जे अबोधक गला घोंटिक' मिटाइत अछि! दुखक बात त' ई अछि जे एहेन असामाजिक पुरुख हमरे समाजमे हमर रक्षक बनि भक्षण करैत आएल। कोना हम कही तुलसीकेँ जे भरि दिन ओकर आगू-पाछू करै बाली आठ बरखक कजरी आब एहि दुनियाँमे नहि रहली। साँझे त' गेल रही एतयसँ। कतेक हँसमुख आ मिलनसार रहै। केकरो झट सन अपना बना लैत रहै। ओकरा एखन जीवन-मरणक भेदो नहि बुझल छल त' फेर ओ कोना फँसरी लगा सकैत अछि, हमर मन नहि पतियाइत अछि! ओ त' एखन ससरफानी शब्द बुझनो नहि हेतै, एगो टुटलाहा जोड़ी जे कहियो गिरह नहि बान्हलक से ससरफानी लगा कोना अपन साँसक डोर घोंटत, ई बात हमर मन मानै लेल तैयार नहि अछि। ओकरा एखन इज्जत आ बेइज्जतक फाट कहाँ बुझल छल, जे ओ ई बुझलक जे हमर इज्जत लुटि गेल

त’ हम नहि जियब। कजरी ई की केलहुँ अहाँ...!

बउआसिन त’ हमरा एहन ताप द’ गेल जाहिमे असगर हम धधकि रहल छी। मन त’ होइत अछि चिकरि-चिकरि सभसँ पूछी कत’ गेल कजरी, के अछि ओकर मुजरिम? ओकरो एहिना बीच चौराहा पर फँसरी लगा प्रतिशोध ली मुदा अपन क्रोधक ज्वालामे कोनो गरीबक घर कोना जराबी, तें चुप छी। मुदा ई चुप्पी हमरा बर्दाश्त नहि भ’ रहल अछि। जखन कजरी जनमल त’ ओकर बाप ई कहि ओकरा मायकेँ छोड़ि गेल जे ई हमर जनमल नहि। तू कतहु आर मुँह मारि एलें। ओहि दिन जे गेल से आइ तक घुरिक’ नहि आएल। कलकत्तामे कोनो बंगालीसँ बियाह क’ लेलक। एतेक राजपाट असगर धनसाहि बाली भोगैत अछि। सास पहिले मरि गेल छल आ ससुर बेटाकेँ सोगमे दिन-राति कनैत आन्हर भ’ गेल। आब पोतिक एगो सोग सेहो।

हम नोर-तोर पोछि दलानक कल पर मुँह-हाथ धो, ई सोचिक’ बहरेलहुँ जे देखियै गामक वातावरणमे कोन रहस्य दबल अछि। कजरी घरक अगल-बगलक वातावरण केहन अछि। हम देख अचंभित रहि गेलहुँ जे ओतुका स्थिति पूरा शांत अछि। लागिये नहि रहल छल जे एतए किछु भेल छल। हम मने-मन सोचलहुँ जे मानवता साँचे मरि गेलै की? आकि एतय बस मुर्दा रहैत अछि! हम ओतएसँ घुरि दीपू डागडर लग पहुँचलहुँ। संयोगसँ डागडर अँगनामे जलखै करैत रहथिन। हमरा देखते हुनकर माय बड़की काकीक हाथ पकड़ि अँगना ल’ गेलखिन आ ओहि चौकी पर ल’ जाक’ बैसा देलखिन, जतए डागडर साहेब खाइत छलखिन।

डागडर साहेब पुछलखिन— ‘भौजी मन ठीक अछि ने?’

हम कहलहुँ— ‘हँ बउआ, अहाँसँ किछु गप्प करैक छल...!’

—‘कहू ने भौजी।’ डागडर बउआ बजलथि। हम चारूभर मूड़ी घुमबैत धीरेसँ कहलहुँ—‘बउआ, कजरी केना मरलै, साँचे फँसरी लगेलकै?’ दीपू बउआ किछु काल हमर मुँह देखि फेर नजरि अपन थारी पर गड़ाक’ बाजल— ‘नहि भौजी, हमरा बुझने ओकर कोय नाक-मुँह दाबिक’ मारलकै। हमरा दू बजे रातिमे ल’ गेल छल मुदा देह छुबि लागल जेना ओकर मृत्यु नौ बजेसँ पहिले भेल अछि। की कहब भौजी बहुत खराब अछि धनसाहि बाली। बहुत पहुँचल खेलाड़ी अछि। गामक वातावरण सेहो ठीक नहि अछि तें मुँह सीने बैसल छी। आखिर एहि समाजमे रहबाक अछि। हमहूँ

बाल-बच्चेदार छी। छोड़ू भौजी, एहि सभमे नहि पड़ू।' हम दीपू बउआक बात सुनि ओतएसँ अपना घर दिस बेसोह बिदा भेलहुँ। कोना हम चुप रही। रहि-रहिक' कजरीक हँसैत चेहरा सोझाँमे ठाड़ भ' जाइत छल। ओकर आवाज कानमे गूँजि रहल छल। आइ बैसकी घरसँ उठि अँगना जाइक मोन नहि भेल। ओतय पाथर बनि पड़ल रहलहुँ।

## 6

लुत्ती जे हम काल्हि बड़का अँगनामे छोड़ि एलहुँ से लुत्ती भरि गाम अगराही लगा देलक। सुतले रही कि बउआसिन दौड़ल एली—'दीदी, चौकीदारबा दरबज्जा पर आएल छनि, हिनका बजबै छनि।' हम कहलहुँ—बैसाउ, हम मुँह-हाथ धोने अबैत छी।' चौकीदार हमरा देखते सकपका गेल। ओ हाथ जोड़िक' बाजल—'गोड़ लगै छी काकी। केना छी?' हम पिपनीकेँ पानि हाथसँ पोछैत बजलहुँ—'ठीक छी, एतेक भोरे केना एनाइ भेल?' ओ ओतहि राखल कुर्सी पर बैसैत हमरा बैसैकेँ इशारा करैत बाजल—'काकी कजरी त' अहीं घर बेसी रहैत छल, तैं ओकरासँ अहाँक लगाव सहज अछि। हमहुँ सभ ओतबे दुःखी छी जतेक अहाँ। आब जे एहि दुनियासँ चलि गेल, कियैक ओकर इज्जति तार-तार करै छी? केस-फौदारीक चक्करमे ओहि अबोधक इज्जति उछालल जाएत। एहि तरहक मामलामे पुलिसक सवाल बहुत बेपर्द होइत अछि। ओहि मायक हालत देखियौ। काकी, छोड़ू ई सभ बात आ ओहि बेदराक आत्माक शांति लेल प्रार्थना करू। जाहि बातक ठर नहि त' कियैक अन्हारमे ढेपा भाँजैत छी, कहीं घुरि अपने देह जख्मी नहि क' ली।' हमरा ओकरा बातसँ एगो बिनबिन्नी देहमे उठल आ हम कहलहुँ—'बउआ, जँ अहूँ एहि घटनासँ आहत छी त' हमर संग दिअ। हम केस त' करबे करब। हमरा नहि डर अछि जे हमर फेकलाहा ढेपा हमर कपार फोड़त। हम उखरिमे मूड़ी द' देलहुँ आब मुसराक डर नहि करब आ कजरीकेँ न्याय दियाक' रहब। हम ओकरा माय पर केस करब। अपने बेटीक हत्या केलक ओ।' हमर एहि बात पर चौकीदार तमतमाइत बाजल—'अहाँ बताह भ' गेलहुँ, कोन माय अपन संतानक हत्या करत! ओ अबला छै त' अहाँ ओकरा अपन पाइक दम पर केसक धमकी दै छियै, ई सभ एतय नहि चलत, हम नहि चलए देब।'

चौकीदार बड़बड़ाइत हमर दालानसँ निकलल। ओकर ई विरोध हमरा संकल्पकेँ आर निस्सन बना देलक।

## 7

तुलसीक मनःदशा आइ ठीक नहि छल। आँखि कहि रहल छल जेना भरि राति बरेड़ी निहारैत नोरमे छपकैत प्रात भेल होय। मनक उदासीनता आ आँखिसँ बहल नोर सुखलाक बादो अपन निशानी चेहरा पर छोड़ि जाइ छै। सहज अछि कचोटल मोनकेँ पढ़नाइ मुदा ओहि कचोटल मोनक उपचार कहाँ कोनो वैद्य क' पबैत अछि! सभ ओकरा समय लेल टारि दैत अछि। जतेक सहजतासँ मनुख मोनक उदासीनता अँकैत अछि ओतबे सहज एकर उपचारो रहितै त' आइ केकरो आँखि नोरक समुद्रमे नहि डुबितै। तुलसीक एहन हालति देखि हम भीतरसँ टुटि गेलहुँ। तुलसीक उदासी हमरा भेद रहल छल, आ कहि रहल छल जे हम अपन व्यस्ततामे एतेक बताह भ' जाइत छी जे एहि अबोधक ध्यानो नहि रहैत अछि। हमर ई व्यस्तता कहीं हमरा तुलसीकेँ मौला नहि दै। हम एहि तुलसीकेँ झमटगर, खिलखिलाइत अपन आँगनक शोभा बना गृहप्रवेश करौने रही। अनकर बेटीकेँ सभ समाजक बीच अपन बेटी बना अनने रही। मात्र मठौ...।

## 8

स्वतन्त्रता सबहक अधिकार थिक। ओहिमे फाँट उचित नहि अछि। बेटा होइ आ कि बेटी जखन प्राणक स्वतन्त्रता दुनूक समान अछि त' ओकरा जीबैक तरीका एतेक विपरीत कियैक अछि? कहिया धरि बेटीकेँ जत्ता संग बान्हि चौखटि तरमे झँपने रहब। उड़ै दियौ ओकरो एहि आसमानमे। ई आकाश जतेक बेटाक अछि ओतबे बेटियोक अछि। नांघै दियौ ओकरा चौखटि आ विचरै दियौ सगरे संसारमे। बन' दियौ ओकरा आत्मनिर्भर आ उड़' दियौ अपना पाँखिसँ दूर बहुत दूर तक। जे अवसर सरकार द्वारा बेटीकेँ देल गेल अछि ओकर लाभ उठाउ। कियैक अपन कुविचारसँ वंचित करै छी बेटीकेँ आत्मनिर्भर बनैसँ।

—'कनियाँ ई सभ बात पैसा बला लेल नीक लगै छै। जतए कोनो

ठेस लगला पर पाइक मलहमसँ तुरन्त सभ ठीक भ' जाइत छै। हम गरीब लेल इज्जतिसँ पैघ कोनो गहना नहि अछि, जकरा सभसँ नुकाक' सहेजक' रखै छी। हम अपना बेटी-पुतहुकेँ बजार नहि पठाएब। हमहूँ सभ कोनो गुणी नहि छी, त' की मनुख नहि छी। मर्यादाक शिक्षासँ पूर्ण अपन इज्जतिक गहना पहिरि बेदाग शानसँ छी।' मंगलीकेँ दादी हमरा बात पर तमतमाइत बाजल।

—'की घरक अंदर बेटी शोषित नहि होइत अछि? एतए सभ महिले छी। सच-सच सभ अपना मनसँ कहू, की घरमे बेटी साँचे बेदाग अछि?' हमर एहि बात पर सभ गहन चिंतामे डूबि गेल। हम स्थितिकेँ भँपैत फेर बजलहुँ—'हम बच्चाकेँ नेनेसँ सिखबैत छी जे ई आगि अछि एकरा छुअब त' पाकि जायब। मुदा एकटा बात कहू, आगिकेँ बिनु छूने ओकर तपन आ जलनकेँ पता लगाओल जा सकैत अछि? ताहि लेल त' बच्चाकेँ ओहि आगिकेँ छुबैए पड़त। जाहि समाज संगे ओ रहि रहल अछि, ओकर हर रंग बुझनाइ समाजमे रहनिहार सबहक हक अछि। जखनि ओ घरक चौखटि लँघबे नहि करत त' की सीखत चतुराइ। तोड़' दियौ जाबी जे मर्यादाक नाम पर ओकरा सोइरिएमे पहिराओल गेल छल। कियैक डरैत छी कोनो पिहकारीसँ? विश्वास करू, वैह पिहकारी हमर बेटीकेँ आत्मरक्षाक बल देत। कियैक ओकर रक्षा लेल प्रहरी बनि अहाँ ठाढ़ रहैत छी। समर्थ अछि ओ अपन रक्षा हेतु, से भान ओकरो हुअए दियौ। छोड़ू, खोलू ई पाजेब जे ओकर पैर भरियेने अछि।'

हमर बातसँ सभ प्रभावित भेल मुदा कियो पहिले हामी भरै लेल तैयार नहि भेल। कारण हमरा समाजमे बेटीकेँ एतेक लिबाउल जाइत अछि जे ओ ओहिमे रहक आदि भ' जाइत अछि। परम्पराक नाम पर कतेक अनर्गल जुन्ना अछि जकरा खंडित भेनाइ आवश्यक अछि। किछु काल तक सभा मौन रहल फेर गाम वाली मैंयाँ कहलखिन्ह जे गामसँ बाहर कोय अपन बेटी-पुतहुकेँ प्रशिक्षित होय लेल नहि जाए देत। कनियाँ जँ गामेमे ई प्रशिक्षणक व्यवस्था होय त' फेर सभ तैयार अछि। हम मैंयाँक बात सुनि अपन माथ हँसोतथि कहलहुँ—'अच्छा ठीक अछि काल्हि ब्लौक पर जाक' गप करै छी।'

राति भरि यैह सोचि प्रात केलहुँ जे आखिर कहिया तक हमर समाज अपन कुत्सित विचार संग स्वयंकेँ झँपने रहत? कहिया हमरा

समाजक बेटी-पुतहु इजोत देखत? किछु काल ओछाओन पर कछमछ करैत अपन समाजक बेटी-पुतहु लेल इजोतसँ भरल जीनगीक संकल्प ल' उठलहुँ। नित-क्रियासँ निवृत्त भ' पूजा-पाठक' एक गिलास सत्तू पीबि अपन संकल्प दिस डेग बढ़बैत दस बजे ब्लॉक पहुँचि गेलहुँ। ओतय पहुँच जखनि आवेदनक लिस्ट देखलहुँ त' अचंभित भ' गेलहुँ। एकैस पंचायतक ग्रामीण सबहक प्रशिक्षण हेतु लिस्ट आएल जाहिमे तीन सय पचास लड़का आ चारिटा लड़की छल। हम ओ देखि डी.एम. अरुणजीसँ पुछलहुँ की एहि उद्देश्यसँ सरकार ई प्रशिक्षण टीम तैयार केलथि? जतए पचास प्रतिशत महिला आरक्षित अछि ओतए कियैक अखनो धरि महिला घरक चौखटि तक सीमित अछि। डी.एम. अरुण जे हमर संगीक छोट भाइ छल कहलक—'दीदी की करी, सरकार ई प्रशिक्षण त' महिलाकेँ जागरूक करै लेल आ ओकरा स्वरोजगार लेल केने छथि आब आगाँ की जबाब देब। जँ महिलाक उपस्थिति नहि रहत त' ई फंड कैन्सिल भ' जाइत।' हम किछु काल चुप रहलाक बाद कहलहुँ जे 'एहि समस्याक समाधान करय पड़त आ बेटी-पुतहुकेँ बाहर निकलैक मार्ग सेहो तकनाइ आवश्यक अछि। जाधरि घरक बेटी बाहरी दुनियासँ अवगत नहि होयत ताधरि ओकर मानसिकता नहि बदलत आ सालो-साल बेटी चौखटिक नीचाँ घुटि प्राण तियागति रहत।' फेर हम अरुणजी दिस तकैत बजलहुँ—'जहिना जे बुझत ओकरा ओकरे भाखामे बुझाएब, आ बेटीकेँ साक्त बनाएब। अहाँ देखब समय सेहो बदलत आ बेटीक जीवनो।

अरुणजी हम एना क' सकै छी जे सिलाइ-कढ़ाइकेँ केन्द्र गाम-गाम। मोमबत्ती आ साबुन बनबैक केन्द्र पंचायत भवनमे। नर्सिंग आ कम्पोंडरी ब्लौक पर आ एहिठामक सरकारी हास्पिटलमे क' दियौ।'

हमर एहि बात पर डी.एम. अरुणजी कहलथि—'दीदी अहाँक बात बहुत नीक लागल पर एहि लेल खर्च बेसी होयत।' हम तुरन्त हुनका बात पर कुदि बजलहुँ—'अहाँ बस एहि काजक शुरुआत कराउ। फंडसँ बेसी साल भरिमे जे पाइ लागत ओकर भुगतान हम करब।' हमरा बातकेँ लपकैत अरुणजी बजला—'बस अहीं टा नहि दीदी, हमहुँ करब। हमर किछु अनुदानसँ जँ हमरा समाजक दिशा आ दशा बदलत एहिसँ पैघ कोनो काज नहि। हम अखने मेल आगाँ पठा आइये एहि काजक मंजूरी लैत छी।'

दुनू भाइ-बहिन अपन संकल्पकेँ पूरा केलहुँ। गाम, पंचायत आ ब्लॉक मुदा प्रशिक्षण केन्द्र बनि गेल। हमर सबहक योजनानुसार बेटी-पुतहु, काका-काकी आ गामक युवा सभ एहि प्रशिक्षण केन्द्र पर अपन समय आ लगन दुनू देखौलक। केन्द्र पर एहि बातक घोषणा डी.एम. अरुणजी द्वारा कयल गेल, जे प्रशिक्षित भ' अपन रोजगार स्थापित करै चाहै छी सरकार ओकरा जिरो प्रतिशत ब्याज पर साल भरक लोन सेहो दैत। जाहिसँ सभ ग्रामीणमे उत्साह आबि गेल। गामक किछु बेटी नर्सिंग प्रशिक्षण लेल सेहो आगाँ आएल। हमर दुनू भाइ बहिनक एहि काजक जानकारी ऊपर अधिकारी तक पहुँचल। सभ एहि काज लेल खूब सराहना केलथि। आइ भोरका अखबारक हेडलाइन यैह बनि गेल आ हम 21 पंचायतमे काकी माँ नामसँ प्रसिद्ध भ' गेलहुँ। जकर कारण तुलसी छल। वैह हमरा बारेमे आर्टिकल लीखि, काल्हि अरुणजीकेँ हाथमे दैत कहने रहै जे 'हमर काकी माँ सबहक दामन भरैमे सक्षम अछि।' तुलसी नर्सिंग प्रशिक्षणमे रूचि देखबैत बहुत लगनसँ मेहनति क' रहल छल जे हमरा लेल बहुत खुशीक बात छल। एकर लगन देख हम ऊर्जावान भ' जाइ छी। तखने तुलसी चाह लेने आएल आ पजरा सटि बैसैत बाजल–'काकी माँ, अहाँ प्रवासी छलहुँ तैयो अपन मोनमे अपन माटिक सुवासकेँ जीवित रखलहुँ। अहाँक काज एहि बातक प्रमाण अछि जे अहाँकेँ अपन मातृभूमिसँ कतेक प्रेम अछि।'

साँचे जाहि अवस्थामे हम अपन एहि धराकेँ छोड़ि गेल छलहुँ, आइ लगैत अछि जे ओ बंजर होयसँ पहिले अंकुरा गेल। जाहिमे प्रस्फुटित भेल नव विचार आ नव डेग जे आधुनिकता दिस बढ़ि रहल छल। रिसीवरक हनुमान चालिसाक धुन मुदा ध्यान भंग भेल। साँझक मधुर बेलामे ई मधुरगर धुन एना लागल जेना सभ मनोरथ पूर्ण हेबाक संकेत होय। हम एहि धुन संगे भगवानक स्मरणमे हरा गेलहुँ। तुलसी हमरा हिलबैत बाजल–'काकी माँ, किनको फोन आएल अछि, उठबियौ ने आ कि फोन कटि गेल। किछु कालक बाद फेर रिसीवर हनुमान चालिसाक धुन सुनब' लागल। हम रिसीवर उठा हेलो कहलहुँ कि ओम्हरसँ आवाज आएल–'दादी माँ।' हम खुशीसँ अवाक् भ' गेलहुँ। चारि सालक बाद नूनू केर आवाज, हमरा आँखिसँ स्वतः नोरक धार टघरा देलक। फेर ओम्हरसँ आवाज आएल– 'Grand Ma I am missing you very much and I am

coming to meet you.'

ओकर एहि बात पर नोरक धार आर गतिमान भ' गेल। सूखल कंठसँ हम कहलहुँ– 'How are you my son what is the holiday? Hostel is closed. Are you at home. How many days off, spend some time with mother and father too. I am far away from you.'

हमर एहि बातक जबाब दैत नुनू बाजल– 'Oh My grand-mother! has so many questions together, where does my father have time for me, that's why kept me in boarding school childhood. I am just coming India doesn't want to spend along in the boarding room, this time with you. Now your child has become a doctor.'

अपन नुनूक एहि बात मुदा हँसैत हम बजलहुँ– मेरे डॉक्टर पोता इंडिया आने के लिए आर अपने दादी के पास आने के लिए पहले आपको हिन्दी सीखनी होगी।

आदर्श हमरा बातक प्रतिउत्तर भ' तुरन्त बाजल–'अब मैं हिन्दी बोलना भी सीख गया हूँ दादी माँ और आपके पास आने पर मैथिली बोलना भी सीख जाऊंगा।

ओकरा मुँहें ई शब्द सुनि हम खुशीसँ फेर नाचि उठलहुँ। हमर कुलक दीपक आदर्श सच आदर्शक प्रतिमान अछि।

## 9

चारि सालक छल नुनू जखन ओकरा बोर्डिंग स्कूलमे दाखिला कराओल गेल। याद अछि आइयो एहि लेल विकासक बाबू कतेक घमासान मचौने छल।

मुदा दुनू प्राणी अपना जिद्द पर छल जे बच्चाकेँ पढ़ैक उम्र यैह छै। बहुरियाकेँ कहनाइ छल जे हम दुनू प्राणी अपन दुलारसँ पोताकेँ नहि पढ़'-लिख' देब। जँ कारण एतेक कम उमरमे ओहि मासूमकेँ सबहक प्रेमसँ वंचित क' बोर्डिंग स्कूलमे दाखिला करेलथि। हम दुनू प्राणी अहुरिया कटैत रहलहुँ मुदा नहि बेटाकेँ परवाह छल नहि पुतहुकेँ। विकासक बाबूकेँ सभ दिन एहि बातक कचोट रहल जे हम अपन बच्चाकेँ अपना संस्कृतिमे गढ़ि

नहि पयलहुँ। नुनू बोर्डिंग स्कूलमे रहि चिड़चिड़ा आ एखुलुआ भ' गेल छल। जखन घर अबैत छल त' केकरोसँ बजनाइ ओकरा नहि सोहाइत छल। ओ असगर अपन जिनगी गढ़ैत रहैत छल। ओकर चित्र कलामे कोनो भीड़ नहि रहैत छल। चाहे सजीव होय वा निर्जीव सभ असगर गहन चिंचिमे ठाढ़ रहैत छल। ओकर एहि व्यवहार पर ओहि बोर्डिंगक शिक्षक संगे ओकर बाबा सेहो चिंतित छल आ निश्चय भेल जे आब ओकरा बोर्डिंगमे नहि पठाएल जायत। मुदा किछु दिन घर पर रहलाक बाद एक दिन ओतै रहैबाली रोजोकेँ उपराग आएल जे नुनू ओकरा बेटाकेँ छतसँ धकेल देलक जाहिसँ ओकर बेटाक हाथक केहुनी घुमि गेल। ओ बच्चाक हाथक ऑपरेशन कएल गेल। सभ कोय ओहि बेदरा लेल चिंतित छलहुँ। हम दुनू प्राणी हॉस्पिटलमे ओहि बच्चा लग छलहुँ। अनय नुनूकेँ विकास फेरसँ बोर्डिंग स्कूलमे कैद क' देलक। मुदा ई मात्र एकटा संयोग छल जे खेल-खेलमे भेल छल। मुदा ई बात नुनूकेँ सुननिहार कोय नहि छल। बस ओकर पक्ष सुनने बिना दोखी ठहरा सजा सुनाओल गेल। तहियासँ ओ अपन सुख-दुख सभ मोनमे घोटैत गेल। तकर बाद जखनि घर अबैत छल त' हमरा संगे ठिठोली क' लैत छल। ओकर बाबा सेहो संग दैत छलखिन। बाबा-पोता एकपिठिया जकाँ मटरगश्ती करैत रहैत छल। ओकरा दुनूकेँ देख बेर-बेर हमर आँखि खुशीसँ भीजि जाइत छल।

विकास आ बहुरिया संग नुनूक सम्बन्ध ठीक नहि छल। नुनू अपन बचपनक हत्यारा अपन पिताकेँ मानैत छल आ ओहि हत्याक भागीदार अपन मायकेँ। जे ओहि बच्चाकेँ मनोःदशाक अनुसार उचिते छल। एतेक पैघ दरार नुनूक बाल मोनमे फाटल छल जेकरा भरनाइ सहज कहाँ छल। ओ दरार समयक संगे बढ़ैत गेल आ आर भयंकर होइत गेल। एक दिन नुनू आ बहुरियामे बहस भ' गेल। बहुरिया बाप-बेटाक बीचक दरार भरैक लेल नुनूसँ बात करैक कोशिश केलक। नुनू बहुरियाक बात बिनु सुनने अपना मायकेँ मायक दायित्वक भान करबै लागल। हँ, ई कमी छल बहुरियाकेँ मुदा ई एकटा मायक मजबूरी छल। जे बिजनेसकेँ दुनू प्राणी पाँच साल दिन-राति एक क' ठाढ़ केने छल ओ नुनूकेँ जन्मक समय लड़खड़ा गेल छल। बहुरिया ठीकसँ छः दिनो नहि नुनूकेँ अपन छातीक अमृतपान करौलक आ ओकरा छोड़ि प्रायः विकास संगे बिजनेसक सिलसिलामे मलेशिया, जर्मनी, आस्ट्रेलिया

जाय लागल। तरक्कीक गिरफ्तमे एहन फँसल जे आसमान छू लेलक मुदा अपन सन्तान आ परिवार लेल समैये हेरा गेल। विकासक बाबू सभ दिन कहैत रहथि जे शहरमे मानवता मरि जाइत अछि आ ओतय जन्म होइत अछि मानव शरीरमे मेभीन। साँचे विकास आ बहुरिया मेभीन बनि गेल छल। जकरा तरक्कीकेँ भूख सवार रहैत अछि। कतबो तरक्की भेटि जाय तृप्ति नहि भेटैत अछि। हमरा नुनूक यैह भूख सुन्नक' देलक। नोकर-चाकर आ सभ तरहक सुविधाके बीच बेदरा माय-बापक दुलार लेल तरसिक' रहि गेल। बाबा-दादी केर प्रेम जखनि बुझाए लागल त' सजा भुगतै लेल बोर्डिंग स्कूल चलि गेल। नुनूक बालमन कतेक कुण्ठित होइत छल से नहि बहुरिया देखैक प्रयत्न केलक नहि विकास।

नुनूक बाबा जखन परलोक बासी भेलखिन त' नुनू एकदम असगर भ' गेल। ओकर जीवनक खुशी बाबा संगे चलि गेल। हमरा लेल त' विकास शिल्पी अनलक मुदा नुनूकेँ हृदय सून भ' गेल। आ ओ छुट्टीमे घर एनाइ बंद क' देलक। जखन हम भेंट करैक लेल जाइत रहि त' बाबाकेँ याद ओकरा बौक बना दैत छल। कतेक बेर विकास आ बहुरिया भेंट करैक लेल जाइत छल मुदा ओ कोनो बहाना लगा, नहि अबैत छल आ इहो सभ समयक घंटा पकड़ने रहैत छल। लाख प्रयासक बादो एखन तक नुनू आ विकासक रिश्तामे मधुरता नहि आएल।

एक बेर विकास नुनूकेँ बिजनेस कोर्स करैक लेल कहलक त' नुनू कहलक जे बिजनेससँ अहाँ धनक अम्बार लगौने छी हम ओहि धनक ठाँ लगबै लेल डाक्टर बनब ताकि मानवता हमर जीवित रहै। नुनूक ई वक्तव्य हमरा गौरवान्वित केलक। विकासकेँ अपन कएल गलतीक एहसास छल पर समयक पाबंदी ओकरा लेल एहन छल जतएसँ एनाइ सहज नहि छल। ओ एहन मुकाम पर छल जत' ई सभ सोचबाक अवकाश नहि छल...बस ओ दौड़ रहल छल अपन भार्या संगे तरक्कीक पथ पर। जाहि पर भावना नहि पनपैत अछि।

नुनू जतेक दिन रहत ओकरा एहि बेर अपन स्नेहक डोरमे एना बान्हब की सभ क्लेश पड़ा जाएत। जेना लगैत अछि जे राति आइ भोरक बाट रोकिक' ठाढ़ अछि। नुनूक इंतजारमे समय सेहो ठमकल अछि। आकि तखने तुलसी चाहक कप नेने केबाड़ लग ठाढ़ भ' गेल। हम चकित भेलहुँ जे ई अधरतियामे चाह कियैक अनलक। हम किछु बजितहुँ ओहिसँ पहिने तुलसी

अंदर कोठरीमे घुसि पर्दा सभ हटबैत बाजल—'काकी माँ आइ उठबै नहि, सात बाजि गेल।' हम तुलसीक बात सुनि बाहरक मौसम देखि अकचकाक' उठलहुँ की हम सुतलहुँ कहाँ। तुलसी हमर चुटकी लैत बाजल—'काकी माँ अपन नुनूकेँ बाट जोहैत सुतनाइ बिसरि गेलहुँ की?' ओकर एहि बात मुदा जोरसँ हँसलहुँ आ दिनकरक स्वागत एहि हँसी संग केलहुँ।

## 10

गोसांइक पीड़ी निपैत आइ स्मृतिमे बस नुनू अछि। बेदरा केना असगर घर पहुँचत। हम कहलहुँ जे हम अबैत छी दिल्ली तक ई कहि हमरा फुसला देलक जे दूगो बाबा मिल अपन पोताकेँ घरक बाट नहि देखा सकैत अछि। ई आइ-काल्हिक बेदरा सबहक बातो कहाँ जल्दी बुझि पबैत छी, फेर पुछलहुँ त' हँसैत बाजल जे 'एकटा गूगल बाबा आ दोसर हमर अपन बाबाक नाम हमरा घर तक सही सलामत पहुँचा देत। दादी माँ अहाँ चिंता नहि करू। हे गोसांइ-पितर हमरा बच्चाक रक्षा करिहक।' ई कहैत बैसकीसँ उठि पाछाँ मुड़िते छी कि नुनू गोसांइ घरक मोख लग ठाढ़ अपन छटकैत दाँत देखबैत मुस्का रहल अछि। एक बेर त' एना लागल जेना हम जगले सपना रहल छी। हमरा किछु कहैसँ पहिने नुनू गोसांइ घर घुसि सभ देवी देवताकेँ प्रणाम करैत हमरा साटांग प्रणाम केलक। हमरा आँखिसँ खुशीक दू टा मोती टघरि नुनूकेँ ओंठिया केशमे सोनिया गेल। स्वयंकेँ सम्हारैत नुनूकेँ माथ पर हाथ रखैत हम बजलहुँ—'अहाँक नेटवर्क त' बहुत मजबूत अछि। सीधे गोसांइ घर लग पहुँचा देलक।' हमर एहि बात पर तुलसीयो ठहाका मारि हँसैत पानिक गिलास नेने लग आबि गेल आ नुनूकेँ कल जोड़ि सम्मान दैत बाजल—'बहुत दूर से आए हैं पहले नहा लीजिए भैया फिर अपने दादी माँ से बतियाते रहिएगा।'

—'आप तुलसी हो न?'

—'जी!'

—'दादी माँ आपके बारे में बताई कि आप उनकी बेटी जैसी हो, फिर आप तो मेरी बुआ हुई न, तुलसी बुआ!'

नुनू मुँहे तुलसी बुआ संबोधनसँ तुलसी संकोचित भ' गेल आ मुँह

घोघचा हमरा दिस एहि अपेक्षासँ तकलक जे हमरा ई नाम नहि पसंद अछि। फेर हमरा दिस ताकैत बाजल—'नहीं भैया आप मुझे तुलसी ही बोला कीजिए। मुझे अच्छा लगेगा।'

हमहुँ एहि नामक सहमतिमे बजलहुँ जे 'हँ तुलसीये ठीक अछि।'

—'भैया आप तो बहुत अच्छे से हिंदी बोलते हैं।'

—'हाँ अभी कुछ दिनों से सीखा हूँ। अब मैथिली सीखने आई हूँ आप सिखाओगे न!'

—'ऐसे नहीं सिखाऊंगी, बदले में आपको भी मुझे अंग्रेजी सिखानी होगी।'

—'सौदा मंजूर है।'

—'त' अखनेसँ शुरूआत करू। उठू जाउ, नहा-धोय आउ। जलखै तैयार अछि।'

—'मैं कुछ समझा नहीं पर बहुत अच्छा लगा जो भी आप बोले। मैथिली भाषा की मिठास सच में हृदय की गहराई तक पहुँचती है।'

नुनूक ई बात हमरा मोनकेँ कचोटलक। ई हमरे गलती छल जे अपना बच्चाकेँ कहियो गामक भाखा नहि सिखेलहुँ। जखन छोटेमे विकास अंग्रेजी बजैत छल त' हम दुनू प्राणी खुशीसँ गौर्वान्वित होइत रहि जे हमर बेटा अंग्रेजी बजैत अछि। ओकरा संगे हमहुँ सभ घरकेँ अंग्रेजीमे बना देलहुँ। मोन अछि हमरा जखन हमर बाबा स्वर्गवासी भेल रहथिन आ हम तीन सालक विकासकेँ ल' हिनका संगे सिंगापुरसँ गाम आएल रहि तखन एक्के सप्ताहमे विकास किछु मैथिलीक शब्द रटि लेने छल। जखन ई सुनलखिन त' अगले दिन वापस आइब गेलथि। जे कि पन्द्रह दिन रहैक योजना छल। ओहि दिनक बाद हम दुनू प्राणी कहियो विकास लग मैथिली नहि बजलहुँ। आ तकरे परिणाम ई छल जे अपन बेटाकेँ अपन संस्कारमे नहि ढालि सकलहुँ। दिन समय संगे दौड़ैत थकान नहि होइत छल, बल्कि आर ऊर्जावान बनि अपन रफ्तार बढ़बैत रहि। मुदा कहाँ ई भान छल जे ई रफ्तार हमरा बच्चाकेँ अपन माटि पानिसँ, अपन मानव धर्मसँ एतेक दूर ल' जाइत जे ओकरा मेशीन बना दैत। एहि सभ स्मरणमे फेर आँखि डबडबा गेल। नुनू हमरा गला लगबैत स्नान घर दिस विदा भेल आ हम उठि भनसा घर।

उज्जर मेघक दल जे भिन्न-भिन्न आकार बना समुच्चा आसमानमे अपन कलाक प्रदर्शन करैत रहैत अछि, कतेक मनभावन लगैत अछि। ऐना लगैत अछि जेना ओ जीवनक संपूर्ण क्षणक मंचन क' रहल हो। हमहुँ त' एहि मेघक बीच हुनकर आकृति तकैत काव्य-लीला करैत रहैत छी। आ हमर एहन संयोग जे सभबेर मनक अनुरूप आकृति हमरा एहि मेघमे भेटि जायत अछि। जेना ओ पहिले बिन बजले हमर मोनक सभ बात बुझि लैत छलखिन तहिना अखनो भगवानक घरसँ हमरा मोनमे उपजल सभ बातक जबाब मेघक आकृति द्वारा दैत छथि। बस एकटा दुःख अछि जे एकटा आर आकृति जे सदिखन हमरा मोनमे रहैत छल ओकरा अहाँ कियैक धुनियाबैत एलहुँ। जँ आइ ओहि आकृतिक अवहेलना नहि करितहुँ त' दुनियाक कोनो कोनमे रहितहुँ तइयो सपरिवार एक संगे एक्के ठाम बैसि रातुका खेनाइ खइतहुँ। जँ हम अपन सन्तानकेँ सम्बन्धक मान नहि बुझेलहुँ तैं आइ मेघक दलमे सम्बन्धक आकृति हेरैत छी।

—'पूर्णिमा का चांद वास्तव में गांव में ही ज्यादा खूबसूरत दिखता है। शहर में शोर और कोताहल में इसकी खूबसूरती मलीन-सी लगती है। कितना सुकून है यहाँ दादी माँ। जैसे सारा सन्नाटा यहाँ समा गया हो।'

—'हाँ नुनू, यहाँ बादलों के बीच तारों में खुद को विलीन कर मैं बहुत सुखद अनुभव करती हूं। ऐसी दशा में मैं, मैं नहीं रहती, इस प्रकृति का एक हिस्सा बन जाती हूं आर इसी में विचरण करती हुई अपने सारे गम भुला देती हूं। यहीं मुझे तुम्हारे दादा जी से भी बातें करने का सुअवसर मिल जाता है और कब मैं नींद की आगोश में चली जाती हूं मुझे पता ही नहीं चलता पर यकीन मानो बहुत सुकून भरी नींद आती है। सुबह फिर सूरज की लालिमा संग नई शुरुआत करते हुए आगे बढ़ती हूं।'

—'दादी माँ, क्या आपको पापा की याद नहीं आती?'

—'बेटा वह हमारे शरीर का ही एक अंग है भला कोई कैसे अपने अंश को भुला सकता है! वह तो एक पल के लिए भी हमारी स्मृति से अलग नहीं होता। पर परिस्थिति हमें अलग कर देंगी नहीं पता था। मेरा सपना सदैव यही था कि जिंदगी की आखिरी सांस तक हमारा समस्त परिवार साथ हो लेकिन देखो बिल्कुल विपरीत मिला। हमारा परिवार बिखड़ा हुआ है। अब यह सपना हमारे आंखों में यूं ही सजकर मेरे साथ

चला जाएगा क्योंकि इसे पूरा करने का समय कब का बीत चुका।'

—'दादी माँ, क्या पापा आपसे मिलने नहीं आएंगे या यूं ही पैसों से हर रिश्तो की डोर बांधेंगे। माना पैसों का अंबार है उनके पास पर इस धरती पर कोई भी इंसान भूखा नहीं सोता। दिन भर मेहनत कर अपनी रात की रोटी जुटा ही लेता है। इंसान का मन पैसों से नहीं प्रेम से जीता जाता है, समर्पण से जीता जाता है इतनी-सी बात क्यों नहीं उन्हें और मम्मा को समझ आती। पापा का मैसेज आया था कह रहे थे कि पैसे आपके और मेरे अकाउंट में भेज दिया है और जरूरत हो तो बताएं। मैं कई बार पैसे लेने से इंकार कर चुका हूं फिर भी वह मुझे पैसे से अपना बनाना चाहते हैं। मैं अब खुद का निर्वाह करने में सक्षम हूं उन्होंने जो मुझे डॉक्टर बनाने में पैसे खर्च किए मैं समय आने पर उनका सारा पैसा लौटा दूंगा और पैसों के इस रिश्ते से सदा के लिए मुक्त हो जाऊंगा।'

—'नुनू यह क्या कह रहे हो बेटा, वह तुम्हारे पिता है!'

—'नहीं दादी माँ, वो हमारे आपूर्ति पूरा करने वाले दाता हैं। बस इतना ही संबंध है मेरा उनसे। उनके द्वारा मेरे उपर किए एहसान को मैं कर्ज़ की तरह महसूस करता हूं, हर पल हर क्षण।'

—'नहीं बेटा नफरत की आग तुम्हें जो जलाकर खाक कर रही है जिसमें तूने रिश्तों की मर्यादा और अपने दादा जी के संस्कार सभी को जला दिया। बुझा दो इस चिंगारी को जो आग-सी तुम्हारे दिल में सुलग रही है वह सिर्फ तकलीफ देगी और कुछ नहीं।'

नुनूक मोनक एहि खटासकेँ कोना मिसरी बनाउ? एकर ई नफरत समयक संगे और बढ़ैत जा रहल अछि। कहुना विकास आ बहुरियो किछु दिन लेल गाम अबितै त' एकटा अंतिम प्रयास जरूर करितहुँ। अपन छिड़िआयल मालाकेँ स्नेहक डोरसँ गुँथि लीतहुँ।

## 11

हम कजरीकेँ मातृक अपन सम्बन्धिक ओहिठाम विवाहक नोत पूरै लेल गेल रहि। साँझमे सभ धी-बउआसिन गाछी कलम घुमैक विचारसँ निकललहुँ। जखन आमक कलम बाद बसबिट्टी लग गेलहुँ त' एकटा बेदरा

हमर हाथ घींचि कहलक—'दाइ ओमहर नहि जाउ। ओमहर कजरीकेँ जरेने छै, कहि हमरा पाछू घींचि लेलक।'

कजरी माटिमे विलीन भ' गेल। ओकर चिताक छाउर माटि भ' गेल आ बरखाक पानि संगे गामे-गाम बहैत धारक छातीमे सोनिआइत चलि गेल।

आब ओहि ठाम उगि गेल झमठगर कास, जे पत्ती सन तेज अपन सीकसँ ओहि भूभागक पहरेदारी करैत अछि। ओ दू हाथक जमीन जे कहि रहल छल एकरा लग अबैसँ पहिने तोरा हमर एहि सीकनुमा तलवारसँ लड़ै पड़तौ। तों निश्चिंत रह। एहि लड़ाइमे खूनक टघार तोरे खसतौ जे तोरा तोहर दोखक स्मरण करेतौ।

जाहि प्रकृतिमे कजरी विलीन भेल ओहि प्रकृतिकेँ एकरासँ ई प्रेम देखि हमरा अपनासँ घृणा हुए लागल।

कियैक त' हम प्रेमक एतेक नोर ढारै छी मुदा अखन तक किछु नहि क' सकलहुँ। अकर कल्ला पर चड़हल हाथ निधोक अखन तक ताली पिटै। आइ कजरीक सारा पर उगल ई कास हमरा झकझोड़ि रहल छल। लहराति ई कहि रहल अछि जँ तोहर नोर पानि छलौ जे बीतैत समयक संगे सूखि गेलौ। आब फेर जमा कर ई नोर जकरा दोसर कजरीकेँ मौगैत पर ढबकाबिहनि।

भरि राति कजरीक सारा पर उगल कास, हमरा नहि सुतए देलक। कजरीक स्मृति बेर-बेर सोंझा ठाढ़ भ' जाय छल आ पुछए लगै छल जे विधना कियैक बेटीकेँ बनौलथि? हम उत्तर दैत छी सुन्दर समाजक निर्माण लेल। ओ हमर उत्तर सुनि ठहाका मारि बिला जाइत छथि। अकचका उठलहुँ त' रातिक सन्नाटा हमरा फेरसँ नींद नहि पड़ए देलक आ ओहि कासक भयसँ हम फेर आँखि नहि मूनि सकलहुँ। तकर जबाब हमरा लग नहि छल।

होइत भिनसर हम अस्वस्थाक बहानाक' आ नुनूक लाट लगा ओतयसँ विदा भेलहुँ। घर पहुँचि किछु काल आरामक पश्चात् कजरी मायसँ भेंट करैक उद्देश्यसँ भड़ल दुपहरियामे ओकरा अँगना गेलहुँ। धनसाहि बाली भनसा घरक ओसारा पर गाल पर हाथ राखि बेसोह एकटक देबालकेँ निहारैत छल। हमर पदचापसँ ओ अन्जान छली। हम ओकरा कन्हा पर हाथ राखि किछु बजकि प्रयत्न केलहुँ पर ओतुका परिस्थिति कंठ सुखा देलक।

हमर आवाज ओतुका परिस्थितिमे विलीन भ' गेल। नहि जानी कत'सँ नोरक एकटा ठोप ओकरा कन्हा पर खसि परल आ धनसाहि बाली केर चेतना घुरि आएल। हमरा निहारैत ओकर नोरसँ फुलल आँखि निःशब्द क' देलक। ओ उठि पटरा खसबैत हमरा बैसै लेल हाथ पकड़ि आग्रह केलथि। हम सहजे ओहि पटरा पर बैसि ओकरो बैसै लेल कहलहुँ। हम दुनू बहुत काल धरि चुप रहलहुँ, फेर हमहीं हिम्मत जुटा बजलहुँ जे कियैक एना बताह बनल छी। केना ई सभ भेल से हमरा सच-सच कहू। हम अहाँक संगे छी। के छल ओ, की आबो अपन चुप्पी नहि तोड़ब? धनसाहि बाली हमरा दिस तकैत बाजल—'की ई चुप्पी तोड़ैसँ घुरि एतै हमर बेटी? हमरा जियैक मात्र एकटा सहारा छल सेहो समाजक व्यवस्थाक बलि चढ़ि गेल। आब ककरा लेल जीयब! हमरा पूरा गाम बारने अछि। तकर हमरा मलाल नहि। जखन अपने छाती पर छुरी चलेलक त' पड़ोसीक कोन दोख! आइ हमरा संगे हमर घरबाला नहि अछि तैं हम गामक रंडी छी आ चुप छी त' अपने बेटीक हत्यारिन। जँ हिनको यैह कहब छनि त' हँ, हम मारलहुँ अपन सोनाकेँ। छी हम ओकर दोखी। हँ हमरे अकर्मण्यता हमर बेटीकेँ मारलक। हमर चुप्पी हमर बेटीकेँ मारलक। ई केस करथिन नहि हमरा पर, करौथ आब हमहुँ थाकि गेलहुँ। हमरो लटका दैथि वैह फँसरि पर जाहि पर हमर सुगनी झूलि गेल।'

ई कहैत धनसाहि बाली अपन कपार देबाल पर पिटै लागल। हम ओकरा पकड़ि झमारैत बजलहुँ—'फेर कियैक नहि अहाँ केस केलहुँ? पुलिस ताकत दोखीकेँ। ढाढ़सँ करै छी अहाँ। अहाँकेँ बेटीक मृत्युक कोनो दुःख नहि अछि।'

हमर एहि बात पर ओ तमतमाएल हमरा दिस तकैत बहुत लाचार लागल जेना कोनो बहुत बड़का रहस्यक बीच ओ ओझरायल अछि।

आ ओ जेना सभ किछु कह' चाहैत अछि। नोर पोछैत ओ गहन चिंतामे डूबि किछु काल मौनक बाद बाजल—

'दाइ हमर गलतीक सजा हमरा बेटीकेँ भेटल। नारी देहक भोगी कहाँ कोनो रिश्ताक मर्यादा बुझैत अछि। भरि दिन जे अपन सहोदर बनि पजरा सटि बैसैत अछि वैह होइत राति भुखाएल गीदड़ जकाँ ओहि देहकेँ तखन तक नोचैत रहैत अछि जखन तक ओकर भूख शांत नहि

होइत। रिश्ताक मर्यादा सभ राति मसलल जाइत अछि। हमर कजरियो ओहि अनहरियाक शिकार भ' गेल।' ई कहैत-कहैत धनसाहि बाली बेसोह कनेए लागल।

ओकर ई रूदन कहि रहल छल जे साँचे विधना बेटी बना जुलूम केलथि। ओकर एहि शब्दमे सच्चाइ छल। नारी बाहरसँ बेसी अपने घरमे शोषीत होइत अछि। हम ओकरा कन्हा पर हाथ राखि बजलहुँ—

'कनियाँ, कहिया तक एहि राक्षसक शिकार होएत रहब? ओकर नाम कहू, ककरासँ डरै छी? आब समय बदलि गेल। हमरा देशमे कानून अछि जे ओकरा सजा देत। कहू के छल ओ?'

तखने दरबाजा परसँ लाठी ठकठकबैत कजरीक बाबा अँगनामे ठाढ़ भ' बजलथि जे 'अहाँ यैह सभ करै लेल गाम एलहुँ। एहन नामी-गामीक बेटी-पुतहु आ दोसरक घरमे आगि लगबै छी? हमर ई परिवारिक मामला छी। अहाँकेँ होइत छी बजै बाली। खबरदार जे हमरा परिवार पर आँगुर उठायब। अपने हमरा अँगनासँ चलि जाउ।'

हम एहि बातसँ बहुत आहत भेलहुँ। सुखायल कंठकेँ अपन थूकसँ बेर-बेर भिजबैत रहलहुँ मुदा किछु बाजि नहि पौलहुँ। आब ओत' ठाढ़ नहि रहल गेल आ उल्टे पैर घुरि एलहुँ। घर आबि अपने गाल अपने चोटियाबैत भूइयांमे थबकिक' बैस गेलहुँ।

ओ राति आर भयावह बीतल। जेना लगैत छल कोय बरछीसँ करेज घींचि लेलक। आइ गामक सभ जनसँ अपनत्व रूसल छल। हम भीड़मे असगर जंजीरसँ बान्हल ठाढ़ रही। आँखिक पलक बिन थकल अपन कर्तव्यक प्रति जागृत छल। दिमाग अनेको सवालसँ ओझरायल, एहि बीच नींद लेल समय कहाँ छल।

नुनूक सेहो राति बेचैनीमे कटैत अछि। पुछला पर कहैत अछि

—'हमरा विद्यार्थी जीवनसँ रातिमे जगबाक हिसक अछि। आइ कोइ सुतल छल त' ओ तुलसी छल जे अपन हर परेशानीसँ इतर सुकूनक नींद ल' रहल छल। ओ अतीतसँ निकलि वर्तमानमे खुश रहैक हुनर सीख गेल छल आ सदिखन तनाव मुक्त रहैत छल।'

होइत भोर बउआसिन दौड़ल आएल—

'काकी यै काकी, यै धनसाहि बाली राति माहुर खा मरि गेलै।

बेटीक दुःख नहि सहि सकलै बेचारी।'

कि तखने गामवाली मैंयाँ ओकरे पीठ पर हमरा लग अबैत बजलखिन—'ठीक भेल न आब भरि गामक सौतिन चलि गेल आइ दुनियाँसँ।'

हम मैंयाँकेँ बात पर जवाब दैत कहलहुँ—'हँ मैंयाँ! गामक उद्धार भेल कि धनसाहि बालीकेँ, एकर सही फैसला भगवाने करथि। एहि देहसँ मुक्त भ' धनसाहि बाली आइ स्वच्छ भेल। धनसाहि बाली जेना गामक बोझ छल। कोइ ओकरा लेल आह नहि केलक। ओ मरि त' ओही दिन गेल छल जै दिन एहि समाजमे बियाहल गेल। बाप सन ससुर, भाइ सन भैंसुर सभ ओकर गोर चमरीकेँ कुकुर जकाँ चटलक। जै दिन ई बात ओकरा घरबलाकेँ पता चलल ओहि दिन सभ किछु तियागि परदेशी भ' गेल आ ओतै अपन दोसर जिनगी शुरू केलक। लोक धनसाहि बालीकेँ रंडी कहै छलै। मुदा कोई ओ अन्हरा बुढ़बाकेँ किछु नहि कहलकै। कनियाँ समाजक खेल देख आब त' मोन होइत अछि जे भगवानसँ माँगी जे हे भगवान सभ बेटी-पुतौहकेँ बाँझे क' दहक। नहि कोइख रहतै आ नहि ओहि कोइखसँ बेटी जनमत न बहशी बेटा।'

कहैत मैंयाँकेँ आँखिसँ नोर बहय लागल। मैंयाँक बात हमरा सुन्न क' देलक। जे एतेक दुखित मानसिकतासँ ग्रसित हमर समाज अछि। आ एहि समाजक महिला अपन लूटल इज्जतकेँ फटल मोचरल चुन्नीसँ झाँपि चुप रहैक घुट्टी पिबैत अछि।

## 12

सात दिनसँ दिन-राति बदरा अपन पूरा चरम पर अछि। सावनक पहिल फुहार संगे बरखा एहि धरा पर एहन रमल जे जरैत जीव-जंतु सभकेँ फेरोसँ हरियर डगडग क' देलक। चहुँओर हरियाली मोनकेँ अच्छादित क' दैत अछि। गाममे बरखाक बाद सभ किसानक चेहरा पर खुशी सहजे देखल जा सकैत अछि। सभ एहि बरखाकेँ भगवान द्वारा बरसायल अपन कर्मक फलक प्राप्ति मानि हर-बरद संगे अपन खेत जोतै लेल विदा होइत अछि।

जखनि सिंगापुरमे रही त' दू दिनक लगातार बरखासँ लोग, सड़क,

नाला सभ परेशान भ' जाइत छल। शहरमे एक आदमी पर कम-सँ-कम चारि-पाँच जोड़ा कपड़ा पहिरै लेल होएत अछि तइयो ओकर एक दिनक कपड़ा नहि सुखायल त' ओ परेशान भ' भरि दिन इंद्रदेवकेँ कोसैत रहैत अछि, मुदा गाममे एक जोड़ी कपड़ा सेहो तीतल आ ओकरे पहिर सभ संतुष्ट रहैत अछि। कतेक सौम्य जीवन अछि एतय।

नुनूकेँ गाम एला मास लागल जा रहल। ओ त' गाममे पूरा रीत गेल। बुच्चन बाबू संगे गामक आ पंचायतक हालक आकलन करैत रहैत अछि। कतेक अपनापन लगैत अछि एखनि एहि जिनगीसँ, से शब्दमे नहि बान्हि पाबि। जखन असगर छलहुँ त' बस साँस लैत रही आ मोनमे ई छल जे जा धरि साँस अछि ताधरि अपन समाजक लेल किछु नीक करी। मुदा जिनगीसँ कोनो मोह नहि छल। आइ मास भरिसँ फेर जीबाक एकटा लौ प्रस्फुटित भेल। नुनूक प्रेम-स्नेह हमरा जीवनक प्रति मोह जागृत क' देलक। हम बुझैत छी जे नुनू कखनो सोझाँमे ठाढ़ भ' कहत जे दादी माँ हम वापस जा रहल छी सिंगापुर। मुदा फेर नहि जानि कियैक जखनि आँखि लगैत अछि त' अपन परपोता संगे एहि अँगनामे खेलाय लगैत छी।

—'दीदी, ई कागज-पतरी हम नहि बुझै छी देखथुन न बउआ कोठरीसँ एतेक बहरेलै कोनो काजोक छै? बहुआसीनक बात पर हड़बड़ाकेँ ओछाइन परसँ उठि ओहि कागजक ढेरी लग बैस गेलहुँ की नजरि गेल एकटा फार्म पर जे पटना मेडिकल कालेजमे एमडी करै लेल अप्लाइ नुनू केने छल। हम ओहि कागजकेँ उठा, सभ कागज फेकै लेल बहुआसीनकेँ कहि देलहुँ। ई दाखिलाक फार्म हमरा खुशीसँ बेसी चिंतित केलक।'

तखने दरबाजा पर चौकीदार संगे तीन-चारि आर अपरिचित आवाज एकेँ संगे हाक दियए लागल। हुनका सबहक आवाजक हड़बड़ाहट किछु अमंगलक शंका उत्पन्न केलक। एहि संशय संगे दुआर पर पहुँचलहुँ त' देखाइत छी जे एकटा तीन सालक बच्चा चौकीदारक कोरामे कनैत मुँहसँ लेर करैत सापुट नहि ल' रहल। हमरा देखैत चौकीदार कहैत अछि—'काकी, डागडर बउआकेँ बजा दिअ। पूरा गाम उधिआइत बाढ़िक पानिसँ जलमग्न छै। कत' ल' जेबै एकरा, एक टका घोंटि लेलकै कंठमे फँसल छै।'

हम किछु बजितहुँ कि हमरा पीठ पर नुनूकेँ अबैत देख बेदराकेँ

माय आ चौकीदारक बहिन कनैत हाथ जोड़ी नुनूकेँ कहलथि 'डागडर बाबू हमरा नुनूकेँ बचा लिअ।'

नुनू बेदराक स्थिति देखि तुलसीकेँ हाँक पाड़ैत भीड़ हटबैत बच्चा लग पहुँचल। तुलसी आवाज संगे नुनू सोझाँ ठाढ़ भ' गेल। नुनू ओकरा पानि संगे अपन डॉक्टरक अटैची आनए लेल कहलक। तुलसी सभटा नेने आएल। सभ मूकदर्शक बनल छल। तुलसी नुनूक सहयोगी बनि धैर्यपूर्वक ओकर संग द' रहल छल। सबहक डरसँ हलप सुखि रहल छल जे बिना कोनो साधनक केना उपचार कएल जाएत? सभ भगवान पर छोड़ि देने रहि।

नुनू बेदराकेँ नाकमे डाक्टरी पाइप घुसौलक आ ताहिमे सिरींचसँ पानिक प्रेशर दैत रहल। एक-दू बेरक बाद बच्चा खोंखियाइत उल्टी संगे सिक्का बाहर निकाललक। सिक्का संगे सबहक खुशी घुरि आएल। आ सभ नुनूकेँ आशीष दिअ लागल। चौकीदार हाथ जोड़ि कहलक जे आइ अहाँ हमरा कलंक लगैसँ बचा लेलहुँ डागडर बाबू। हमरा लेल अहाँ भगवान छी। हमारा जानमे जान आएल। एतबे कालमे भगवानकेँ कतेक कबूला क' चुकल छलहुँ। भगवान-भगवान करैत रही जे हे भगवान हमरा नुनू हाथे जश लगा देब आ भगवान हमर प्राथर्ना सुनि लेलखिन। अपन बेदराकेँ होशियारी आँखि नोरा देलक। सबहक घर वापसीक बाद हम नुनूकेँ हाथ पकड़ि बैसकी कोठरीमे कुर्सी पर बैसबैत पुछलहुँ जे 'अहाँ वापस सिंगापुर कहिया जाएब?' नुनू सीधा एक्केँ शब्दमे उत्तर दैत बाजल—'कहियो नहि।' हम फेर पुछलहुँ से कियैक? नुनू हमरा कोरामे अपन माथ रखैत बाजल—'हम आगुक पढाइ पटनासँ करब। आब फेर हम अपन देश छोड़ि परदेशी नहि बनब दादी माँ।' नुनूक ई बात हमरा घोर चिंतामे द' देलक। हम अपना कोरामे नुनूकेँ राखल माथ पर हाथ फेरैत विकास आ बहुरियाक यादमे हरा गेलहुँ।

## 13

जकर भय छल सैह भेल विकासक तामस आसमान पर छल। नुनू रातिक छिटकैत इजोरियामे अपन मोनक सभटा बात साफ-साफ विकासकेँ कहैत बाजल जे 'हम जाहि उद्देश्यसँ डागडरीक पढ़ाइ केलहुँ ओहि उद्देश्यक पूर्ति अपन माटिक संगे अपने समाजमे भ' सकैत अछि। शहरक चकाचौंधमे

हम पैसा छापक मशीन जरूर बनि जायब मुदा भगवानक अवतार नहि। आब हम एतय रहि पटना मेडिकल कालेजसँ आगू केर पढ़ाइ करब।' विकास बुझै छल जे नुनू एक बेर जे फैसला क' लेलक त' ओहि पर अडिग रहत। ओकर फैसला संगे हँ कहनाइ उचित बुझैत ओ कहलक जे ठीक अछि अहाँ एडमिशन लिअ, हम अखने अहाँक एकांउटमे पाइ पठबैत छी। विकास हँ त' कहि देलक मुदा ओकरा मोनमे हजारो सवाल उथल-पुथल मचब' लागल। ओ हमरा त' किछु नहि कहलक मुदा बहुरियाकेँ कहने बिनु नहि रहल। आ उचितो छल माँ हेबाक कारण ओ एकर अधिकारी छल।

दोसर राति बहुरिया फोन केलक आ अपन बातक शूलसँ हमर पूरा देहकेँ गोबैत रहल। ओ दरद एहन छल जाहिमे हम चिचियाक' कानि नहि सकलहुँ मुदा टीस असहनीय छल। जे माय अपन परिवार आ संतानक कल्याणार्थ चौदहो देवान ढाहैत अछि ओ माय कोना अपन क्षणिक सुख लेल अपने संतानक खिलखिलाइत जिनगी उजारत। बहुरिया हमरा जखन घरडाही कहलक तखने हमर ओहि अग्निमे लटपटा प्राण कियैक नहि छुटल। अपन बुढ़ारीक सहारा ल' हम नुनू पर जादू-टोना क' ओकरा अपन माय-बाबूसँ छीन अपने लग बसा लेलहुँ, एहन आरोपसँ देह झनझना उठल। हम अपन बुढ़ारीक सहारा लेल नुनूक भविय बर्बाद केलहुँ। एहि तरहक कतेको बातसँ बहुरिया हमरा बेइज्जत करैत रहल आ हम कान पाइथ ओकर सभ बात सुनैत रहलहुँ। एक बेर त' मोन भेल जे कहि जे अँहीकेँ जिम्मेवारी अहाँकेँ पुत्र निभा रहल अछि त' एना उड़कुसी कियैक लागल। जै बुढ़ारीमे थरथराइत हाथ अपन परिवारक सहारा होथरैत अछि ओहि बुढ़ारीमे हमरा अपन परिवारक दर्शनो मुश्किल अछि। की कही, ककरासँ कही, नोर पीबि संतोष करैत छी। आइ धरि बस पाइसँ रिश्ता निबहैत आएल। कहियो अपना हाथे एक गिलास पानियो पियाबितै। ताहि लेल आधा दर्जन नोकर आगाँ-पाछाँ भीड़ बनौने रहैत छल। मुदा एखनि ई समय उचित नहि एहि बातक बखान लेल। बेर-बेर बहुरियाक स्वार्थी शब्द हमरा झमारैत छल जे केहन आरोप एहि बुढ़ारीमे लागि गेल। शायद सच अछि जे हमरे दुलार नुनूकेँ पैर बान्हि देलक। एहि माटिसँ केहन सिनेह भ' गेल जे सदिखन एहिमे रहै लेल आतुर अछि। आइ ई छिटकैत इजोरियामे उमस बेसी अछि, जेना देहसँ खौंत फेकैत अछि। जखन मोनेमे खौंती लागल होइ

त' देहमे स्वतः स्वभाविक अछि।

अपन परिवारकेँ समटैत-समटैत बूढ़ भ' गेलहुँ। एहि पाकल आमक कोन भरोस कखन टुटि जाएब। अपन पूरा परिवारकेँ एक्कैँ छतक निचाँ हँसैत-बजैत देखितहुँ त' बुझितहुँ जे स्वर्ग भेटि गेल। मुदा ई सेहन्ता लगले जाएत।

## 14

अधरतिया तक काकी कोठाकेँ सभ कोन पर कुर्सी घिसियबैत रहली। जकर आवाजसँ निचाँ कोठरीमे ओछौन पर ओंघराएल तुलसी करोट बदलैत रहल। जेना तुलसीकेँ ओहि आवाजसँ छुलछुली भेल होइ। ओ क्षणे-क्षण लघुशंका लेल दौड़ैत रहल। एक बेर काकी उठि झटकिक' दलान दिस मुँह क' जखनि बैसै लगली कि हुनका कुर्सी पर बैसले नहि भेल आ पूरा आकाश माथक उपर नाच करै लागल। काकी अर्राक' कुर्सी नेने धड़ामसँ खसली। आवाज सुनि, तुलसी धरफराइत उठैत, सभ ठाम इजोत करैत काकी माँ, काकी माँ, हाक दैत सीधे काकी लग कोठा पर पहुँचि गेल। जतय काकी टुटलाहा कुर्सीक नीचाँ बेसुध पड़ल छल। काकीकेँ हाथ टूटल कुर्सीमे बहुत चिरा गेल जाहिसँ खूनक टघार लगि गेल। तुलसी काकीकेँ एहन हालत देख बाप-बाप चिचिया उठल आ काकीकेँ हसौंथि-पसौंथि उठबैक कोशिशमे लागि गेल। मुदा लहसगर काकी तुलसीसँ टस-मस नहि भेल। तुलसी काकीकेँ छोड़ि आदर्शकेँ बजबै लेल निछोह दौड़ैत 'डागडर भइया, डागडर भइया' कहैत दलानमे सूतल आदर्शकेँ हिलब' लागल। आदर्श अकचका उठल। ताधरि तुलसीकेँ जेना वाक हरण भ' गेल छल। सुखल कंठ ओकरा बाजै नहि दैत छल, ओ आंव-आंव करैत आदर्शकेँ खींचने कोठा पर ल' गेल जतए काकी अखनो बेहोश पड़ल छल। धमाचौकड़ी सुनि दोसर कोठा पर सटले सूतल बुचन बाबू, पाँच इंच चारि फीटक देबालकेँ छड़पैत काकीकेँ कोठा पर पहुँच गेल आ काकीकेँ हालत देख चकित भ' गेल। चच्चा-भतीजा मिलि कोहुनाक' काकीकेँ निचाँ उतारलक। आदर्श काकीकेँ प्राथमिक उपचार केलक आ बुचन बाबू गाड़ी आनि दरबजा पर ठाढ़ क' देलक। आस-पड़ोससँ दरबाजा भरि गेल। सभ कोइ अपना नीन्दक परवाह केने बिना आदर्श संगे ओकरा बोल-भरोस दियै

लागल। एखनि आदर्शकेँ एहि हिम्मतक खगता छल। सबहक दुआ आदर्शकेँ बल देलक आ ओ बिनु विचलित भेने काकीकेँ स्लाइन लगा किछु जरूरी दवाइ दैत पटना लेल विदा भेल। काकीक बेहोशी काफी चिंताक विषय छल।

काकीकेँ हालति देख हुनका सीधे आई.सी.यू.मे भर्ती कराओल गेल। ओतए जाँचमे पता लागल जे हुनका दिलक दौड़ा पड़ल छल। संगहि माथ पर गंभीर चोटसँ ओ कोमामे चलि गेलखिन। एहन घोर नीन्दमे सूति रहलखिन जेना कतेक सालक थाकल अपन नीन्द पूरा क' रहल होइ।

तुलसीकेँ दुनू आँखि गंगा-जमुना बनि अनवरत बहि रहल छल। काकी संगे ओकर रिश्ता बिना कोनो सूत्रसँ बनहल एतेक मजबूत छल जे सभ रिश्ताकेँ पाछू छोड़ि देने छल। तुलसीक नव जीवनक आधार काकीए छलथि। तुलसी हिम्मतक' अपन बहैत नोर पोछि आदर्शकेँ कन्हा पर हाथ रखैत अपन ओंगरी पर जोर दैत आदर्शकेँ डबडबाएल आँखिमे देखि बाजल—'डागडर भइया, एखनि एहि नोरक नहि अहाँक हिम्मतक खगता अछि।' ओ आदर्शक गाल पर टघरल नोरकेँ अपन हाथसँ पोछैत फेर बाजल—'भइया, अहूँ त' डागडर छी। जाउ नहि भीतर काकी माँ लग बैसब।' तुलसीकेँ बात पर आदर्श बाजल—'ई कोना होएत हम...'

तुलसी आदर्शक बात बिच्चेमे रोकैत बाजल अहाँ एकटा समर्थ डागडर छी। अहाँ जाउ आ अस्पतालक उच्च अधिकारीसँ बातक' काकी माँ संगे आइसीयूमे रहबाक अनुमति लिअ।

तुलसीक बात पर आदर्श चुप रहल। फेर किछु काल बाद अपन मुँह होंसतथि उठल जेना ओकरा कोनो नव बाट देखाएल होय। ओ किछु बजने बिना ओतयसँ उठि अस्पतालक उच्च पदाधिकारीसँ बात करैक प्रयत्नमे लागि गेल।

संयोगवश ओतय आदर्शक भेंट डी.एम अरुणसँ भेल जे काकीक सहेलीक छोट भाइ छल। अरुण जीकेँ मित्र एहि हॉस्पिटलक मालिक छल। आदर्श आ अरुण जीकेँ भेंट किछु दिन पहिने काकी संगे ब्लाक पर भेल छल। दुनू एक दोसरासँ बहुत प्रभावित भेल छलथि। आदर्शकेँ परेशान देखि अरुण जी हुनका लग आबि कन्हा पर हाथ राखैत बाजला—'तुम यहां! सभ ठीक है न?'

अरुण जीकेँ देख आदर्शकेँ उम्मीदक एकटा लौ देखाएल। ओ अरुण जीकेँ गोड़ लगैत बाजल—'नहीं अंकल, दादी माँ की हालत बहुत खराब है। उन्हें दिल का दौरा पड़ा है, और सिर में गंभीर चोट भी आई है। रात छत पर बैठे-बैठे कुर्सी से गिर गई थीं। अभी कोमा में हैं। अंकल यहां तो कोई बात तक करने को तैयार नहीं है आर ना ही डॉक्टर कुछ कहते हैं। अंकल क्या आप यहां किसी को जानते हैं तो मुझे आईसीयू के अंदर दादी माँ के पास जाने की अनुमति दिला दीजिए। मैंने अपनी एमबीबीएस की पढ़ाई आर ट्रेनिंग पूरी कर ली है। मैं दादी माँ की देखभाल करने में समर्थ हूं।'

ओहि ठाम बुच्चन बाबू सेहो आबि गेला। ओ अरुण जीकेँ नमस्कार करैत आदर्शकेँ कहलक—'नुनू विकास भैयाक फोन नंबर दिअ। हुनका फोन क' क' कहै छियनि जे एयर एम्बुलेंससँ काकीकेँ सिंगापुर शिफ्ट करेथिन। पाइयक कोनो कमी छै जे हम सभ हाथ जोड़ि भगवान-भगवान जपैत रही। पाइ एहि बेर-कुबेर लेल होइत छै। तू हमरा नंबर दे हम बात करैत छी।'

—'एखन एना नहि हड़बड़ाउ चच्चा। एक दिन आर रुकू। हालतिमे सुधार भ' रहल छै। इलाजक प्रोसेस यैह छियै, कत्तौ एहि प्रोसेससँ इलाज हेतैक।' बुच्चन बाबूकेँ प्रतिउत्तर दैत आदर्श बाजल।

ओतय संगे ठाढ़ अरुण जी आदर्शकेँ अपना संगे अबै लेल कहलक। ओ ओकरा ओहि अस्पतालक मीटिंग हॉलमे ल' गेल। अरुण जी अपन मित्र आ अस्पतालक मालिकसँ भेंट करै लेल आएल छला। ओहि हॉलमे जा अरुण जी एकटा सज्जन दिस इशारा करैत बाजला—'आदर्श यें हैं इस हॉस्पिटल के मालिक और मेरे प्रिय मित्र।' आदर्श हुनका हाथ जोड़ि बाजल—'सर मेरी दादी माँ आपके हॉस्पिटल में वेंटिलेशन पर है प्लीज मुझे उनके साथ रहने की अनुमति दें। मैंने सिंगापुर मेडिकल कॉलेज से अपनी एमबीबीएस की पढ़ाई तथा दो साल की ट्रेनिंग अभी पूरा किया है।'

आदर्शक बात खत्म होएत अरुण जी बाजला—'बिंदेश्वर, आदर्श मेरे परिवार का सदस्य जैसा ही है।'

—'पर यार यह तो हॉस्पिटल के नियम के खिलाफ है। माफ करना हम ऐसा नहीं कर सकते। ऐसे किसी को भी भावनाओं में आकर आईसीयू में नहीं भेज सकते। वहीं और दूसरे क्रिटिकल मरीज होते हैं आपको हमारे डॉक्टर पर विश्वास रखना पड़ेगा।'

—'अच्छा यार तुम एक डॉक्टर को तो भेज सकते हो ना अभी से इसे नौकरी पर रख लो फिर तो कोई नियम नहीं टूटेगा।'

—'तो फिर इसे भी नौकरी की तरह ही काम करना पड़ेगा। ताकि किसी को पता ना चले कि मैंने इसे अपनी दादी के लिए रखा है। अगर किसी डॉक्टर को यह पता चला तो उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचेगा। क्योंकि सभी डॉक्टर अपनी पूरी निष्ठा से काम करते हैं।'

—'सर जब तक दादी माँ ठीक नहीं हो जाती तब तक मुझे नौकरी पर ही रख लीजिए और विश्वास कीजिए मैं भी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से इस दायित्व का निर्वाह करूंगा।'

आदर्श तखनेसँ डागडरिक पोशाक पहिरि आइसीयूमे अपन कमान सम्हारि लेलक। आब तुलसीकेँ भरोस भ' गेल जे काकी माँ जल्दीए जागि जेती।

## 15

काकीक कोमाक बात जखनि विकासकेँ पता चलल त' एना लागल जेना ओकर सभ किछु हेरा गेल। अपन व्यस्त जीवनमे ओ सभसँ बेसी प्रेम मायसँ करैत छल। माय-संतानक प्रेम एहन होइत छै जे मनुखक अवस्था चाहे कतबो होउ, मायक कोराक बाट सदिखन मन हेरैत रहैत छै। विकास आइ सोचि रहल छल जे कतेक दिन बीति गेल मायक लग बैसला। अपन काज निपटाबैक चक्करमे माय लग बैसबाक रहि जाइत छल। विकास भगवानसँ गोहारि लगबैत बाजल—'भगवान माय बिन हम अखनो टुअर भ' जाएब। हमरा हमर माय घुरा दिअ।'

विकास सिम्मीकेँ मायक हालत जखनि कहलक त' ओहो निःशब्द भ' गेल। सिम्मीकेँ तुरन्त अपन कहल बात लेल अपनेसँ घृणा हुए लागल। ओ एहि घटना लेल स्वयं केर दोखी मानए लगली। मुदा विकासक डरसँ ओ एहि बातक चर्चा नहि केलक। मोने-मोन स्वयंकेँ कोसैत रहल। सिम्मी दुनू हाथे ढबकैत अपन नोरीए पोछि विकासक हाथमे अपन आंगुर फँसा ओकरा कसकसाकेँ दबैत बाजल— चलु माय लग एहिसँ पहिने कि किछु अनर्थ भ' जाए। अजुके फ्लाइटसँ हमरा सभकेँ निकलबाक चाही। विकास

डबडबाएल आँखिसँ सिम्मी दिस तकलक। सिम्मीसँ विकासकेँ एहि तरहक बातक अपेक्षा छल। ओ हाथकेँ कसकसाबैत ओकर बातक समर्थनक संकेत दैत बाजल हम एखने फ्लाइटक टिकट बुक करै छी अहाँ सभ मिटिंग कैंसिल करू।

विकास ठीक एकैस बरख बाद अपन देश आएल छल। एहिसँ पहिने ओ अपन बाबूजी संगे बरख दू बरख पर अबैत रहैत छल। मुदा बाबूजीकेँ गेलाक बाद ओ कहियो गामक नाम नहि लेलक। गामक सभ खेती-बारी बुचन बाबू पर छोड़ि देलखिन्ह। वैह गाम आ गामक बाहर 2500 बिगहा खेत जोति गामक मुँहपुरुख बनल छल। किछु मनखपक पाए बरख दू बरख पर काकी लग पठा दैत छल। सिम्मी एक बेर बिजनेसक सिलसिलामे बंगलुरू आएल छल। ओकर बाद फेर कहियो नहि आएल। ओना सिम्मीक ननिहाल पटने अछि। मुदा हुनकर नाना-नानीकेँ मृत्युक बाद दूटा चौकीदार दिन-राति घरक रखबारी करैत अछि। मलेशियामे रहि रहल ओकर माम कहियो घुरियौकेँ नहि अबैत अछि। सिम्मीकेँ नानी घरमे चारि दिनसँ मरल पड़ल छल कोय देखनिहरो नहि। मुदा आब ढनढनाइत एहि घरमे दू टा चौकीदार अछि। आजुक बुजुर्गक ई स्थिति बहुत मर्माहत करैत अछि। सिम्मीकेँ माय-भाइ भौजाइ सभ सिंगेपुरमे अछि। परिवारमे मात्र बुजुर्ग। कोनो बच्चा नहि अछि। साँचे कहल जाए छै जे पाए बलाकेँ कोठरी बड़ महग होएत अछि पर कोठरी सुन्न रहैत अछि। सिम्मीकेँ भाइ निःसंतान अछि। हुनकर भौजाइकेँ कहब छनि जे हमरा भाग्यमे संतानक सुख नहि अछि त' हम दोसरक बच्चासँ कियैक अपन मोनकेँ झूठ ढाढ़स देब। ओ अपन कमाइक एक हिस्सा अनाथालयमे दान करैत अछि।

सिम्मी सभ दिनसँ अपन कक्षाक अव्वल छात्रा छल आ किछु अलग करबाक लालसा नेनपनेसँ हुनकामे छलनि। सभ दिन अपन काजमे लीन रहथिन। हिनकर यैह लीनताक कारण कक्का हिनका अपन पुत्रवधु स्वीकार केलथि। सिम्मीक संग पाबि विकासक बिजनेस आसमान छुबै लागल। सिम्मी अपन देश संगे विदेशोमे नामित अछि। ओ अपन कम्पनीक तरक्की लेल विकास संगे बराबरीकेँ हकदार अछि। मुदा एहि उड़ानमे ओकर पुत्र आ माय-बाबू सन सास-ससुरक दायित्व पाछू छुटि गेल। सास-ससुर त' हालातकेँ बुझैत परिस्थिति संग समझौता क' लेलनि। मुदा बाल मन नुनू

पर सिम्मीकेँ समयक प्रतिबंधक प्रतिकूल प्रभाव पड़ल। जाहि कारण ओकर सम्बन्धमे कटुता बढ़ैत रहल।

विकासकेँ सिंगापुरसँ दिल्ली आ दिल्लीसँ पटना अबैत काल बाटमे किछु नहि सुझल। बस मायक स्मृति हुनका आगू नचैत छल। नन्हिटासँ ल' क' एखनि तक सभटा बात हुनकर मोन कचोटै छल आ रहि-रहि आँखि भिजबैत छल। सिम्मी विकासक हालत देखि छोट बच्चा जकाँ फुसलाबए लगैत छली।

—'कियैक मोन अधीर करैत छी। माय ठीक भ' जेती। हारी-बीमारी त' एहिना अबैत रहैत छै। एहि बेर मायकेँ हम संगे ल' चलब। किछु दिन माय केर सेवामे रहब। बहुत दौड़लहुँ आब हमहुँ किछु दिनक आराम चाहै छी।' विकास सिम्मीकेँ बातक समर्थन करैत ओकर हाथकेँ मुट्ठियाबैत अपन मोनकेँ शांत करबाक निरर्थक प्रयत्न करैत अछि।

## 16

—'सुनै छियै! बउआकेँ देह छुबियौ त', देखियौ कतेक झरकै छै।' अधरतियामे बुच्चन बाबूकेँ जगबैत हुनकर कनियाँ सावित्री बजली। बुचन अकचकाइते उठल आ हाथ बढ़ा बल्बक स्विच दबबैत—'की भेल!' कहैत पँजरे लागल सूतल कृष्णाक देह छुबैत बाजल—'बाप रे एकरा त' बहुत तेज बोखार छै।'

—'हँ देखियौं ने ओहि दिनका जकाँ आइ फेर एलै। कि फेरो पानिसँ भरल ड्राममे बैसेबै की?'

—'हँ-हँ देखने रहिए नहि ओहि दिन नुनू केना भरल ड्राममे बैसाक' बोखार उतारने रहै। अहाँ बाबूकेँ नेने आउ ताधरि हम पानि भरैत छी।' कहैत बुच्चन ओछाओनसँ उतरि, कल दिस बिदा भेल। सावित्री सात सालक कृष्णाकेँ कोरामे उठा, कल पर अनिते अछि कि बेदरा आँखि उल्टा देलक आ मुँहसँ लेर जाय लागल। कृष्णाकेँ देख सावित्री चिचिया उठल कि भक्कसँ कृष्णा आँखि खोलि देलक। बुच्चन ओकरा मुँहकेँ ठंडा पानिसँ पोछि हाथ-पैर भिजबैत ड्राममे ठाढ़ क' देलक। जाड़सँ कँपकँपाइत कृष्णा बाप-माए चिकरै लागल। अधरतियामे एहन कौहैर-किच्चा सुनि बुच्चनक दुनू बेटी धरफराइत उठल आ आँखि रगड़ैत माएक दुनू पँजरामे ठाढ़ भ'

गेल। कने कालक बाद कृष्णाक कानब रूकल आ देहक ताव सेहो कम भेल। बुच्चन ओकरा कोरामे उठा ओछाओन पर बैसा बोखारक दवाइ पियौलक। किछु कालक बाद कृष्णा पसीनासँ तर-बतर भ' गेल आ बोखारो खसि पड़ल। एहन बुखार कृष्णाकेँ पहिल बेर आएल छल जाहिमे ओ आँखि पथरेने होय। सावित्रीकेँ शंका छल जे ई बुखार नहि केकरो केलहा छल तैं बेदरा आँखि उलटेने छल। सावित्री सुनने छल जे डनियाही केलहामे देहक ताप बड़ होइत अछि। सावित्री एहि बातक चर्च बुच्चनकेँ कहए चाहैत छल मुदा बुच्चन एहि सभ अंधविश्वासकेँ नहि मानैत छल। ओ चुप रहल आ भोर होइत घरमे भगत बजा कृष्णाकेँ माथा हाथ दिआबै लागल। ओमहर बुच्चन सेहो कृष्णाकेँ छह-छह घंटा पर बोखारक दवाइ पियाबैत रहल। कृष्णा एकदम टनगर भ' गेल। ओकर कारण बुच्चन दवाइकेँ मानैत छल आ सावित्री भगतकेँ।

बुच्चन बाबूकेँ ध्यान एखनि काकीकेँ पचीस बिगहा जमीन पर छल। एकरा ओ हथियाबैमे दिन-राति लागल छल। लालच लोककेँ आन्हर बना दैत अछि, जे उपकार आ परोपकार नहि देखि पबैत अछि। ओ सदिखन मोने-मोन योजना गढ़ैमे एकान्तवासी भेल छल कि आँखिक सोझाँ नेता जी धीरेन्द्रक छवि नाचि उठल। धीरेन्द्र जी हुनकर क्षेत्रक सांसद छला आ बुच्चन बाबूक लंगोटिया सेहो। पिछला चुनावमे बुच्चन हुनका जितबै लेल एड़ी-चोटी एक केने छल। जकर परिणाम ई भेल जे अन्हारमे डूबल परसा गाममे घर-घर बिजली बल्बक रौशनी छिटकि उठल। जे गाममे कनियो पानि पड़लासँ खिचरम-खिचरा भ' जाए छल आ भदबरिया महिना त' एहि अँगनासँ ओहि अँगना जाय लेल थाल-कदबामे लसकिकेँ जाइ पड़ैत छल ओहि गाममे एखनि लोकक घरक दलान तक पकिया रोड पीटल अछि। ओना त' बिजली आ सड़क, सभ गाममे अछि मुदा नेताजीकेँ कारण पहिले काज परसे गाममे शुरू भेल छल। धीरेन्द्र बाबू सांसद बनला पर परसा गामक क्षेत्रकेँ गोद नेने छला। संयोगसँ धीरेन्द्र बाबू अपन बाबूजीकेँ बरखीमे गाम आएल छला। बुच्चन बाबू हुनकासँ भेंट करबाक लेल हुनका घर पर पहुँचला।

—'आँय यौ बुच्चन, जखनि सभ जोति-कोड़ अहीं खाइ छियै त' फेर एहि फिराकमे कियैक पड़ल छी। काज त' एहन करू जे साँपो मरै आ

लाठियो नहि टूटै।'

—'यौ की कही! काकी खसि पड़ल से दिमाग नहि काज करैत अछि। ई सभ काकीकेँ मुइला बाद कहियो घुरि एतै नहि। कहीं सभटा बेचि-बिकिन लेतै त' हम एहिना रहि जायब। पाइसँ ककरो संतोष होइ छै।'

—'बुच्चन, एहि बेर त' हमर कुर्सी अपने डमाडोल भ' रहल अछि। पार्टीकेँ काजक नशा चढ़ि गेलै। ई नहि बुझै छै जे जनता एक्के बेर केकरो मौका दै छै। हमरो अपन परिवार अछि, नहि यौ!'

—'सरकारक घरमे पाइ सड़ै छै। आ हमरा सभकेँ पाइ-पाइकेँ हिसाबमे पगलेने रहैत अछि।'

—'यौ बुच्चन अकरो सभ लग त' पायक अम्बार छै। अहाँ अपना गाममे किछु करबाउ ने।'

—'मतलब नहि बुझलहुँ नेताजी?'

—'हुनकर बेटा डागडर छियै ने। तहन हॉस्पिटल खोलबाउ ने जी महराज।'

—'ओहिसँ हमर की फायदा होयत?'

—'एहि बेर अहींकेँ टिकट दिया देब। पाइ ओ लगौथिन। काज अहाँ करब। नाम हमर होयत। मंजूर अछि त' कहू। अहाँ विधायक बनब आ हमरो पार्टी काज देख कोनो नहि कोनो काज सौंपत। दू साल समय अछि एखन।'

—'ठीक अछि नेता जी। अहाँ संग छी ने?'

—'विश्वास नहि अछि?'

—'अपनोसँ बेसी।'

—'त' फेर बस अहाँ पासा फेकू, चालि हम चलब।'

## 17

विकास अस्पताल पहुँचते सोझाँमे ठाढ़ आदर्शकेँ देखि ओकरा पकड़ि फफैककेँ कानय लागल। आदर्श सेहो अपन मोनकेँ सबल बनबैत बाबूक आँखिसँ बहैत नोर पोछि बाजल—'पापा ग्रैंडमदर इज फाइन। यू विल वेकअप क्विकली। संभालिए खुद को।'

आदर्शक बात सुनि विकास अपना गाल परसँ टघरल नोरक बुन्नी नहसँ पोछि हवामे उड़ौलक आ चुपचाप आदर्शक पाछाँ-पाछाँ आईसीयू दिस विदा भ' गेल।

सिम्मी प्रतिक्षालयमे लागल कुर्सी पर बैसि स्वयंकेँ मजगूत करबाक प्रयत्न क' रहल छल। ओ काकीसँ भेंट करबाक हिम्मत जुटबैमे विफल होइत छल, तखने आदर्श सिम्मीक आगाँ ठाढ़ भ' बाजल—'कमऑन मॉम!'

सिम्मी चुपचाप आदर्शक पाछाँ चल' लगली। आईसीयूक गेट पर विकासकेँ ठाढ़ देखि ओकर पैर आर जोरसँ काँपै लागल। ओ दुनू हाथे अपन समीजकेँ बोकटैत आगाँ बढ़ल जतय काकी मेशीनक पुक्कीक बीच घोर नीन्दमे सूतल छल। देखि सिम्मीकेँ एना लागल जेना माए एखने उठि कहत—'बहुरिया आबि गेलहुँ, बैसू ने, हम एखने अपना हाथक अहाँक मनपसिन कॉफी बनेने अबैत छी।' ई स्मृति संगे सिम्मी जोरसँ फफकि उठल। आदर्श माएकेँ पकड़ि बाहर अनैत बाजल—'मॉम ग्रैंडमदर इज फाइन, जस्ट स्लीपिंग। शी विल वेक अप ऐनी मोमेंट एण्ड विल हग हर नुनू। बिलीभ मी।'

कहैत ओहो मायक गला पकड़ि कानए लागल। सिम्मी अपन आ नुनूक नोर पोछि बाजल—'सन, आई आल्सो हैव फेथ इन योर फेथ।'

ओना त' काकीक माथक इलाज भ' रहल छल मुदा ओहि चोटकेँ कोनो डागडर नहि देखि रहल छल जे हुनका हृदयमे लागल छल। जकर दर्दक टीस हुनका जागए नहि दैत छल। सिम्मी एहि बातकेँ जनैत रहै जे मायकेँ हमर कहल बातक अघात भेल होएत। ओ अपन कएल गलतीक प्रायश्चित कर' चाहै छली। ओ चिकैरकेँ कहै चाहै छली जे आदर्शकेँ हम जननी मात्र छी ओकर असली माय त' यैह छथि। उठथु आ अपन नुनूकेँ नोर पोछथु। हमरा अपन कृति लेल माफ करथु माय। मुदा सिम्मीकेँ लाचारी एहेन छल जे ओ ई सभ बात ककरो कहियो नहि सकैत छल। आइ ओ अपन पुत्र आ पतिक नोरक कारण स्वयंकेँ बुझि अपन ठोर कुचि रहल छल।

हॉस्पिटलक हॉस्टलमे आदर्श रूम किराया पर नेने छल जाहिमे घरक बेटी तुलसी सेहो संगे रहि रहल छली। ओ बिनु काकी माँकेँ गाम जाय लेल नहि मानलक। तुलसी विकास आ सिम्मीक रूम पर आनि हुनका खेनाइ खुआ आराम करक लेल कहलक। किछु काल बाद विकास आदर्शकेँ अबैत बाजल—'आदर्श, आई वान्ट टू टेक मदर बाय एयर

एंबुलेंस टू सिंगापुर।'

—'पर क्यों?' आदर्श बाजल।

—'पापा दिस इज द' प्रोसेस ऑफ ट्रीटमेंट। मैं नहीं चाहता कि जब वह जगें तो स्वयं को अपने माटी से अलग पाएं। माँ प्लीज समझाओ पापा को दादाजी की इच्छा उनके संग ही चली गयी। उन्हें अपनी भूमि की माटी नहीं मिली। मैं दादी माँ के साथ ऐसा नहीं होने दूंगा। अब दादी माँ अपने देश, अपनी भूमि को छोड़ कहीं नहीं जाएंगी।'

आदर्शक बातक समर्थन करैत सिम्मी विकास दिस इशारा करैत बाजल—'आब आर जिद नहि बस! अगर आदर्श और माँ की यही इच्छा है तो यही सही।'

विकास आदर्शकेँ कन्हा पर हाथ रखैत ओकर बातक समर्थन क' बेटाकेँ गला लगा लेलक। एखनि बाप-बेटाक बीच कोनो देबार नहि छल। सिम्मी एहि दृश्य लेल कतेक बरखसँ ललाइत छली। ओकर आँखि छलछला उठल। एना लागल जेना छिड़िआएल सभटा मोती जुड़ि गेल बस ओकरा बान्है लेल मजगूत कुन्नीक खगता छल जे एखन सुतल छथि। जे जल्दीये उठि एहि मालाकेँ बान्हि देती।

तुलसी भावविभोर भ' सभ देख रहल छली आ सोचि रहल छली जे खूनक रिश्ता कतेक मजगूत होइत छै। कोनो परिस्थितिसँ लड़बाक ताकत एहिसँ बेसी आर कतहुँ नहि अछि। आइ एहि दृश्यकेँ जँ काकी माँ देखतथि त' हुनका स्वर्गानुभूति होइतनि।

एहि बीच तुलसीकेँ आदर्शक प्रति एकटा अलगे आकर्षण भ' रहल छल। जाहिसँ बचय लेल ओ हरदम सतर्क रहैत छली तइयो योवनक गति आ मोनक गति कहाँ कोनो बान्ह बुझैत अछि। ओकर मोन सदिखन आदर्शकेँ अपना सोंझा देखै लेल आतुर रहैत छल। ओ कने चेतैत स्वयंकेँ झमारैत कहैत छल नहि फेरसँ ई आकर्षण नहि। हमरा चैन पर जे छनि देलक हम ओकरे नहि उछाहब। हम डागडर बाबू केर भइया कहैत छी फेर ई सभ नहि नहि, छीः छीः!

तुलसी केर आदर्शक बात बेर-बेर कानमे किलोल करैत रहैत छल। तुलसी मौन धारण केने सभ काज करैत रहैत छल। ओकर एहि मौनक कारण छल काकीक हालत आ दोसर आदर्शक प्रति नहि चाहितो आकर्षण।

ओ अपना ह्रदयसँ प्रेमक पाँति मेटा चुकल छल तइयो ओकरा फेरसँ पुनगैत देखि तुलसी हैरान आ मौन भ' चुकल छल।

## 18

—'भइया जहियासँ काकीकेँ एहेन हालत देखलहुँ तहियासँ मोनमे एकटा बात हिलकोर ल' रहल अछि। एहि हिलकोरे मोन आतुर अछि। जँ आदेश करी त' अहाँसँ साँझा क' अपन मोनक आतुरताकेँ शांत करी।'

—'बुच्चन हम तोहर सहोदर संगे पैघ भाइ सेहो छियौ। तू कोनो लाग-लपेटकेँ अपन विचार व्यक्त क' सकैत छह। कहू ने की बात?'

—'भइया, कक्का-काकी बहुत किछु अरजलखिन। हुनकर मेहनति आ भगवती आशीर्वादसँ एखनो नित हुनकर ढेरी बैढ़िए रहल अछि। हमर मोन छल जे हुनका नामे अपना गाममे अस्पताल खोलाबी। दूर-दराजक पचीस गाम तक कोनो अस्पताल नहि अछि। एकटा छिक-छिकियो लगला पर दरभंगा-पटना दौड़ लगाब' पड़ैत अछि, नहि त' झोड़ा छाप सभसँ सुइया गथबाबति रहू।

भइया टीसनक कात जे अपन बाबा सबहक सझिया जमीन अछि हमर मोन छल जे ओहि पर कक्का-काकी नामे अस्पताल खोलाबी। की विचार अछि अहाँक?'

—'बुच्चन तू त' हमर मोनक बात कहि देलहक। हमहुँ यैह सोचैत रहि। जहिया आदर्श एहिठाम रहबाक बात कहलक ओहि दिन मोनमे आएल जे गाममे अस्पताल खोलाबी। मुदा माएक संगे भेल दुर्घटना सभ बिसरा देलक। लेकिन बुच्चन अस्पताल लेल ओतबे जमीन कम पड़ि जाएत। एतबे जमीन पर अस्पतालक मंजूरी नहि भेटत। गामक लोग त' पाइयो ल' क' अपन पुरखाक अरजलहा जल्दी नहि बेचैत अछि। जाधरि ओ मजबूर नहि होइत अछि ताधरि ओ जमीन बेचबाक सोचबो नहि करैत अछि।

एहि पर बाबूजी कहैत रहथिन जे एक बेर मुसहरू कक्का दुनू प्राणी भूखसँ लहालोट भ' अपन प्राण त्यागि देलखिन्ह मुदा अपन डीह आ जमीनक एको कनमा नहि बेचलखिन। दहाड़ आ सुखाड़ हुनकर डाँड़ तोड़ि देलक। हुनकर कहब छल जे बाप-दादाक अरजलहा बेच दरिद्र होयसँ नीक अछि जे दरिद्रताक बीच जमीनक शान बनल रहए। एहि तरहक सोचसँ

ग्रसित गामक लोग अपन जमीन अस्पतालक नामे बेचत की?'

—'भइया, ई बात त' सत्य अछि। जमीन बेचनाइ अखनो दरिद्रताक आगमन मानल जाइत अछि, मुदा बदलेनमे की हर्ज।

भइया दू साल पहिने एक बेर अहीं फोन पर कहने रहिए जे बुच्चन मोन होयत अछि जे राइस मिल गाममे लगाबी। फेर हमहीं कोनो काजमे ओझरा गेलहुँ आ ओ बात ठमकि गेल। भइया दुनू काज एक्के बेर शुरू करू। गाममे बेरोजगारी बहुत अछि। घरही सभकेँ रोजगार देबै। अस्पताल आ मिल दुनूमे बेसी गौउआँक प्राथमिकता रहत। एहि लेल लोन सेहो भेटि जाएत कम ब्याज पर। अहाँ बस एहि लेल हामी भरि दियौ।'

—'भाइ, एहि नेक काज लेल सोचब की, हम तैयार छी। एहि काजक जिम्मा अहाँकेँ आ पाइ हमर। आन देश लेल बड़ काज केलहुँ। आब अपन जमीन लेल अपन समाज लेल काज करब। ई कहि दुनू भाइ गलजोरबा केलक। बुच्चन त' गदगद भ' गेल ओकरा दुनू हाथमे लड्डू छल। आब ओ मंत्रीक कुर्सीकेँ सपना देखए लागल। जाहि पर बैसि बुच्चन अपन मोंछ पर आंगुर पछारि रहल छल।'

विकास बुच्चनकेँ सपनासँ जगबैत बाजल—'त' आइये एकर शुभारंभ करू बुच्चन।' बुच्चन फोन घुरा वकीलसँ एफिडेविट बनबै लेल बात करैत अछि आ दुनू भाइ सरकारी ऑडर लेबाक लेल आ कागजी कार्यवाही लेल कोर्ट विदा होइत अछि। विकास ई सोचि प्रफुल्लित होइत अछि जे आइ हम अपन बाबूक अरमान संगे बाबूकेँ फेरसँ जीवित करब। जखन माय घुरि गाम औति त' हमर एहि काज लेल जरूर अपन पुत्रकेँ हिये लगौती। हुनकर सदिखन यैह इच्छा छल जे अपन माटि लेल किछु करी जकर सुवास दूर-दूर पसड़ैत रहए।

## 19

जेठक जरैत दुपहरियामे टुह-टुह लाल रंगसँ छाड़ल गुलमोहरक गाछ अपन योवनक उन्मादमे बसात संगे ठिठोली क' रहल अछि। एहि गाछक पुप जेना अपन कोमलताक मोह छोड़ि दहकति रौदमे खिलखिला भास्कर संगे होड़ लगौने होय। सूर्यक तेज पर ओकर योवन आर उत्तेजित

भ' चहुँ ओर छिटकि रहल छल। एहि उत्तेजनामे कहाँ ओकरा भान छल जे ओ एकटा नाजुक सन पुप अछि आ ओ आगिक गोला। मुदा के कहत एकरा जे एना नहि उधिया, जैर जेबें, एहि किरणक प्रेममे, मुदा कहाँ ई बुझैत अछि। ओकरा त' अपन मेटबाक सोहो नहि रहैत अछि। होइत साँझ किछु क्षणक प्रकाशक प्रेम लेल कतेको फतिंगा ओकरा आगाँ नाचि-नाचि अपन पाँखि जरा अपन प्राण त्यागि दैत अछि। प्रेम त' एहिना क्षणिक सुख लेल सम्पूर्ण जीवन गमबति आएल। हमहुँ ओहि क्षणिक सुख लेल अपन जीवन अर्पित कर' चाहैत छी...

—'ओ नो डफर... ध्यान कहाँ है!' कहैत घरमे घुसैत आदर्श तुलसीकेँ कटल अंगुरीकेँ दबबैत बाजल। आदर्शक बात पर तुलसीकेँ ध्यान बहटल त' देखैत अछि जे जाहि छुरीसँ ओ तरकारी कटैत छल सैह छुरी ओकर आंगुर कखनि काटि देलक तकर कनियो ओकरा आभास नहि भेल। खूनमे सनल तरकारी आ टेबल परसँ टघरल लहू जे ठोप-ठोप फर्श पर पसरि रहल छल से एहि बातक गवाही द' रहल छल जे चोट गंहिरगर अछि। आदर्श खूनक टघार देख तुलसीकेँ हाथ पकरि हॉस्टलसँ अस्पतालक एमरजेंसी वार्डमे ल' गेल जतए ओकर कटल आंगुरमे दू टा टाँका लागल। एहि दरमियान तुलसी अपन मुँहसँ एक्को शब्द नहि बाजल आ नहि टाँका लगैत काल आह केलक। ओ त' बस मग्न छल आदर्शकेँ निहारैमे। ओकरा बहुत नीक लागि रहल छल आदर्शक ओकरा लेल परवाह केनाइ। ओ सभसँ नजरि चोरा अपन मोनमे आदर्शक छवि गढ़ि रहल छल। आइ अस्पतालमे आदर्शकेँ कोनो नर्ससँ बात केनाइ ओकरा अखरि रहल छल।

ओम्हर चन्दनक मोनमे सेहो तुलसी लेल प्रेम फेर पनपि रहल छल। आब जाहि तुलसी लेल ओ व्याकुल छल ओ तुलसी ओकर ओ तुलसी नहि छल जे ओकरा लेल सभ किछु छोड़ि ओकरा संग लागल आएल छल। आब ई तुलसी सॉक्त बनि गेल अछि जे आब एहिना नहि किनको लाट धरत। आब ई तुलसी योवनक शृंगारससँ गढ़ल चन्दनकेँ बेर-बेर अपना दिस आकृष्ट क' रहल छली। चन्दन ओकर छवि सुतल आ जागल दुनू ठाम देखि मुस्का उठैत छल। ओ अपन जीवन संगिनी रूपे तुलसीकेँ देखि रहल छल। कखनो ओकरा संगे प्रेमक समुन्दरमे डुबकी लगा रहल छल त' कखनो ओकरा पर हक जता सबहक नजरिसँ बचेबाक कोशिश क' रहल छल। आ

स्मरण करैत रहल अस्पतालक ओ मुलाकात।

चन्दन पाछासँ तुलसी कन्हा पर हाथ रखैत बाजल—'चिन्हलिए?'

—'केना बिसरब!'

—'आब काकी केना अछि, कि अखनो...'

—'देखियौ हमर जिनगीक गिरह कतेक ओझराएल अछि। जतए जाइत छी ओकरे पर संकट आबि जाइत छै।'

चन्दन सकुचाइत तुलसीक एहि बात पर बाजल—'हमरा माफ करब तुलसी अहाँक एहि सबहक जिम्मेदार हम छी।' कहैत चन्दनक आँखि डबडबा गेल। तुलसी चन्दन दिस बिनु देखने ओतयसँ विदा भेल। चन्दन तुलसीकेँ जाइत देख बस एतबे सोचि रहल छल जे तुलसीकेँ मोनमे मात्र हमहीं छी। बहुत जल्द तुलसीकेँ अपन घर आनए लेल चन्दन आतुर छल।

## 20

—'नेता जी, अगला एलेक्सनमे त' अहाँक पता साफ बुझू। बुच्चन बाबू बिदेसिया भयारी संगे अपना गामक टीसन पर अस्पताल खुलबा रहल य' आ सुनबामे आएल जे अकरा सबहक सहयोगसँ राइस मिल सेहो परसा गाममे खूजत।'

—'हँ, हँ सही सुनलहुँ। कागज झपसँ आगाँ बढ़ाउ एहि लेल तँ बजेने रहि अहाँकेँ।'

—'आँय यौ, अपन चिताक जारनि अपने ओरियाबैक कारण की अछि नहि बुझलहुँ हम। अहाँकेँ अभास कनियो अछि कि नहि गामक बसातक?'

—'कोन बिरोह उठलैए, आब फरिछाउ ने।'

—'गाम-गाममे बस बिदेसिया आ बुच्चनेकेँ चर्चा छै। काज शुरूओ भ' गेल ट्रकक-ट्रक माल खसि रहल अछि। काज त' दौड़ि रहल अछि। एना लगैत अछि जेना काल्हि अस्पताल ओहिठाम ठाढ़ भ' जाएत। सबहक मुँह पर यैह छै जे बुच्चनकेँ आब नेता बनाबी।'

—'यौ कमीशनर बाबू, एखन त' शतरंजक बाजी बिछेबे केलहुँ आ अहाँ चेक आ मातक रट लगा बैसलहुँ। अहाँ कोनो रूकावट केने सभटा

कागज तैयार करबाउ। आखिर बुच्चन हमर प्रिय मित्र छथि। हुनका लेल कतेको कुर्सी कुर्बान अछि। ई लिअ फोन छोटकुन लेल।'

धीरेन्द्र बाबू अपना जेबसँ पहिनेसँ गानल पायक गड्डी आ मुट्ठी भरिक फोन कमिशनर साहेबकेँ हाथमे दैत विदा केलक।

छोटकुन एगो अय्याशी गुंडा जे एखन पटनाकेँ बेउर जेलमे उम्रकैदक सजा काटि रहल छल। ओकरा उपर अपहरण, हत्या, बलात्कार, अतिक्रमण जकाँ कतेको मुकदमा दर्ज अछि। पिछला चुनावमे सरपंचक हत्याक बाद ओकरा उम्रकैदक सजा सुनाओल गेल। धीरेन्द्र बाबूकेँ गुप्त रूपे बाम हाथ छोटकुन छल। ओकरे कन्हा पर बंदूक राखि ओ पिछला चुनाव जीतल छल। एखन तक कोय धीरेन्द्र बाबू आ छुटकनकेँ एक संगे नहि देखलक। छुटकनक दहसति पूरे क्षेत्रमे एहन कि कोनो काज करेबाक लेल बस ओकर नामे काफी छल।

—'भइया आब अस्पतालक सपना सपने रहि जायत काज रोकबा दियौ। ओ कहबी छै ने जते क' बौह नहि तते क' लहठी। एहि छुटकनक डरे हम राइस मिलक बात टालने रहि, आ फेर वैह भेल जकर भय छल। राति छुटकनक फोन आएल छल अस्पताल लेल एक करोड़क रंगदारी मंगैत छल। संगे धमकी सेहो देलक जे एक करोड़ नहि देबै वा थानामे रिपोर्ट लिखेबै तँ जानोसँ जाएब आ अस्पतालक कागज-पत्तर रस्तेमे रहि जाएत।'

—'भाइ छुटकन त' जेलमे छै। फेर फोन कोना केलक।'

—'जहिना फूलचन्द्र खेतक आरिसँ अलोपित भ' गेल तहिना राति फोनो बेउर जेलसँ आएल छल। भइया चोर लेल ताला की, बैइमान लेल केबाला की आ छुटकन लेल जेल की। ओकरा सभकेँ जेल कोनो ससुरारिसँ कम अछि की। जखन अकरा सभकेँ मन आ तन थाक' लगैत अछि त' जेल जाक' आराम करैत अछि। जेलक सभटा अधिकारी त' ओकरे सभकेँ भगवान बुझैत अछि। कारण जे पानिमे रहि मगरसँ बैर के करत!'

बुच्चन कुर्तामेसँ फोन निकालि धीरेन्द्र बाबूकेँ फोन लगा रातुका सभ बात बतौलक।

—'आहिरौ बा, ई कोन बात भेलै! अहाँ एखने थाना जाउ आ ओहि नम्बर पर एफ.आइ.आर करू। सभ रंगदारीक नशा उतरि जेतै। हम कमीशनरकेँ फोन करैत छी। हमरा लगैत अछि जे कोय अहाँकेँ डरबै लेल

मजाक केने होयत।

विकास बाबू अहाँ निश्चिंत रहू। हम बुच्चन संगे बाहर ठाढ़ छी। अहाँ निश्चिंत भ' सिंगापुर जाउ। आब ई अस्पताल आ राइस मिल हमरो जिद अछि।

एतेक पैघ काजमे जँ कोनो छोट-मोट रोड़ा आएत त' ओकरा मारि दैमे समाज संगे हम सक्षम छी। हमरा संगे जनताक संग अछि।'

—'नेताजी हम अहीं भरोसे एहि समाजक कल्याणक भार उठेलहुँ। अहाँ सनक समाजसेवी जखन हमरा संगे अछि त' हम कियैक चिंतित होयब!'

अपन गाममे अस्पताल खुजबाक बातसँ आदर्श बहुत प्रसन्न छल। ओ अस्पतालक बात सोचने त' छल मुदा एतेक जल्दी नहि। एकर एहि सोचकेँ सफल बनाब' लेल आइ ओ अपन बाबूकेँ मने-मन दिलसँ आभार व्यक्त क' रहल छल। आदर्श सोचि रहल छल, साँचे माटिक स्नेहमे कतेक ताकत अछि जे पापाकेँ हृदय परिवर्तित क' देलक। मात्र एक बेर एहि माटिकेँ छुबैत ओ बुझि गेलखिन ओकर महत्त्व आ ठाढ़ भ' गेलखिन अपन माटिक संरक्षण लेल, अपन समाजक कल्याण लेल। आइ हम अपन पापाक बेटा होय पर गर्वान्वित भ' रहल छी।

काकी सेहो आब कोमासँ बाहर आबि स्वस्थ भ' चुकल छली आ आदर्शक संगे क्वाटरमे रहि रहल छली। मुदा अस्पतालक बातसँ काकीकेँ अनजान राखल गेल छल। ई सिम्मी आ विकासक योजना छल जे अस्पताल तैयार भेला पर काकी हाथे फीता कटाओल जाएत जे हुनकर स्वस्थ हेबाक उपहार होयत।

अस्पतालक काज शुरू भ' गेल छल। गामक स्त्री-पुरुख, बच्चा-बूढ़ सभ एहि लेल मजूरी करए लागल। एकर निर्माणक जिम्मा भारतक प्रसिद्ध इंजिनियर्स टीमकेँ सौंपल गेल। सभ काज सुचारु रूपे चलि रहल छल कि अस्पतालक एक हिस्सामे अधरतिया बितैत कोहैर-कुच्चा शुरू भ' गेल ओहि कमरामे रहि रहल छह टा मजदूर गैस सलेण्डर फटलासँ गंभीर रूपे घायल भ' गेल। चारिटा त' ठामहि प्राण त्यागि देलक। दू गोटे अस्पताल जाइत काल रस्तेमे दम तोड़ि देलक। जाहिमे दू टा मजदूर गामक आ चारिटा आन गामक छल।

एहि घटनाक बाद अस्पतालक काज पर ताला लागि गेल। गाममे

लोग तरह-तरहक बात बनाब' लागल। कोय ओहि रस्ता द' क' दुपहर आ साँझ नहि चलैत छल। जे ओहि अस्पताल दिस देखैत छल भूत खेला लगैत छल। सभ अस्पतालक नाम भुतिया अस्पताल राखि देलक। मुदा अस्पतालक काज बेसी दिन नहि रुकि सकल। नेता जी घटनाकेँ स्वरूप बदलैत काज पुनः शुरू करौलथि। ग्रामिणक बीच नेताजीकेँ लोकप्रियता बढ़ि रहल छल। सभ ओझराएल मुद्दाकेँ सोझराबैक कुंजी नेते जी लग छल। बुच्चन लग धीरेन्द्र बाबूक पाछाँ ठाढ़ हेबाक सिवाय आर कोनो उपाय नहि छल।

## 21

एकाएक गामक-गाम दलमलित हुअए लागल। सगरे हाहाकार मचि गेल। घर-घर सभ कपार पीटए लागल। गामक एकसँ बारह बरखक सभ बाल-बेदरू बेरा-बेरी बुखारसँ धधकए लागल। कतेको बच्चा आँखि उल्टा अचेत भ' जाइत छल। गामक ओहि कात खतबै आ मियाँ टोलक हालत सभसँ खराब छल। ओहि टोलमे जेना बच्चा सबहक गरदमगोल छल तहिना बीमारीक बम ओहि टोलमे फूटल छल। ओतहि सभसँ पहिने इस्लामक पाँच बरखक बेटा हालिद संक्रमित भेल आ बेरा-बेरी पूरा गाम एहि चपेटमे आबि गेल।

प्रशासन हरकतमे तखन आएल जखन ओहि टोलक छह टा बच्चा एहि विनाशक शिकार भेल आ सभदिन लेल अपन आँखि मूनि लेलक। एना लगल जेना कोनो काल हवामे मिझर भ' सभ नेना-भुटकाकेँ तकने फिरैत अछि। लोग सभ अपन बच्चा सभकेँ घरमे बन्द करए लागल। मुदा काल कहाँ कोनो टाट बुझैत अछि। घरही सभ बच्चा बजारक सरकारी आ गैरसरकारी अस्पतालमे भरि गेल। एगो बेड पर दू टा तीन टा बच्चा अधमरू अवस्थामे पड़ल छल। उज्जर चद्दरि पर कुलक दीया, माय-बाबूक नयनतारा भुकभुकाइत मिझा रहल छल। मायक ममता छातीसँ बहि रहल छल। नहि बीमारिएक पता नहि बीमारीक कारणक। बस देहक तापमे कुहरैत बच्चा सबहक नेनपन हेराएल छल। सभ अपन कपार पीटि कर्मक दोख गुणि रहल छल। भगवानक मर्जी कहि स्वयंकेँ बुझा रहल छल।

डागटरक टीम, वायरसक परिक्षणक टीम गामे-गाम दौड़ए लागल।

एहि कालक कारण हेरबाक लेल, सभ अपन माथा नचबए लागल। मासूमक हेराएल मासूमियत मायक नोरक टघार संगे कतहुँ बहि गेल छल। माय-बाबूक ढकिया भरि कबूला-पाती एहि धरती पर रहि गेल। हंस उड़ि आकाशमे विलीन भ' गेल।

आदर्श जखन अपन आ अपन गामक आस-पासक गामक हाल सुनलक तँ ओ गाम दिस दौड़ल। गामक सीमा पर घुसिते कतेको चिता दहकैत ओकर कलेजा फाड़ि देलक। गामक लोकक कानब ओकर कान सुन्न क' देलक। ओकरा एहि बातक पश्चाताप होइत छल जे आइ हम गाममे रहितहु त' किनसाइत किनको घरक किलकारी चितामे नहि धधकैत। सही समय पर सही इलाज नहि भ' सकल आ यम नाचि-नाचि अपन ताण्डव करैत रहल।

डॉक्टरक टीम आ जाँच टीमसँ प्राप्त जानकारीक अनुसार जे बच्चा कुपोषणक शिकार अछि ओ बच्चा सभसँ बेसी एहि बिमारीसँ ग्रसित अछि। आदर्श बुच्चन बाबू आ धीरेन्द्र बाबूक मददसँ अपने दरबजा पर वार्ड बनेलक जाहिमे संक्रमित बच्चा सभकेँ अलग-अलग राखल गेल। एहि बच्चा सभक इलाजमे आदर्श संगे समाजक नवयुवा दिन-राति एक करै लागल। एहि बुखारक लक्षण छल, बुखार संगे घबराहटि आ हृदयगतियक वृद्धि। ब्लड शुगर कम भेनाइ। जाहि कारणे कतेक बेर बच्चा कोमामे चलि जाइत छल।

कुपोषित बच्चा एहि चपेटसँ बेसी ग्रसित छल। आदर्शकेँ बुखारक जड़ि पता चलि गेल आ तकर उपचार सेहो। बच्चा सभकेँ पारासिटामोल गोली आ सीरप संगे ओआरएसक घोल प्राथमिक उपचार छल। संगे पौष्टिक आहार आ मीठ खेनाइ। जाहिसँ बच्चा सबहक स्थितिमे सुधार हुअए लागल। आदर्श इहो नोटिस केलक जे पीड़ित बच्चाकेँ अलग रखलासँ संक्रमणक कड़ी टूटि रहल अछि।

आदर्श एगो रिपोर्ट तैयार केलक जाहिमे एहि बिमारीक नाम चमकी बोखार देल गेल आ ओकर लक्षण आ उपचार सभ बताओल गेल। चमकी बोखार वास्तवमे 'एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम' अछि। ई एगो संक्रामक बिमारी अछि जे एक गोटेसँ दोसर गोटे तक पसरैत अछि। कोनो एक गोटेकेँ संक्रमित भेला पर ओकर मल-मूत्र, थूक, छींक आदिक संपर्कमे

एलासँ दोसर व्यक्तिमे ई इंसेफ्लाइटिस वायरस अपन पैर पसारि लैत अछि। ई वायरस शरीरमे घुसिते खूनमे मिझर भ' अपन प्रजन्न शुरू क' दैत अछि। शरीरमे एहि वायरसक संख्या बढ़ला पर ई खूनक संगे मिलि व्यक्तिक मस्तिकमे पहुँचि ओकर कोशिकामे सूजन पैदा करैत अछि जकर कारणसँ शरीरक सेंट्रल नर्वस सिस्टम खराब भ' जाइत अछि

एहि बोखारमे बच्चाकेँ हरदम तेज बोखार, देहमे ऐंठन आ दाँत पर दाँत चढ़बैत, कखनो दाँत किटकिटबैत कखनो दाँती लागि बेर-बेर बेहोशी, कमजोरीसँ देह कपकपाइत जेना समस्या देखल जा सकैत अछि। बहुत बेसी गर्मी आ बरसातक मौसममे एहि संक्रमणक रफतार बढ़ि जाइत अछि। गर्मीक मौसममे एकर तीव्रता सभसँ बेसी बढ़ैत अछि। वास्तवमे इंसेफ्लाइटिस मानव मस्तिकसँ जुड़ल बिमारी अछि।

यैह कारण छल जे कुपोषित बच्चा एहि संक्रमणसँ बेसी प्रभावित छल।

आदर्श बिमारीक जड़ि त' पकड़ि लेलक आ ओहि अनुरूप सभ बच्चाकेँ इलाजक' स्वस्थ क' देलक मुदा आगाँ ओकरा अपन देशकेँ अपन राज्यकेँ अपन गाम आ समाजकेँ एहि कुपोषणसँ स्वस्थ करबाक छल। ओकरा अन्नपूर्णा घर ढनमनाइत थारी चिचिया-चिचियाक' अपन नांगट देह देखा रहल छल।

## 22

गाममे आएल एहि संकटमे मात्र परसे गामसँ अठारह टा आ आसपासक गाम मिलाक' कुल तैंतालीस टा बच्चा एहि हादसाक शिकार भ' गेल। ओहि क्षेत्रक चुप्पी बाट-बटोहीकेँ करेजा फाड़ि दैत छल। तैंतालीस टा अबोधक मौगति कहाँ ओहि क्षेत्रमे रहनिहार सभकेँ जीवित रखने छल। जे अखन एहि धरती पर अयबाक उद्देश्य बुझियो नहि पौलक से एहि धरतीमे सभ दिन लेल विलीन भ' गेल। बच्चा चाहे खुंखार बाघकेँ वा विषधर साँपकेँ कियैक नहि होय, धधकैत चितामे नहि देखल जाएत अछि। ओहि तैंतालीस टा बेदराक माय-बाबू, परिवार आइ मास दिन बितलाक बादो भूइयाँ भमोरि अपन करेजक टुकड़ाकेँ हेरि रहल छल। सभ एखनो भगवानक कोनो चमत्कारक आस लगौने छल कि केम्हरोसँ ओकर

घरक चिराग घुरि आएत आ घर-अँगना, गामक गली-कुच्ची, परती-परात सभ ओहि नेनाक नेनपनसँ चहकि उठत। मुदा ई सभ आब मात्र एगो कल्पना छल जे कहियो पूरा नहि भ' सकैत छल।

आदर्श पीडियाट्रिक विभाग (बाल चिकित्सक)सँ एमडी करैक अपन सपना एहि बेर प्रवेश परीक्षा पासक' पूरा केलक। ओ इन्दिरा गाँधी आयुर्विज्ञान संस्थान पटनामे दाखिला लेलक। एहि दरमियान ओकर भेंट डॉ सुस्मितासँ भेल जे ओहि कॉलेजसँ गायनेकोलॉजिस्ट (स्त्री रोग विशेषज्ञ) विभागसँ एक बरख पहिनेक एमडीक छात्रा रहथि। सुस्मिता गण्डक नदीक कछेड़मे बसल प्राणपूर गामक धिया रहथि। समस्तीपुर आ मुजफ्फरपुरक बीचमे बसल ई गाम एखनो कतेको डांग खा रहल अछि। गरिबी, अशिक्षा, अंधविश्वास एखनो एकरा विकलांग केने अछि। सुस्मिताक बाबा समस्तीपुरमे एगो होम्योपैथिक डागडरक क्लिनिक पर बैसि दवाइयक पुड़िया लपेटैमे पूरा जवानी बिता देलनि। असगर संतान पुत्र धन प्राप्त भेल जे कहिया कॉपी-कलम हाथ नहि लगौलक। ओहि घरक धिया छथि डॉ सुस्मिता।

सुस्मिताक प्रारंभिक शिक्षा मात्र पाँचवीं तक भेल छल। तेरह बरखक उमेरमे ओकर पकड़ौआ विवाह कएल गेल। वर्तमानमे पकड़ौआ विवाह कानूनन अपराध अछि मुदा एखनो ओहि क्षेत्रमे अपन स्वरूप बदलि ई विवाह सालमे दू-चारिटा भ' जाइत अछि। सुस्मिताक विवाह एहिना भेल छल। विवाहक सवा मास दिन पर ओ सासुर पहुँचल। सासुरमे पन्द्रह दिनक बाद हुनकर सिउँथ सून्न भ' गेल। हुनकर स्वामी गौहुमन साँपक शिकार भेला आ ओकरा अभागी, कुलछनी आ रांड़ नामक तगमा पहिरा सासुरक सिमान टपा देल गेल। सुस्मिता अपन पति संगे चितामे नहि जरली मुदा सभदिन सर-सम्बन्धी आ अपन समाजक द्वारा लगाओल लांक्षणक चितामे जरैत रहली। एहि बीच सुस्मिताक बाबा अपन चारि बिगहा जमीन बेच सुस्मिताक झड़कल जिनगीमे पानि ढारि ओकरा नव आकार देलनि। जे अपन नव स्वरूप संगे डॉ सुस्मिता बनि ओहि समाजक बीच सम्मानित होइत गरदनि उठा ठाढ़ छल।

आदर्श सुस्मिताक लगन ओकर सादगी आ नम्रतासँ काफी प्रभावित छल। पहिल मुलाकात मनमे दस्तक देलक आ दोसर मुलाकात ओकर सोच-विचार, भावना आदर्शकेँ अपना बना लेलक। आदर्श अपन कोनो समस्या

प्रायः सुस्मितेसँ साझाँ करैत छल। एकर कारण सीनियर्टी संगे सुस्मिताक मृदुल व्यवहार छल। आदर्श सुस्मिताकेँ देख यैह सोचैत छल जे आइ अगर सुस्मिता अपन अतीतक मोहमे डुबि नोर ढबकाबति रहैत त' हमर समाज एगो सफल डागडरसँ वंचित रहैत। मात्र एगो स्त्रियेमे ओ शक्ति अछि जे ओ बसातक दिशा बदलि सकैत अछि। कतेक बेर तुलसियोकेँ देखलहुँ बुझैत दियाकेँ अपन चुन्नीक ओंटसँ बसातक दिशा बदलैत। ओहो कतेक किछु सुनैत अछि एहि समाजसँ। जे कोय ओकरा देखैत अछि अलगे नजरिसँ देखैत अछि। आखिर कियैक हमर समाज केकरो अतीत नहि बिसरि पबैत अछि।

## 23

—'अब तो दादी माँ बिल्कुल ठीक हैं डॉ आदर्श, फिर क्यों इन्हें इस दो कोठरी के मकान में बंघक बना कर रखें हैं। इन्हें घर जाने दीजिए वहां ये जल्दी रिक्वर हो जाएंगी। की दादी माँ हम सही कहि रहल छी ने?'

—'बउआ तू बेटी छहक ने तैं मायक मन पढ़ि लैत छहक। हमर त' आब मन उचति गेल एहि कोठरीक दिवार निहारैत-निहारैत। पता नहि एकरा कथीक डर समाएल छै से नहि कहि! डागडर एतेक भावुक आ डराएल कतहुँ देखलहक हँ। हम तँ थाकि गेलिऐ, बउआ आब तूहीं बुझाबए एकरा। आब हम पाकल आम छी, कखन टुटि जाएब के कहलक। तखन एकर डागडरी हमरा बचा लेत?'

—'दादी माँ, जतए प्रेम बेसी होइत अछि ओतए परवाह आ डर होइत अछि। डॉक्टर साहेबकेँ अहाँक परवाह बेसी छनि। वर्तमानमे ई सौभाग्य कहाँ सभकेँ भेटैत छै।'

—'हँ बउआ, से त' छै। हमर नुनू हीरा अछि।'

—'डॉ. सुस्मिता, दादी माँ अपने बातों में फँसाकर आपको आज ही अपनी छुट्टी के लिए मना लेगी। आप कुछ देर और बैठीं तो दादी मेरी झूठी तारीफों की पहाड़ खड़ी कर देंगी।'

—'हाँ, हाँ, हाँ डॉक्टर साहेब ये सभ बाते कोई झूठी नहीं, माँ का प्यार है जो दिल से निकलती है...आप नहीं समझोगे। अच्छा मैं चलती हूं अब बस बीपी की दवाई दीजिए और किसी दवाई की आवश्यकता नहीं

है।'

—'चलिए मैं आपको बाहर छोड़ दूं।'

—'क्या बात है डॉक्टर क्या सोच रहे हो आप? मैं देख रही हूं आप कहीं खो जाते हैं। क्या कोई परेशानी है तो बेझिझक आप मुझसे शेयर कर सकते हैं। बहुत ऐसा दर्द है जो बांटने से कम हो जाता है।'

—'नहीं-नहीं डॉक्टर कोई ऐसा दर्द नहीं  जिसे मैं नासूर बनने दूं। बस एक चिंता है उसी चिंता में कभी-कभार मौन हो जाता है।'

—'यह चिंता ही तो इंसान को खोखला कर जाता है। यही तो दर्द की शुरुआत है, और मेरा मानना है की चिंता में समय व्यर्थ करने से अच्छा है उससे आगे की समाधान के लिए चिंतन करना।'

—'आपके जैसा हिम्मत और हौसला और किसी में कहां है डॉक्टर। आपको मेरा नमन। अब इस अभागी तुलसी को देख लीजिए, ना माँ-बाप इसके साथ है और ना ही कोई सम्बन्धी रिश्तेदार या समाज। इसका पहला गुनाह बेटी होना है और दूसरा किसी को अपना समझ उससे प्रेम करना है। जिसे अपना समझ कर हाथ पकड़ी वह इसके हाथ को झटक के चला गया। अब इस लाखों की भीड़ में यह अकेली असहाय है। दादी माँ जब तक है तब तक अपना सहारा इसे दे रखी है पर उसके बाद का क्या होगा कभी-कभी तुलसी के बारे में सोच कर मैं बहुत ज्यादा परेशान हो जाता हूं। समाज के इस काली कोठरी से कैसे इसके दामन को बेदाग रखूं!'

—'तुलसी तो नर्सिंग की ट्रेनिंग कर रखी है ना?'

—'हाँ।'

—'पहले तो मैं यह बता दू की ये अभागी नहीं है, और ना ही असहाय। हम स्त्री को कमजोर, अभागी, असहाय और ना जाने क्या-क्या कह कर उसके आत्मबल पर चोट करते हैं और एक साक्त स्त्री को कमजोर साबित कर देते हैं। स्त्री कभी भी कमजोर नहीं हो सकती। जिसका आत्मबल मजबूत हो तो तन की कमजोरी कोई मायने नहीं रखता। स्त्री एक होने पर भी बहुरूपी है वह चाहे तो आसमां झुका दे, समंदर की गहराई नाप आए और पत्थर पर भी हरियाली पैदा कर दें। हम और हमारा समाज स्त्री को अभी तक समझ ही नहीं पाया कि वास्तव में स्त्री है क्या!'

—'मैं आपकी बातों से पूर्णतः सहमत हूं डॉक्टर पर आधुनिक स्त्री में और तुलसी में फर्क है।'

—'आधुनिक स्त्री की बात कर रहे हो आप डॉक्टर? आपकी नजर में आधुनिकता से क्या तात्पर्य है? आधुनिकता केवल एक सोच है रूढ़िवादी परम्परा से एक कदम आगे बस इससे आगे कुछ नहीं। ऐसा नहीं है कि शहर में रह रहे पढ़ी-लिखी स्त्री सिर्फ आधुनिक है और गांव में पढ़ी लिखी स्त्री में आधुनिकता नहीं। क्यों रोक कर रखे हो तुलसी को उसे क्यों नहीं बढ़ने देते उनकी मंजिल मात्र दादी की सेवा नहीं है। उसे स्वयं को पहचानने दो। उसे अपने लड़खड़ाते कदम को संभालने की ऊर्जा स्वयं एकत्रित करने दो। उसका कद जो आसमान को चीरने के लिए ललायित है, उपर उठने दो।'

—'पर कैसे और क्या करूं डॉक्टर किस पर भरोसा करूं। डरता हूं कि कहीं जिसे मेरी दादी माँ हाथ पकड़ी है अब उसके उपर कोई लांछन ना लगे और ना ही मेरी दादी माँ के उपर।'

—'आपका डर जायज है पर इस डर से जब तक स्वयं को मुक्त नहीं करेंगे तब तक आप तुलसी को अपने घेरे से मुक्त नहीं कर पाएंगे उसे अपने संरक्षण से मुक्त कीजिए तभी वो समाज से लड़ने के लिए तैयार हो पाएगी। इस दुनिया के अनुकूल बन पाएगी। मैं भली-भांति समझती हूं की वाणी की तीक्ष्णता का असर कितना गहरा होता है। आप चाहो तो उससे मेरे नर्सिंग होम में भेज सकते हो।'

—'डॉक्टर सच कहा आपने हर समस्या का समाधान बातचीत से हो जाता है। आपको अंदाजा नहीं है कि आज आपने हमारे दिल का कितना बोझ हल्का कर दिया। मैं तुलसी के भविय के लिए बहुत चिंतित था, अब मुझे पूरा विश्वास है कि वह आपके साथ काम कर स्वयं को पहचानना सीख जाएगी आर भविष्य भी अपना अच्छा संवार पाएगी। थैंक यू सो मच डॉक्टर!'

—'अपनों के बीच थैंक यू कैसा? सच पूछो तो मुझे भी अच्छा लगेगा अगर मैं तुलसी के लिए कुछ कर पाउं। हमारे समाज में ना जाने कितनी तुलसी हैं जो ऐसे ही अंधे प्रेम का शिकार बन हमेशा के लिए उसमें खो जाती हैं। अवसाद से ग्रसित कितने स्वयं को इस जहां से मुक्त कर लेते हैं। ऐसा

नहीं की उसमें काबिलियत नहीं पर एक कमी रह जाती है उसके साथ कि उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं होता, ताना मारने के लिए भीड़ खड़ी होती है। जिस उम्र में बच्चो के साथ प्रेम-प्रसंग पर खुलकर बातें करना चाहिए उस उम्र में उनसे हम ना जाने कितनी बातें छुपाने लगते हैं और इसी पर्दे के पीछे जानने की ललक हमारे युवा को ना जाने कितनी गलत राह पर धकेल देता है जिसका हम अंदाजा भी नहीं लगा पाते। आज वर्तमान में हमारी आधी युवा पीढ़ी अपना भविष्य संवारने के उम्र में इसी प्रेम-प्रसंग के कारण अपना सभ कुछ खो बैठते हैं। ना प्रेम संभल पाता और ना ही कैरियर। जब तक समझ आता है, समय बहुत दूर चला गया होता है।'

## 24

डॉ. सुस्मिताकेँ कारण तुलसीक जीवन एगो दोसर मोड़ लेलक। तुलसीक विचार आब पहिलेसँ बेसी गम्भीर छल। ओकर कोनो भी विषय पर सोचबाक ढंगमे प्रौढ़ताक अनुभव सहजे होइत छल। आब ओ जिनगीक सभ रूपकेँ गुनैत छल। ओ प्रतिदिन एक दू ओहन महिलोसँ मिलैत छल जे प्रेमक नाम पर हवसक शिकार भ' अपन अनचाहा अंशसँ मुक्त हेबाक लेल ओहि नर्सिंग होममे अबैत रहैत छल। जे संतान केकरो लेल जीवनक उद्देश्य छल सैह केकरो लेल जीवनक बाधा। तुलसी एहि तरहक स्त्रीकेँ देखि सोचैत छल कि यैह अछि प्रेम! तुलसी अविवाहित स्त्रीक बदलैत प्रेमक स्थिति देख ओ स्वयंकेँ ओतय राखि सोचैत छल जे हमहूँ त' ओहने छी, हमरो प्रेम स्थिर कहाँ अछि। चन्दनक बाद आब हमरा डागडर बाबूसँ प्रेम भ' गेल। चन्दनसँ प्रेम एकतरफा छल आ शायद डागडर बाबूओसँ। हमरा हिसाबे आकानक नाम प्रेम अछि जे चाहे ओ एक झलकमे होय वा बहुत दिनमे। हमरा मनमे बेर-बेर आब डागडर बाबूक प्रति प्रेम पनपि रहल अछि। नहि-नहि आब फेर नहि। आब फेर वैह गलती नहि करब। फेर दोसरे घड़ी तुलसी सोचैत अछि जे नहि डागडर बाबू सेहो शायद हमरा प्रति आकृष्ट अछि नहि त' ओ हमरा लेल कियैक अतेक चिंतित रहितथि। जखन हमर हाथ कटल छल त' हुनका आँखिमे हम अपना प्रति असीम प्रेमक अनुभव केने रही। ओ अवश्य हमरासँ प्रेम करैत छथि तैं ओ हमरा

अपन अनुरूप बनबै लेल एहि नर्सिंग होममे काज सिखबाक लेल रखौलथि। तुलसीक यैह सोच ओकरा सिखबाक हेतु प्रेरित करैत छल। ओ स्वयंकेँ आदर्शक योग्य बनबै लेल खूब लगनसँ काज सिखैत आ करैत छल। मुदा तुलसीकेँ मनक हिलकोर कखनो ओकरा संसारसँ विरक्त क' शांत क' दैत छल त' कखनो प्रेमक फाँसमे ओझरा जोगिन बनबैत छल। तुलसी आब दू बाटक बीच ठाढ़ छल जे दुनू भागे ओकर डेग घीचि रहल छल। आब तुलसीक मनमे चन्दनक स्थान आदर्श ल' लेने छल एहिसँ कखनो ओकरा स्वयंसँ कतेको सवाल छल।

एम्हर आदर्शक जिनगीक डायरीमे प्रेमक कोनो पन्ने नहि छल वा कहि सकैत छी जे मनक खालीपन ओकरा जीवनमे कहियो प्रेमक चिड़ैकेँ बैस' नहि देलक। आब ओकरा नजरिमे प्रेम छलावा छल जे मनुखकेँ ठगि ओकरा कमजोर आ बेचारा बनबैत अछि। वर्तमानमे आदर्श लेल प्रेम अपन माटि छल आ ओहि माटि पर रहनिहार लोग। एकरा ठोर पर मुस्की देख ओ हँसैत छल ओकर रूदन ओकरा बेचैन करैत छल। हुनकर कहब छल जे एक दिन ई भंगुर देह छोड़ि उड़ि जायब। ई देह एहि ठाम जरि एहि माटि-पानिमे विलीन भ' जाएत त' कियैक नहि अपन माटिक सेवामे समर्पित होय आ अपन माटि आ देशक प्रति सद्भावना रखी। आदर्शक एहन तर्क सदैव काकीकेँ चिंतित करैत छल।

एक बेर आदर्शकेँ मन टटोलति दादी पुछि बैसली—'नुनू आब एहि उमेरमे तुतना लागल अधबोलिया सुनबाक मन होइत अछि, नहि जानी ई सेहेन्ता संगे जाएत कि भगवानक कृपा हमरा घर पर कहिया होइत। कहिया पोतपुतहुक हाथे पानि पीयब।'

काकीक एहि बात पर नुनू झट बाजल—'दादी माँ किछु दिन आर रूकू। एखन बहुत रास काज करबाक अछि।'

—'नुनू एक बात पुछी?'

—'की दादी माँ?'

—'अहाँ किनको पसंद करैत छी की? कहू त' ओकरेसँ बात करब।'

—'नहि-नहि दादी माँ, एहेन कोनो बात नहि अछि। बस एखन आर कोनो जिम्मेवारी लेबाक लेल तैयार नहि छी। हमरा नजरिमे जिम्मेवारीक

बीच सच्चा प्रेम पनपैत अछि, एहिसँ पहिने प्रेम मात्र ठगि अछि।'

—'बाप रे, एतेक गम्भीर बात। नुनू हमरा संदेह अछि जे कहीं अहाँक देहमे अहाँकेँ दादाजी त' नहि सोनिआएल छथि।'

दादी-पोता दुनू एहि बात पर ठहाका मारि हँस' लागल। आदर्श बहुत दिन बाद आइ अपन दादी माँकेँ एतेक खुलिक' हँसैत देखलक।

## 25

—'रे छुटकन, सरकार एहिना नहि बनै छै। सरकार बनबैसँ पहिने ठोरकेँ झूठ बजबाक हिसक लगब' पड़ै छै। आ एगो झूठकेँ समहारैमे कतेक झूठक बान्ह बान्ह' पड़ैत छै से हमरासँ बेसी त' तू जनैत छें। केना झूठक खेती सचक स्वरूपमे बदलि जाइत छै। राजनीतिमे नहि कोय अप्पन नहि आन सभ मुँहलगुआ सहोदर सन। छै कि नहि!'

—'से तँ छैहिए की, मुदा नेताजी एहि बुच्चन आ विदेशियाकेँ भइयारी त' कंठमे लसकल हड्डी सन भ' गेल, नहि घोटल जाइत अछि नहि उगलल।'

—'शांत रह छुटकन। ई त' तेहन मलाइदार छै ने बिल्कुल मक्खन सन। लोहा गरम भ' गेल छै बस हमर आदेशक इंतजार कर, हथौड़ी उठेने रह।'

—'नहि नेताजी राजनीति एतेक रंगदार नहि अछि।'

—'धुर्र इंस्पैक्टर, जँ अहाँ बुझि जइतहुँ जे राजनीतिक कतेक रंगदार अछि तँ पहिनहि एहि कुर्सी पर बैसितहुँ।'

—'मुदा धीरेन्द्र बाबू, बुच्चन आब साधारण नहि रहल। ओकरा संगे दस गामक जनता अछि। जँ ओकरा कोनो नुकसान करबै त' पूरा समाज एक भ' जाएत तखन हमहूँ कानूनक आगाँ मजबूर रहब।'

—'आहिरौ बा, हम कहाँ किछु करबै...हादसा त' केकरो संगे कतहु भ' जाइ छै। की रे छुटकन?'

—'हम अहाँकेँ संकेत क' रहल छी...'

—'की खुलिकेँ कहू इंस्पेक्टर साहेब। कतेक पायमे बिकेलहुँ ओकरा हाथे? ई भाखा अहाँक नहि लागि रहल अछि। अपने मुँहे त' नहि बाजि रहल छी।'

—'नेताजी अहाँक नून खेलहुँ। अहाँ संगे नमक हरामी नहि करब ई विश्वास राखी। हम बुच्चन संगे ठाढ़ जनकेँ देखि अपना जानि एगो सलाह मात्र द' रहल छी। हजारक संख्यामे लोग ओकरा संगे ठाढ़ अछि आ हजारक-हजार संख्यामे लोग ओकरा काजसँ प्रभावित अछि। जनता निर्दलीय उम्मीदवार बना ओकरा एहिबेर चुनाव लड़ेबाक तैयारीमे अछि।'

—'अच्छा-अच्छा ग्राउंड जीरोकेँ रिपोर्ट ई अछि तैं बुच्चन काल्हि हमरासँ अलगे तेवरमे ढिठाइ क' क' गेल। हमहूँ देखै छियै ओकर जनक ताकत। हमरा कहू जे कोन पार्टी बिन पायकेँ टिकट दै छै। बस हमर एतबे बात एहि गँबारकेँ भेजामे नहि अँटलै आ हमरा ऐसी-तैसी कर' लागल। हमर कहब छल जे एक करोड़ हमरा आ एक करोड़ पार्टी क' द' दियौ टिकट अहींकेँ मिलत। हम बड्ड बुरबक अपन पैर छकड़ि एकरा कुर्सी पर बैसबै छी तँ अपन बुढ़ाड़ीकेँ सहारो नहि ली...ई भिखमंगाकेँ कुर्सी चाही राजनीतिकक 'र' अक्षरक ज्ञान नहि आ खैरात मांगए आबि गेल।

जे मुट्ठी भरि लोगक भीड़ देखि बौराएल अछि नहि से कखन घुसकि जेतै पतो नहि चलतै। एक-एक लोककेँ किनबाक क्षमता अछि हमरामे। ई देखियौ चिट्ठी पार्टी जकरा-जकरा टिकट देत ओहिमे हमरो नाम अछि।'

—'वाह नेताजी फेर त' जश्नक तैयारी करू। बुच्चन त' अहाँक दोस्त अछि ने!'

—'पैसाक गर्मी मगज पर चढ़ि गेलैए बुच्चनकेँ। ओकरा धरहा होयसँ पहिने रेबीजक सुइया जरूरी अछि नेताजी बस अहाँ हमरा पर छोड़ि दियौ। कोय नॉमिनेशनो दिन ओकरा संगे ठाढ़ नहि रहत। एलेक्सन त' दूरक बात भेल।'

—'किछु दिन आर एहि ठाम इंस्पैक्टर साहेब संगे ससुरारीक मजा लेब। समय एला पर सभटा काज तोहीं त' करबें। बुच्चन संगे उतीमबा बड़ उधिया रहल अछि। पहिने ओकर खबर लैत छी।'

—'नमस्कार नेता जी नाम लेलहुँ आ गुलाम हाजिर अछि।'

—'कह' की खबर लौलें? बुच्चन साँचे एलेक्सनमे ठाढ़ भ' रहल छौ?'

—'हँ नेताजी छान-छूक त' सैह देखाय छी। अस्पतालक गुमानमे ओ मातल अछि। सभटा भोटकेँ छहोछित क' देत ई बुच्चनमा। एकर फायदा कही दोसर पार्टी नहि उठा लै।'

—'रे उतीम, एगो कहबी छै जे जखन बुरबक लग धन हुअए त' ओकरा एलेक्सन लड़ाउ। राजनीतिक पेंचक हुनर सिखबाकमे जाएब त' देह आ मन दुनू ठण्डा भ' जेतै। आब मारि बंदूक, तलवारसँ नहि दिमागसँ कएल जाइत छै। यौ ओकर हितैषी बनि निर्दलिय प्रत्याशी बना एलेक्सन लड़ा, बादमे हम त' छियैहे।'

दरबजा पर घोर चिंतामे बौक बनल बुच्चन बाबू आगूक योजना पर मंथन क' रहल छला आ सोचि रहल छला जे जकरा हम अपन सहोदरसँ बेसी मानलहुँ ओ एहन केना भ' गेल। धीरेन्द्र हमर जिगरी दोस्त जे बिनु मंगने अपन सभ किछु हमरा दैत छल तकरा राजनीतिक दिम्मक कतेक खोखला बना देलक। ओ राजनीतिक चश्मा पहिर कोना अनदेखा क' देलक हमर यारी।

तखने उतीम लाल भैया-भैया हाक दैत बुच्चन लग ठाढ़ भ' गेल।

—'भैया अन्हार भ' केकरा टकटकी लगा देखि रहल छियै? कथी चिंतामे डूबल छियै? ओ चोरबा नेतबा आ अहाँ कहियो एक नहि भ' सकैत छी भैया। अहाँकेँ सम्मान देवता घरमे अछि आ ओहि नेतबाकेँ सभ गारियेसँ बात करैत छै। अहाँ जे काज अपन गाम, समाज लेल करैत छी आ केलहुँ ओहि आगा ई नेतबा सभ पैरक धूरो नहि अछि। फेर अहाँ कियैक चिंता करैत छी। अहाँ कतबो नहि कहब हम सभ नहि मानब। अहाँकेँ एलेक्सन लड़ैए पड़त। नहि त' हम सभ केकरो भोट नहि देब। अहाँक आवाज हम सभ दिल्लीक संसद भवनमे गुंजैत सुन' चाहैत छी। चीनीए मिल टा नहि बहुतो मिलक खगता छै अपन बिहारकेँ। आब जानकीक भाइ-भतीजा रने-वने नहि बौआएत। राजनीतिक नाम पर खेल-खेलाइत नेता आ अफसरक गाल पर तमेचा लगनाए बहुत जरूरी छै भैया। पूरा समाज तोरा संगे ठाढ़ छह। नॉमिनेशनमे देखा देबै जे जनक ताकत पायक ताकतसँ मजगूत होइत छै।'

—'भाइ उतीम, तोरा सबहक यैह प्रेम तँ हमर ताकत अछि।'

## 26

काकी आइ डेढ़ बरखक बाद विकास आ सिम्मी संगे अपन गाम जा रहल छली। पटनासँ गाम जाइत काल काकी बाट निहारैत सोचि रहल छली जे समय केना पांखि लगा उड़ल जाए छै। कतेक किछु बदलि गेलै। एक पेरिया सभ रस्ता सड़क बनि गेल आ सड़क हाइवे। सच परिवर्तन आ विकासक सही रूपक थाह एहिसँ लगा सकए छी। सच कही त' सुच्चा सेवा यैह थिक जे एहि क्षेत्रक ग्रामीणक ठोर पर मुस्की आ आँखिमे चमक आनि दैत अछि।

काकी एहि सभ बातकेँ अपना मनमे विचारैत गुनैत जेना-जेना अपन गामक सिमान लांघि रहल छली हुनकर आँखि डबडबा रहल छलनि। हुनकर अखन धरिक जीवनमे ई पहिल बेर छल जखन बीचमे काकी आ पजरा सटल हुनकर दुनू संतान, सिम्मी आ विकास हुनकर हाथ पकड़ने बैसल छल। डबडबाएल आँखिसँ काकी एक बेर सिम्मी आ विकासकेँ निहारैत छली त' एक बेर बाटकेँ। कियैक त' विकास आ परिवर्तन दुनू जगह छल संगहि दुनू गतिशील छल।

सिम्मी साड़ी पहिरि कुमकुमक ठोप लगा आरतीक थार हाथमे ल' अस्पतालक मोख पर ठाढ़ साक्षात लक्ष्मीस्वरूपा लागि रहल छली। संगे नारायण रूपमे विकास एहि मनमोहक दृश्यकेँ प्रतिष्ठित करैत छली। सम्पूर्ण ग्रामीण एहि क्षणक गवाह बनि ठाढ़ एना लागि रहल छल जेना सभटा स्वर्गक आनंद एहि ठाम आबि ठमकि गेल होय। काकीक आँखि आइ नहि रूकत ई दुखक नहि खुशीक हिलकोर छल जे बेर-बेर उछलि पलक भिजा रहल छल। काकी मात्र सोचने छली जे एगो अस्पतालक खगता अछि, मुदा हुनकर आँखि सपना नहि देखैत रहै कियैक त' आँखिकेँ सोच आ सपनामे फाँट बूझल छल। काकीक एहि सोचकेँ हुनकर बेटा-पुतहु साकार करत कहाँ ओ सोचने छली। आदर्श अपन डागडरक टीम संगे ठाढ़ मुस्किआ रहल छल। काकी एक बेर अस्पतालक उँचाइ निहारैत, एक बेर बेटा-पुतहु पोताकेँ देखैत, एक बेर सम्पूर्ण ग्रामीणक जय-जयकारक नारा

लगबैत देखि भाव विभोर भ' रहल छली। काकी मेघ दिस ताकि मने-मन कह' लगली, देखियौ आइ अहाँ नामे अस्पताल खोलि बउआ फेरोसँ अहाँकेँ जीवित क' देलक संगे कतेको असहायकेँ नवजीवन देलक। अपन माटि लेल अपन बेटा आइ जे काज केलक ओकर सुवास अहाँक नाम संगे पसरैत रहत। आइ हमरा लग अपन परिवारक ताकत अछि, अपना समाजक देल सम्मान अछि। फेर हमरासँ भागवंत के होयत!

बुच्चन बाबू सेहो एहि जन सैलाबकेँ देखि सोचि रहल छला जे एतेक मान आ प्रेम कहाँ कोनो नेताकेँ भेटैत अछि। मरला बादो जखन निचाँ ताकब त' कतेको आँखिमे हम अपना लेल नोर देखब एहिसँ बेसी आर की चाही! उपरसँ कक्का देखि कतेक खुश होयत हेता, अपन कुलदीपकक एहि माटिक प्रेमसँ। एहि अस्पताल आ चीनी मिलसँ कतेको बूढ़ माय-बाबूक सहारा ओकर पूत हुनका छोड़ि पलायन नहि करत। एहि बातक खुशी सभसँ बेसी अछि।

## 27

अस्पतालक प्रांगनमे अफरा तफरी मचि गेल। टूटल चप्पल खूजल जूता छिड़आएल संगहि ओंघराएल सगरो कुर्सी चिकरि-चिकरि एहि बातक गवाही दैत छल जे एखन कोनो काल एतए नाचिक' गेल। बपरिहैर काटैत लोगक रुदन कलेजा फाड़ि रहल छल। ककरा बुझल छल जे किछ काल पहिने जहि ठोर पर जयकाराक नारा संगे प्रसन्नताक लाली छिटकि रहल छल वैह ठोर दोसरे पहर आँखिक नुनछराइन नोरसँ मलीन कारी भ' जाएत। जाहि ठाम अखन जनसैलाबसँ पूरा प्रांगन शोभायमान छल ओतय सगरे लागल खूनक टघार मनुष्ये टा नहि चिड़ै-चुनमुनीकेँ सेहो विचलित क' देत। एगो बेकाबू सरियासँ भरल ट्रक अस्पतालक छहरदेवाल ढाहैत एगारह गोटेकेँ ठोकैत-ठाकैत नौ गोटेकेँ अपन नमहर-नमहर दस पहिया तर पिचारैत अस्पतालक देबालसँ टकरा बेदम भेल। नशामे धुत्त बिन लिवरक ओहि ड्राइवरकेँ ने अपन होश छल ने गाड़ीक आ ने ओहिठाम घटित घटनाक। ओ अपन माथसँ खूनक टघार पोछैत अकचकाइत लटपटाइट गाड़ीसँ जखने बहरेबाक कोशिश केलक कि ओहि ठाम बेहोश भ' क' खसि पड़ल।

के जनैत छल जे समय एहन घूरत! अस्पतालक पहिल दिन ओकरा ठार केनिहारक खूनसँ एकर प्राँगण सींचल जाएत। एहि बेडक पहिल मरीज ओकरे श्रमिक बनत जे अपना लेल जिनगीक गुहारि लगाओत। मुदा सच यैह छल। मानव निर्मित बज्रडांग छल जाहि तर असहाय कुहरि रहल छल। मजबूरकेँ भगवानो नजरि बचा तकैत छथि। कुहरैत पुकार हुनका कान तक शायद पहुँचबे नहि करैत अछि। कर्मक भोग कहि दुनिया ओकरा भोगै लेल छोड़ि दैत अछि। इहो सब आब आजीवन ई भोग भोगैत रहत।

भीड़क मर्दनसँ टघरल खून थाल बनि पूरा अस्पतालमे पटि गेल। भरि गामक लोकक नोर ओहि टघारकेँ धोएमे असमर्थ छल कि तखने चारू दिस करिया मेघ लटकि भाड़ी गर्जना कर' लागल। एना लगल जेना ई नरसंहार देवतोकेँ छाती फाड़ि देलक। ओ कानि-कानि चित्कार कर' लागल। मेघ गरजति मुसलाधारक बौछार संगे लाल रंगक धार बह' लागल। मेघ अपन प्रयाससँ अस्पतालक कोन-कोनसँ ओहि शोणितक धारकेँ अपना संगे बहा सब दुःख धोअ' चाहैत छल मुदा जे ओहि दुखित परिवारक जीवनमे जे टघार आब बहि रहल छल से आब कोनो मुसलाधारक बौछार नहि बहा सकैत छल।

जखन ओहि बिनु मासुक हाड़ मानुससँ पुलिस ओकर नाम-गाम पुछलक त' ओ नशेरी अपन माथ पकरि मूड़ी देबाल आ जमीन पर पटक' लगैत छल। घंटो एकर ई ड्रामा चलैत रहल। ओकरा एहि घटनाक कोनो जानकारी नहि छल। बात त' यैह भेल जे बलि देनिहार अपन मति-गति दुनू भगवाने पर सौंपि देलक। पुलिसक माथा तखन चकराएल जखन ओकरा ई पता चलल जे ओहि अपराधीक भाषा तमिल अछि। ओ जे बाजैए से कोय नहि बुझैत छल आ ने ओ केकरो भाषा, तैं अपन कपार पिटैत छल। आब एगो बात स्पष्ट भ' गेल छल जे ई घटना भेल नहि छल बल्कि कराओल गेल छल। जाँचमे पता चलल जे ड्राइवर छल से कहियो अपना जीवनमे साइकिलो नहि चलेने छल। ओ सड़क पर ओंघराएल कोनो मतिछिन्नू छल। जकरा अफीम खुआ मतौने ड्राइवरक स्टेरिंग पकड़ा देल गेल छल। एतेक बड़का साजिश कोनो साधारण चोर-उचक्काक नहि छल आ ने ई दुश्मनी ओहि निर्बल असहाय मजदूरक संग छल। प्रायः देखल गेल अछि जखन लड़ाई दू सोचक बीच होएत अछि त' एहि विवादमे बलिक बकड़ा

कोनो असहाइये बनैत अछि।

## 28

—'डॉक्टर आदर्श अपने जीवन में मैंने ऐसी घटना पहली बार देखा है। पैंतालीस साल से हूं मैं इस लाइन में पर ऐसा कभी नहीं देखा। मेरे आंखों के सामने एक के बाद एक दम तोड़ रहे थे और मैं कुछ भी नहीं कर पाया। मुझे धिक्कार है खुद पर। लोग मुझे भगवान का दूसरा रूप कहते हैं पर क्या फायदा इस नाम का। हम देखते रह गए और नौ लाशें हमारे आगे बिछ गईं। इन लोगों के आंसू मुझे झकझोर रहे हैं डॉक्टर। अस्पताल में रहकर भी कुछ नहीं कर पाया। हमारे पास सभी साधन थे फिर भी हम किसी की जान नहीं बचा पाए। लोगों को डॉक्टर पर से और विश्वास हट जाएगा। इसका जो भी जिम्मेदार है उसे भगवान भी माफ नहीं करेंगे। ये निर्दोषों की हत्या है। ये किसी नरसंहार से कम नहीं।'

—'डॉ. सुनील आप हम सब में वरिष्ठ हैं और एक सफल सर्जन भी। प्लीज आप ऐसे मत टूटिए, फिर हमें कौन संभालेगा! भले ही हम नौ लोगों को नहीं बचा पाए लेकिन अभी भी एक्कीस है जिसे आपकी जरूरत है। ये कोई दुर्घटना नहीं है डॉक्टर कोई बड़ी साजिश है जो हमारे परिवार के साथ किसी ने किया है। आप विश्वास रखिए जो भी इसका जिम्मेदार है वह स्वतंत्र नहीं रह पाएगा। इस केस की जांच मैं सीबीआई से करवाने की मांग करूंगा।'

—'हम सब आपके साथ हैं डॉक्टर आदर्श।'

—'किस अखबार से हो आप? क्या आपको दिख नहीं रहा कि यहां क्या हुआ और लोगों की हालत क्या है? बंद करो ये अनर्गल सवाल जिससे किसी को और तकलीफ हो। यह अस्पताल हमारा सपना है, हमारी जरूरत हमारा अभिमान है, हमारी संतान जैसा। इसे अपशगुन कहकर संबोधित न करो। इस अस्पताल में अब तक जो भी घटना घटी है वह स्वयं नहीं घटी, घटायी गयी है। आज सुन लें वे लोग जो हमें बार-बार तोड़ना चाहते हैं, रोकना चाहते हैं पर हम नहीं रुकेंगे, हम नहीं टूटेंगे। ऐसे दस अस्पताल खोलने की ताकत रखते हैं हम। इन निर्दोषों के हत्यारे को नहीं

छोड़ेंगे चाहे वे कहीं भी क्यों न हों। मेरा वादा है उसे भी ऐसी ही मौत मिलेगी।'

—'मिस्टर विकास, आपको किसी पर शक है? कौन आपके खिलाफ साजिश रच रहा है? क्या वह आपका अपना कोई है या और?'

—'अपने कभी ऐसा नहीं करते अगर करते हैं तो फिर वह अपने नहीं होते। यह जांच का विषय है और इसकी जांच पुलिस कर रही है। जब जो रिपोर्ट आएगा आप लोगों को बता दिया जाएगा। प्लीज अपने बेतुके सवालों से इन मासूमों को परेशान मत कीजिए ये ऐसे ही बहुत परेशान है।'

—'सर, जो भी लोग अब इस दुनिया में नहीं है वे सभी इसी अस्पताल में मजदूरी किए थे? क्या आप अपने तरफ से उन्हें कुछ मुआवजा प्रदान करेंगे?'

—'मैं उन परिवारों के साथ हूं और आजीवन उनकी आर्थिक सहायता करूंगा। ये भूमि जहां आप खड़े हो हमारी जन्मभूमि है और यहां पर रह रहे सभी लोग हमारे परिवार है। मैं अपने परिवार को कभी भी नहीं असहाय छोडूंगा।'

—'नमस्कार विकास बाबू।'

—'नमस्कार नेता जी।'

—'बहुत आहत भेलहुँ एहि दारुण घटनासँ। हम कोनो जरूरी काजसँ देशसँ बाहर रही। जखन खबरि सुनलहुँ त' नहि रहल गेल। अहाँ चिंता नहि करू, हम केकरो चैनसँ सूत' नहि देबै। चाहे ओ देशमे होय वा विदेशमे, ओकरा सोझाँ ठाढ़क' एहि पीड़ित परिवारक हाथे खून बोकरेबै। अहाँकेँ केकरो पर शक अछि त' कहू।'

—'की कही नेताजी जिनगीमे कहियो दुश्मनी लेल समैए नहि भेटल। काजक दरमियान कतेकोसँ अनबन भेल मुदा केकरोसँ एहन नहि जे बात जान पर आबै।'

—'अच्छा छोडू हम मुआबजा लेल बात केलहुँ। सब मृतक परिवारकेँ दू-दू लाख आ घाहिलकेँ पचास-पचास हजार टाका देबाक बात सरकार कहलक अछि। हमरा आ हमर पार्टीसँ ओहि परिवारक सदस्य सभ लेल जे मदति भ' सकत, करब। अहाँ एकर चिंता नहि करू। सीबीआई

जाँचोक आदेश भ' चुकल अछि।'

—'धन्यवाद नेता जी। अहाँक अएलासँ आब सब काज सही ढंगसँ जल्दी शुरू होयत तकर विश्वास अछि हमरा। अहाँकेँ सोझाँ देखि लगैत अछि जे अपन सोहोदर संगे ठाड़ अछि।'

—'जे दर्द एखन अहाँकेँ भ' रहल अछि वैह टीस हमहूँ महसूस क' रहल छी।'

—'मुदा एहि तरहक काजसँ ककरा लाभ भ' सकैत अछि?'

—'ओकरा जे अहाँक जानक दुश्मन होय। अहाँक काजक दुश्मन होय। अहाँक प्रगति देखि ईष्या केनिहार कम नहि अछि। इहो एगो बड़का कारण भ' सकैत अछि।'

—'एहि काजसँ त' कतेकोक भला होएत। ओह की कहियै।'

—'चलू, अस्पतालमे सबसँ भेंट क' अबैत छी।'

—'हँ, हँ चलू।'

## 29

—'क्या नाम है आपका? कहां रहते हो? कहां से आए हो? अपना नाम बताओ? कल क्या हुआ था आपके साथ? आपको कुछ याद है? क्या आप मुझे सुन पा रहे हो?'

—'ओह हमर माथ, हमर माथ फाटल जा रहल अछि। डॉक्टर, डॉक्टर...।' तुलसी अपन आँखि खोलैत लेडिज पुलिस इंस्पेक्टर दिस तकैत अपन धधकैत माथ पकड़ने बाजल।

—'इंस्पेक्टर प्लीज अभी पेशेण्ट की हालत सही नहीं है। कुछ समय और दीजिए इसे। ये अभी पूरे होश में भी नहीं है। प्लीज बाहर जाएं आप, इन्हें आराम की जरूरत है।'

तुलसी तीन पहले पुलिसकेँ पटनाक सड़क पर बेहोश भेटल छल। ओ एगो रोड एक्सिडेंटक शिकार भेल छल जाहिमे ओकर एगो पैरक हड्डी टुटी गेल छल। ओ एखन पटनाक एगो सरकारी अस्पतालमे पुलिसक देख-रेखमे छल।

—'आब अहाँक तबियत केहन अछि बउआ?' एगो बुजुर्ग महिलाक एहि बातसँ तुलसी अपन आँखि खोली हुनका दिस तकलक। 'अहाँक नाम

की भेल?' फेर एहि सवाल पर तुलसी ओहि महिलाकेँ निहारैत बाजल— 'राधा, (हँ, आब यैह नाम अछि हमर।) हँ, राधा हमर नाम अछि।' बजैत तुलसीक आँखिमे गंगा-यमुना उतरि गेल आ सोचए लागल काकीक बारेमे। काकीयो एक बेर एहिना ओकर नाम-गाम पुछने छली। ओहि बुजुर्ग महिलाकेँ देखि ओकरा भेलै जे काकी माँ ओकरा सोझाँ ठाढ़ छथि। ओ अपन काकी माँक पँजरा सटि भरि मन कानए चाहैत छल। कह' चाहैत छल ओ सब बात जे ओकरा संगे घटित भेल। ओकर नोरसँ बेडक सिरहौना भीजि गेल छल।

—'बेटी राधा अहाँक घर कत' भेल? अहाँक बाबूक नंबर अछि, वा कोनो रिश्तेदारक नंबर जकरा फोन कयल जाए?' फेर एहि बातसँ तुलसी चेतैत बाजल—'नहि, हम एहिठाम अपन माय-बाबूसँ अलग रहि रहल छी।'

—'अहाँ संगे ई घटना केना भेल? की संगे जबरदस्ती कएल गेल। अहाँक पैर टूटल अछि आ देह पर कतेको चोटक निसान अछि। कहू अहाँक एहि हालतक जिम्मेदार के अछि?'

—'नहि-नहि, हम जल्दबाजीमे रही आ सड़क पर दौड़ गेलहुँ। लग अबैत बसकेँ नहि देखलहुँ। एहिमे केकरो कोनो गलती नहि अछि। एकर जिम्मेदार हमहीं छी। हमरा केकरोसँ कोनो शिकायत नहि अछि।'

—'बउआ, अहाँ हमरा अपन बड़ बहिन बूझि सब बात सच-सच बताउ। भरोस राखू। अहाँक बात हमरे-अहींक बीचमे रहत। अहाँ ककरा डरे झूठ बाजि रहल छी। अहाँक रिपोर्ट बहुत किछ कहि रहल अछि। हम राष्ट्रिय महिला आयोगक अधिकारी छी। हमर पूरा टीम अहाँ संगे अछि। अहाँक सुरक्षाक पूर्ण जिम्मेवारी हमर अछि। अहाँ बिना कोनो भयकेँ अपन बात कहि सकैत छी। हम अहाँक पूर्ण सहयोग आ मदद करब।'

—'नहि दीदी, हम केकरो दबावमे नहि छी। हम अपना मंगेतर संगे रही आ ओकरे संगे आपसी सहमतीसँ सम्बन्ध बनेने रही। एहि दरमियान कोनो बात पर हमरा सबहक अनबन भ' गेल आ हम तमसाक' ओतयसँ जल्दबाजीमे घर आब' लगलहुँ त' रस्तामे ई एक्सिडेंट भ' गेल।'

—'अपन मंगेतरक नाम आ नंबर बताउ।'

—'नहि, आब हमर ओकरा संगे कोनो सम्बन्ध नहि अछि। आब एहि हालतमे हम केकरो नहि बजाएब। केकरो लेल हम बोझ नहि बन' चाहैत छी। जँ अहाँ सब हमरा परेशान करब त' हम आत्महत्या क' लेब, तखन हमर

हत्याक दोषी अहाँ सभ होयब। हम हाथ जोड़ि निहोरा करैत छी हमरा हमर हाल पर छोड़ि दिअ।'

तुलसीक ई बात सुनि ओ महिला अधिकारी ओतयसँ चलि गेल आ तुलसी अपन टूटल पैर दिस निहारैत सोचि रहल छल जे नीक भेल जे एहि चंचल पैरकेँ सजा भेटल। मर्यादा जे लंघने छल। फेर फफकि-फफकि ओहि अस्पतालक बेडकेँ कानि-कानि भिजबैत रहत। ओ कोसैत रहल ओहि दिनकेँ जखन पहिल बेर चन्दनसँ फोन पर परिचय भेल छल। जखन ओ चन्दनसँ दुनियाँमे सबसँ बेसी प्रेम केने छल आ ओहि प्रेमक भरोसे सब किछु छोड़ि ओकरा लेल आएल छल। तखन चन्दन ने ओकरा समझलक आ ने ओकर प्रेमकेँ। सब दिन लेल मुँह मोड़ि छोड़ि गेल। आइ जखन ओ अपन पैर पर ठाढ़ भ' फेर अपन बज्र हियामे केकरो बसाबए लागल त' चन्दन घुरि आएल आ ओकरा पर अपन हक जतब' लागल। कोन हकसँ ओ ओकर देहकेँ छूलक। एहि सब सवाल-जबाबमे तुलसीक मनक आगि धधकि रहल छल पर एहि आगिमे मजबूरीक धुआँ भरल छल जे तुलसीक मनक आगिकेँ तर क' रहल छल। ओकरा आँखिमे उपकारक पानि छल जकरा ओ सहेजने छल। आ अपना जिबैत एहि पानिकेँ सुखाए नहि देबाक प्रण केने छल। अपना कारण ओ काकी आ ओहि परिवारक केकरो हानि नहि पहुँचा सकैत छल। आब तुलसी मरि चुकल छल ओकरा जगह पर राधा आबि गेल छल। जे दुनियाँक एहि भीड़मे एसगर छल।

## 30

—'नमस्कार धीरेन्द्र बाबू।'

—'कहू बुच्चन बाबू, आइ कोना अपन लंगोटियाँकेँ याद केलहुँ! कुशल छी ने?'

—'हँ, कुशल छी। पचीस दिन घीचि लेलिए अहाँ एहि केसकेँ, आर कतेक पाय बहेबै।'

—'अहाँ की कह' चाहैत छी, साफ-साफ बताउ।'

—'साफ कही त' ई जे दुनियाँ हमर दुश्मनक खोजि रहल अछि। सीबीआई पचीस दिनसँ देश-विदेश हमर आ भाइजीकेँ दुश्मनकेँ

ताकि रहल अछि। भाइजीकेँ शायद कोय दुश्मन होय मुदा हमरा त' केकरोसँ दुश्मनी नहि अछि। से मुदा जँ दोस्त छूरा पीठमे घोंपै त' दोसर बात।'

—'बुच्चन बाबू, हमरा खिलाफ कोनो सबूत हाथ लागल की?'

—'ओ केना भेटत! अहींक कुत्ता अहाँ सोझाँ भुकबाक हिम्मत करत की?'

—'एगो दुर्घटनाक साजिशक नाम द' सीबीआई टीम बैसेलहुँ, कहू एखन तक कतेक की हासिल भेल!'

—'शायद किछु हासिलो नहि होएत। जखन सैंइयाँ मोर कोतवाल त' भय ककर! पचीस दिनसँ खाली पूछा-पूछी चलि रहल अछि, आर किछु दिन चलत फेर फाइल बंद भ' जाएत। मुदा याद राखब, मनक टीस फाइल बंद भेला पर नहि मेटैत अछि। बढ़ैत समयक संग ओ बेसी टहकैत अछि।'

पुलिसक गाड़ी बुच्चन बाबूक द्वार पर लागल आ सीबीआईकेँ टीम हुनका गिरफ्तार क' क' ल' गेल। बुच्चन बाबूक गिरफ्तारीक संगे पूरा गाम एकही सुरमे गनगना उठल— 'जखन बुच्चन बाबू अपन राम सनक भाइकेँ नहि भेल त' हमरा सबकेँ होएत! हम सब एकर बातक फाँसमे फँसि गेलहुँ आ नेताजीक खिलाफ रहलहुँ। हमरा सबहक बीच एहेन बइमान रहि रहल छल जकरा हम अपन हितैषी बुझैत रही। आब जिनगी भरि पिसैत रहए चक्की जेलक।'

—'नहि-नहि हमर बुच्चन बाबू एहन नहि अछि। ओकरा त' हम सब किछु देने छी फेर ओ एना नहि क' सकैत अछि। कहैत काकी एहन बजनिहारकेँ चुप करबए लागल। तखने एगो चौकीदार काकीक सोझाँ ठाढ़ भ' बाजल— काकी सबूत त' यैह कहैत अछि जे बुच्चन भइया अहाँक सबटा जमीन हथियाबै लेल आ अहाँक बंशक अंत कर' लेल ई सब साजिश केलक। अहाँक आधासँ बेसी जमीन ओ अपन नाम क' लेलथि। सीबीआई लग सब सबूत अछि।'

—'नहि-नहि बुच्चन हमर बेटासँ बढ़िक' अछि। ओकरा खिलाफ ई साजिश अछि।'

—'पर माँ आप भावना की गिरफ्त में हैं। सारे सबूत बुच्चन के

खिलाफ चीख-चीख कर गवाही दे रहे हैं। क्या आपने कभी सारा जमीन उसके नाम किया था? नहीं न, फिर ये कैसे हुआ? हमारी लगभग सारी जमीन अब उसकी है। सब कुछ तो दिया था उसे फिर भी एक बार कहता मैं यह अस्पताल और मिल भी उसके नाम कर देता।'

—'नहीं, कुछ भी कह लो विकास, मैं कभी नहीं मान सकती कि बुच्चन गुनहगार है। ये गलतफहमी हुई है सीबीआई वालों से।

जेलक दिवालकेँ एकटक निहारैत बुच्चन सोचि रहल छल जे राजनीति इंसानकेँ कतेक हद तक बदलि दैत अछि। आ राजनीतक शक्तिसँ इंसान डोरीकेँ साँप बना डसाइयो दैत अछि।

—'नमस्कार बुच्चन बाबू, ई खाउ लड्डू। अस्पताल आ मिल दुनू बिहारक पैघ अस्पताल आ मिल अछि। एकर सुवास आब देशसँ विदेश धरि पसरि रहल अछि। हमरा भारी मतसँ विजय हासिल भेल आ एहिबेरक कानून मंत्री हमरे बनाओल गेल अछि। बहुत कष्ट भोगलाहुँ अहाँ जेलमे। जल्दिए अहाँक रिहाइक प्रबन्ध करबाबै छी।'

नेताजीक एहि बात पर बुच्चन ठहाका मारि हँसय लागल।

●●●